बोल्शेविक क्रान्तिका सचित्र इतिहास ।

लेखक

पण्डित रमाशंकर अवस्थी,

'वर्त्तमान'-सम्पादक ।
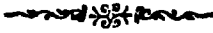
प्रकाशक

मुकुन्दलाल वर्म्मा, प्रोप्राइटर—

"बर्मन प्रेस" और "आर० एल० बर्मन एण्ड को०"

३६७, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता ।

दिसम्बर, १९२८ ई०

प्रथम संस्करण—१०००] ❀ [मूल्य—२॥) रुपया ।
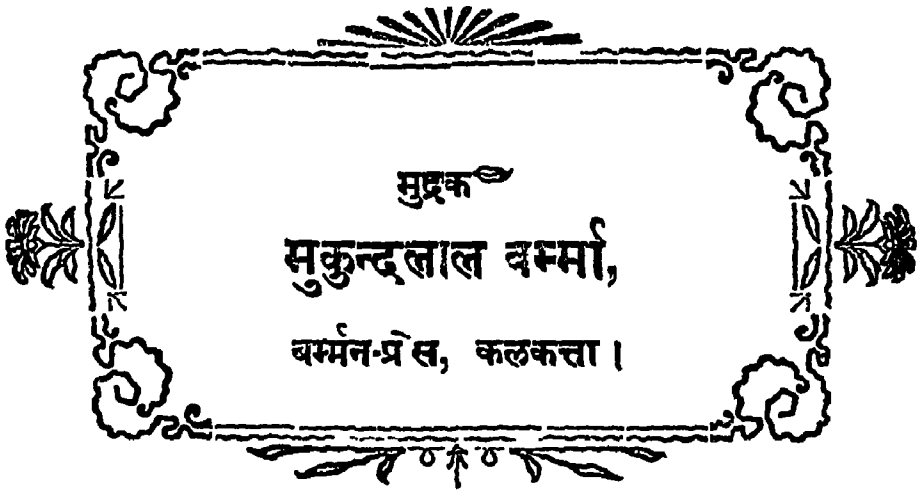
उपहार

समर्पण

सेवामें—

श्री० पं० लक्ष्मणनारायणजी गर्दे

'कृष्ण-सन्देश'-सम्पादक।

प्रियवर,

बहुत ढूँढ़नेपर केवल आपही देख पड़े, जिनका सर्वोच्च धर्म, समता, सम-व्यवहार, सम्मिलन और साम्यवादके समस्तूपोंपर संस्थापित है, इसलिये यह पुस्तक आपको ही सादर समर्पित करता हूँ। यह स्नेह-भेंट स्वीकार कीजिये।

—लेखक

प्रस्तावना

मैंने अपनी "रूसकी राज्यक्रान्ति"के अन्तिम अध्यायमें हिन्दी-पाठकोंको वचन दिया था, कि आगे चलकर मैं बोल्शेविकोंकी "लाल-क्रान्ति" का पूरा विवरण लिख सकूँगा। उस समय १९१८ में ब्रिटिश-सरकारकी कृपासे भारतवर्षमें एक भी ऐसी पुस्तक नहीं आने पायी थी, कि जिसके आधारपर कोई लेखक लाल-क्रान्तिका सच्चा वर्णन लिख सकता। १९२० से कुछ बोल्शेविक साहित्य आने लगा। अमेरिकासे हमारे पूज्य मित्र पं० कृष्णकान्त मालवीयके पास प्रथम पुस्तक "Ten days that shook the worl.." आयी। पंडितजीने पढ़ चुकनेके बाद उक्त पुस्तक मुझे दे दी। तत्पश्चात् रूसके प्रधान मंत्री मोशिये अलेकज़ेंडर करेन्स्कीकी लिखी हुई "Prelude to Bolshevism" और भूतपूर्व परराष्ट्र-मंत्री पी० मिल्यूकाफ़ एल० एल० डी० की लिखी हुई पुस्तक "Bolshevism: An International danger" भी आयी। इसके बाद मेरी इच्छा हुई, कि मैं अपना वादा पूरा करूँ। धीरे-धीरे अन्यान्य पुस्तकें भी आयीं। मैं बराबर संग्रह करता गया। इसी बीचमें मैंने इस विषयपर दो छोटी-छोटी पुस्तकें "बोल्शेविक रूस" तथा "बोल्शेविक जादूगर" भी लिखीं, लेकिन इनमें लालक्रान्तिका कुछ भी वर्णन न कर सका। मराठीके प्रसिद्ध

लेखक श्रीविनायक सीताराम सर्वटेने "बोल्शेविज्म" तथा मेरे मित्र पं० विश्वम्भरनाथ जिज्जाने "रूसमें युगान्तर" नामक पुस्तक लिखकर हिन्दी पाठकोंकी सराहनीय सेवा की। लेकिन इन सज्जनों-ने भी लाल-क्रान्तिका पूरा हाल नहीं दिया। असुविधा वही थी, जो कि मेरे सामने उपस्थित थी। उक्त सज्जनोंको भी समय पर सामग्री प्राप्त न हो सकी। १९२१ में एकाएक बोल्शेविज्मपर कई अच्छी-अच्छी पुस्तकें आ गयीं। मेरा संग्रह मेरे लिये भार-स्वरूप हो चला!

यद्यपि यूरोपके अच्छे-अच्छे लेखकोंने अपनी-अपनी पुस्तकोंमें बोल्शेविज्मका घोर विरोध किया है, तथापि रूसके भूतपूर्व प्रधान मंत्री अलेक्ज़ेण्डर करेन्स्कीने (जोकि,बोल्शेविकोंके अधिकारके बाद, भागकर इङ्गलड चले गये और अब वहीं हैं, तथा वहीं बैठे-बैठे उन्होंने यह पुस्तक लिखी है) अपनी पुस्तकमें, लेनिनके सम्बन्धमें एक स्थानपर लिखा है:—

"For now when the enemies of Russia and of the freedom of all peoples, have attained their shameful aims, when our Motherland lies prostrate in the mud dishonoured and lacerated, when utter despair has seized those who have any honour & conscience left—Now those who have attained their aims must not be allowed to justify their Judas-like crime."

इसी प्रकार पाल मिल्यूकाफने अपनी पुस्तकमें एक विषमय कटाक्ष करते हुए लिखा है, कि:—

"The Russian practice of Bolshevism, did not enrich the European theory with any value positive Data. Mr. Lenin's renowned "Decrees" as applied to Russian reality, were nothing but "Scrap of paper" and the purely political triumph of Bolshevism in Russia is no proof that its social teachings can be applied at all."

लेकिन, इतने उच्च पदाधिकारियों और सम्मानित पुरुषोंकी ये बातें पक्षपात और घृणाकी स्पष्ट द्योतक हैं। मोशिये लेनिनने भलेही क्रान्तिके ओजस्वी अवसरोंपर सिद्धान्तोंका अतिक्रमण कुछ अधिक उत्तेजना-पूर्वक किया हो, लेकिन उनके सिद्धान्त कल्पना-मात्र या " Utopian theories" नहीं कहे जा सकते। यद्यपि १९१७ के बाद, शासन-भार हाथमें लेनेके बाद लेनिनने रूसकी अशिक्षित अवस्थाको देखते हुए अपने "श्रमजीवी-समाज-संगठन"के सिद्धान्तोंमें कुछ थोड़ासा परिवर्तन कर दिया है, लेकिन तब भी मेरे विचारसे उनका वह सिद्धान्त, जिसके द्वारा प्रत्येक देशमें केवल श्रमजीवी नागरिकोंकी रचना होती है, और जिसके द्वारा पूँजीवाद तथा साम्राज्यवादकी जड़ कटती है, संसारका सर्वोच्च साम्यवाद है और सच्ची शान्तिका आवाहक है। यह दूसरी बात है, कि संसारकी जनतापर पूँजीवादकी व्यावहारिक अवस्थाने ऐसा प्रभाव डाल रखा हो, कि इस अवस्थामें लेनिनके सिद्धान्त सभ्यता या नागरिकताके लिये नाशकारी कहलायें।

लेकिन इन सब प्रतिवादोंके पश्चात् लेनिनकी "निरंकुश श्रमजीवी सत्ता" एक शान्ति देने वाली स्थिति है, और अभी तक जितने प्रकारकी शासन-पद्धतियाँ देखनेमें आयी हैं, यह मानते हुए, कि "शासन-संगठन" स्वयं पक्षपातका एक व्यावहारिक रूप है, उन सबमें लेनिनकी "श्रमजीवी-सरकार" अधिक साम्यवादी और शान्ति-युक्त है ; लेकिन युरोपके ही लिये ।

क्योंकि लेनिनके सिद्धान्तोंका प्रचार और प्रयोग समस्त देशोंमे एकही ढंगपर होना चाहिये, यह असुविधा-जनक है ; स्वयं लेनिनने भी, हंगरीके बोल्शेविक नेता बेलाकूनको, अपने तारमें सूचित किया था, कि:—

"It is quite certain that owing to peculiar circumstances it would be a mistake for the Hungarian revolution to mistake our Russian tactics in its detail"

यदि समय मिला, तो मेरी स्वयं यह इच्छा है, कि "श्रमजीवी विश्व-क्रान्ति" के नामसे इसी विषयपर एक बड़ी पुस्तक लिखकर साम्यवादके इस उच्चतम तथा व्यावहारिक अङ्गपर अपने विचार हिन्दीके पाठकोंकी सेवामें उपस्थित करूँ, अर्थात् मैं बाल्शेविक सिद्धान्त-सम्बन्धी एक नयी पुस्तक लिखनेका वचन देता हुआ इस पुस्तकको पाठकोंकी सेवामें अर्पित करता हूँ ।

—रमाशंकर अवस्थी ।

Bibliography.

———:o:———

1. Three Aspects of the Russian Revolution:—
By Emile Vandervelde.
2. The Russian Revolution:—
By L. Trotsky.
3. The Main Springs of Russia:—
By Hon. Maurice Baring.
4. The Rebirth of Russia:—
By Isaace Marcosson.
5. Russia of To-day:—
By John Foster Fraser
6. Red Russia:—
By John Foster Fraser.
7. Bolshevism:—
By Keelings.
8. Pioneers of the Russian Revolution:—
By Dr. Angelo S. Rappaport.
9. Under Cossack and Bolshevik:—
By Rhodha Power.
10. The Self Discovery of Russia:—
By J. Y. Simpson.
11. The Prelude to Bolshevism:—
By A. F. Kerensky.

12. Bolshevism:—
By Paul Milinkov.
13. Bolshevist Russia:—
By Etienne Antonelli.
14 Through Bolshevik Russia:—
By Mrs. Philip Snowden.
15. Through Starving Russia:—
By C. E. Bechhofer.
16. Conquest of Bread:—
By P. Kropotkin.
17. Russia in the Shadows:—
By H. G. Wells.
18. What I saw in Russia:—
By George Lansbury.
19. The State & Revolution:—
By N. Lenin.
20 Bolshevism:—
By C. Sheriden Jonse.
21. Bolshevism at Work:—
By W. T. Goode.
22. The Russian Republic:—
By Colonel Malone M. P.
23. Six Weeks in Russia (1919):—
By Arthur Ransome.
24. Soviets at Work:—
By N. Lenin.

25. Practice & Theory of Bolshevism:—
By Bertrand Russell.
26. Who's Who in Russia:—
By Zinovy N. Preev.
27. Russian Workers Repubiic:—
By H. N. Brailsford
28. Lenin:—
By A. R. Williams.
29. Nicolai Lenin:—
By G. V. Krishna Rao.
30. Road to Freedom:—
By Bertland Russell.
31. The Two Internationals:—
By R. Palme Dutt.
32. Case for Nationalization:—
By A. Emil Davies.
33. In the Fourth Year:—
By H. G. Wells.
34. Karl Marx:—
By Achille Laria.
35. Armenian Atrocities:—
By Arnold J. Toynbee.
36. When Labour Rules:—
By J. H. Thomas.
37. Germany of To-day:—
By Charles Tower

38 Ten Days that shook the world:—
By John Reed.

39. Russia's Message:—
By William English Walling.

40. Birth of Russian Democracy:—
By A. J. Sack.

41. The Fourth Communist International Congress 1922.

हिन्दीकी सहायक पुस्तकें।

—०—

(१) साम्यवाद— लेखक [श्रीयुक्त रामचन्द्र वर्मा।
(२) बोल्शेविज़्म— " [श्रीयुक्त विनायक सीताराम सर्वटे
(३) रूसमें युगान्तर— " [श्री०विश्वम्भरनाथ जिज्जा
(४) रूसकी राज्य-क्रान्ति" [स्वयं लेखककी रचना
(५) बोल्शेविक जादूगर-" " "
(६) बोल्शेविक रूस— " " "
(७) महात्मा लेनिन— " [पं० रामप्रसाद मिश्र

विषय-सूची

श्री

पहली क्रान्ति

१

आठ मार्च १९१७ को रूसमें पहली क्रान्ति हुई थी। उस समय रूसके सत्ताधारी सम्राट् 'निकोलस' सीमान्तपर यूरोपीय महायुद्धमे लड़नेवाली अपनी सेनाओंका निरीक्षण करनेके लिये गये हुए थे। सन् १८६५ से ज़ारशाहीका विरोध हो रहा था। संसार-भरमें राज-सत्ताके विरुद्ध झगडा उठ खड़ा हुआ था, तब भला रूसके निरंकुश और अत्याचारी ज़ारोंके खिलाफ़ प्रजा क्यों न खड़ी होती? ज़ार-निकोलस भी घोर स्वेच्छाचारी शासक थे और तिसपर जर्मन-राजवंशकी राजकुमारीका उनके साथ विवाह हुआ था। एक तो कड़वा करेला, तिसपर नीम चढ़ा! जर्मनीके सम्राट् क़ैसरने ज़ारीनाके द्वारा अपने फन्दे फेंकने शुरू किये। ज़ारका पापी मन्त्री 'रासपुटिन' भी जर्मनीसे मिल गया और दूसरी तरफ़ अन्तर्देशीय-मन्त्री प्रोटोपोपाफ प्रजापर घोर अन्याय करता रहा। इन अनेक कारणोंसे १९०५ से ही जनतामें क्रान्तिके भाव उत्पन्न हो गये थे।

१६०५ की एक घटना विशेष उल्लेखनीय है। ज़ारके निरंकुश शासनके विरुद्ध स्थान-स्थानपर क्रान्तिकारी संस्थाएँ क़ायम हो चुकी थीं। स्कूलों और कालेजोंके विद्यार्थियोंने गुप्त-सभाएँ करके ज़ारके शासनको उलटनेके लिये बड़ा भारी आन्दोलन खड़ा कर दिया था। १९०५ में राष्ट्रीय दलके नेताओंकी एक बड़ी भारी कानफरेन्स हुई थी। उसके निश्चयके अनुसार कई हज़ारकी संख्यामें जनताके प्रतिनिधि ज़ारके महलके सामने शासन-सुधार माँगनेके लिये उपस्थित हुए। ज़ारने इस प्रतिनिधि-मण्डलका आना और सुधारोंका माँगना अपने लिये अपमान-जनक समझा! उस राज-सत्ताके अभिमानी और निरंकुश ज़ारने फ़ौजें बुलवा कर जनताके इस विराट् दलपर गोलियाँ चलवा दीं। भीड़ तितर-बितर हो गयी; लेकिन कई सौ आदमी खेत रहे। ज़ारका एक भी सिपाही नहीं मरा। मरे निर्दोष और निरपराध जनताके प्रतिनिधि! इन लोगोंकी लाशें नदीमें फेंकवा दी गयीं। इस प्रकार स्वयं ज़ारने अपने विनाशका आवाहन किया। १६१३ में साम्यवादी-क्रान्तिकारियोंने फिर आन्दोलन उठाया। इस आन्दोलनके प्रमुख नेता, बोल्शेविज़्मके आचार्य मोशिये 'लेनिन' थे। लेकिन वे रूसमें नहीं रहते थे। मोशिये ट्राटस्की, मोशिये केमनाफ तथा मोशिये ज़िनोवीफ आदिने एक बड़ी भारी सभा की और देशमें साम्यवादी आन्दोलन उठानेका निश्चय किया। ज़ारने इस आन्दोलनको कुचलनेके लिये बड़े-बड़े अत्याचार किये। हज़ारों देशभक्त जेलोंमें ठूँस दिये गये। सैकड़ों व्यक्ति साइबेरियामें निर्वासित

कर दिये गये। जेलोंका शासन ऐसा अन्धाधुन्ध था, कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं। बीसियों देश-भक्त बिना अन्न-जलके तड़पा-तड़पा कर मार डाले गये और खबर छपवा दी गयी, कि वे रोगसे पीड़ित होकर मर गये। साम्यवादी समाचार-पत्रोंने यहाँतक छापा था, कि जेलके अधिकारियोंने जान-बूझकर राजनीतिक कैदियोंको फाँसी लगा कर मार डाला और लाशें गड़वा दीं।

ज़ारके इस घोर अत्याचार-पूर्ण शासनकी कल्पना करते हुए शरीर रोमांचित होता है। लेकिन ये घटनाएँ बिलकुल सत्य हैं और प्रामाणिक ग्रन्थोंमे इनकी सचित्र घटनाएँ अंकित हैं।

१९१३ मे ही बोल्शेविक-पार्टी खुलेतौरसे सामने आयी और इस पार्टीके अखबार प्रकाशित हुए ; लेकिन अन्यायी ज़ारने इन अखबारोंको बन्द करवा दिया। १९१४में यूरोपीय महायुद्ध प्रारम्भ हुआ और जर्मनीके हरचन्द कोशिश करते रहनेपर भी रूसने इंगलैण्ड और फ्रान्सका साथ दिया। जब जर्मनीने देखा, कि प्रयत्न निष्फल हुआ, तब उसने दूसरी चाल खेली। क़ैसरने गुप्त दूत भेजकर ज़ारके कई मन्त्रियोंको मिला लिया। रास्पुटिनको बड़ी भारी रिश्वत देकर ज़ारके खिलाफ षड्यन्त्र रचा गया। परिणाम यह हुआ, कि रणक्षेत्रोंमें लड़नेवाली रूसी सेनाओंकी रसदमे भी गड़बड़ी पड़ने लगी। गोली-बारूद भी यथासमय न पहुँच सकी। रूसी सेनाएँ हारने लगीं और कुत्तेकी मौत मरने लगीं।

दूसरी तरफ़ देशमें ज़ारके शासनके विरुद्ध आन्दोलन फिर ज़ोर

पकड़ने लगा। सेनाओंकी हारसे सैनिकोंमें भी असन्तोष फैला और उनके असन्तोषने देशके भीतर क्रान्ति करनेवाले दलोंको बहुत प्रकारसे मदद पहुँचायी।

व्यवस्थापिका सभा (ड्यूमा) के प्रेसिडेण्ट मोशिये रोडज़िन्को-ने ज़ारको बहुत समझाया, कि जनताका असन्तोष बढ़ता जा रहा है और अब कड़े शासनकी गुञ्जाइश नहीं है; क्योंकि युद्धके समय जनताकी सहायता परमावश्यक होती है। लेकिन अभागे ज़ारकी मतिपर पत्थर पड़ चुके थे। वे सेनाओंको दशा देखने और सेनाके लिये कड़े क़ानून बनानेके विचारसे रण-क्षेत्रोंके सीमान्तपर चले गये।

यहाँ जर्मनीसे मिले हुए मन्त्रियोंने जनताको भड़कानेके लिये अन्नपर प्रतिबन्धक क़ानून लगा दिया। देहातों और क़सबोंमे अनाजकी कमी पड़ गयी। मज़दूर और ग़रीब लोग भूखों मरने लगे। पेट्रोग्राडमें रोटियोंकी दूकानें बन्द हो गयीं। लोग मारे भूखके तड़फड़ाके दूकानोंपर धावा बोलने लगे। ८ मार्च १९१७ के दिन यह घटना घटित हुई। पुलिसने गोली चलाकर उन भूखों मरतोंको रोकना चाहा। बस, सारे शहरमें हुल्लड़ मच गया। लूट-मार शुरू हो गयी! दूकानोंके शीशे तोड़ डाले गये। बाज़ारोंमे आग लगा दी गयी। क्रान्तिका आरम्भ हो गया!

पेट्रोग्राडमें रहनेवाली सरकारी सेनाओंने गोली चलानेसे इन-कार कर दिया! सीमान्तपरसे ज़ारने 'कोसक' नामक महाभयंकर घुड़सवार भेजे; लेकिन जिन कोसकोंने १९०५में निर्दोष जनतापर गोली चलायी थी, उन्होंने इस बार आश्चर्य-जनक भाव प्रकट

किये। जिस समय कोसक-घुड़सवार पेट्रोग्राडमें घुसे, उस समय जनताने समझा, कि कोई बड़ा भारी क़तलेआम होनेवाला है। लेकिन नाटककी भाँति स्थिति बदल गयी। कोसकोंने अपने-अपने अफ़सरोंके हुक्म देनेपर भी गोली चलानेसे इनकार कर दिया। तीसरे दिन सोवियट अर्थात् रूसी जनताकी राष्ट्रीय कांग्रेसने क्रान्तिकी घोषणा करते हुए सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली! धीरे-धीरे, क्रान्तिकारी-दल भी शामिल हो गये। रङ्ग बंदलता देखकर सरकारी फौजें भी आ मिलीं!

जिस समय पेट्रोग्राडकी खबर मास्को आदि शहरोंमें पहुँची, उस समय वहाँ भी ऐसीही घटनाएँ संघटित हुईं। रण-क्षेत्रोंकी सैर करनेवाले ज़ारके होश उड़ गये। अब क्या हो सकता था? ज़ार पागलोंकी तरह पेट्रोग्राडकी तरफ आने लगा; लेकिन उसके भाग्यमें अपनी राजधानीमें आना बदा नहीं था। पेट्रोग्राडपर सोवियटका क़ब्ज़ा हो गया था। एक अस्थायी मंत्रि-मण्डल क़ायम हो चुका था। ज़ारके मन्त्री गिरफ़्तार किये जा चुके थे। शहर-भरकी गोली-बारूदपर सोवियटका क़ब्ज़ा हो चुका था। सेनाएँ जनताके साथ थीं। ज़ारके परिवार-वर्ग क़ैद कर लिये गये। अब रूसमें ज़ारका कुछ भी न था। केवल ज़ारकी पुलिस क्रान्तिकारियोंपर फैर करती रहती थी; लेकिन जबसे हड़ताल करके मज़दूर भी क्रान्तिके अनुष्ठानमें आकर शामिल गये, तबसे क्रान्तिकी सफलता पूर्णतः निश्चित हो गयी। मज़ू समस्त पुलिस-स्थानोंपर क़ब्ज़ा कर लिया।

जबतक ज़ार पेट्रोग्राड पहुँचे, तबतक यहाँ सब कुछ बदल चुका था। ड्यूमाकी कार्य-कारिणीने यह निश्चित कर डाला, कि ज़ार निकोलस गद्दीसे उतार दिये जायें और उनसे त्याग-पत्र लिखा लिया जाये। इस कामके लिये ज़ारके पास मोशिये गचकाफ तथा मोशिये 'शेलगिन' रवानः किये गये।

मोशिये गचकाफने पेट्रोग्राडसे थोड़ी ही दूरपर ज़ारकी स्पेशल-ट्रेन पायी। वहाँ जाकर उन्होंने ज़ारको पूरी घटना कह सुनायी। शुष्क-मुख ज़ारने पूरा विवरण सुनकर हाथ मेज़पर पटक दिये और फिर बड़ी निराशाके साथ अपने चारों तरफ देखा। उस समय ड्यूमाका यह खयाल था, कि जनता ज़ार निकोलसको ही गद्दीसे उतारना चाहती है, ज़ार-शाही दूर नहीं करना चाहती। इसीलिये ज़ारसे निम्नलिखित त्याग-पत्र लिखवाया गया :—

ज़ारका त्याग-पत्र

"ईश्वरकी महती इच्छासे मैं, रूसका सम्राट्, पोलैण्डका ज़ार, फिनलैण्डका ड्यूक अपनी प्रजाको सूचित करता हूँ:—

"ऐसे महायुद्धके समयमें, जब कि हमारा शत्रु तीन वर्षसे रूसको पराजित करके हमारे देशको पराधीन बनानेका भीषण प्रयास कर रहा है, एक और दुःखदायी परीक्षा सामने आती है। भीतरी अशान्तिने इस भीषण युद्धके क्रमपर एक घातक प्रभाव डाला है।

"रूसका भाग्य, उसकी वीर सेनाकी मान-रक्षा, जनताकी भलाई

तथा प्यारे देशका भविष्य इस बातकी आवश्यकता प्रकट करता है, कि युद्ध इस प्रकारसे किया जाये, कि अन्तमें विजय प्राप्त हो।

"अत्याचारी शत्रु अपने अन्तिम प्रयत्नोंमें लगा हुआ है। पर वह समय निकट है, जब हमारी वीर सेनाएँ मित्र-राष्ट्रोंकी सेनाओंके साथ अन्तमें शत्रुको परास्त कर सकेंगी।

"फैसलेके इन दिनोंमें हम सोच रहे हैं, कि इस बातकी भी आवश्यकता है, कि देशके अन्दर एकताका दृढ़ संगठन तथा शक्तियोंका एकीकरण हो, जो शीघ्र विजयी दिवस ला सके। इसलिए, ड्यूमासे परामर्श करनेके पश्चात् यह ज़रूरी समझा गया है, कि हम (ज़ार और ज़ारीना) सिंहासनको त्याग दें और अपने अधिकारोंको उसके हाथोंमें सौंप दें।

"अपने पुत्रको अपनेसे अलग न करनेकी इच्छासे, हम अपने भाई ग्रैण्डड्यूक मिकायल एलेक्ज़ेण्डर विचको सिंहासनका हक़दार बनाते हैं। ऐसा इस इच्छासे करते हैं, कि यह बात रूसके राज-सिंहासनके भविष्यके लिये हितकर हो।

"हम अपने भाईको सिंहासन इसलिये सौंपते हैं, कि वह राष्ट्रीय प्रतिनिधियोंकी व्यवस्थापक सभाओंसे पूरी एकताके साथ मिलकर, देशका शासन करे और देशकी भलाईके लिये, व्यवस्थापक प्रतिनिधि-सभाके सामने इस जिम्मेदारीको शपथ ले।

"हम मातृभूमिके पुत्रोंको आमन्त्रित करते हुए यह कहना चाहते हैं, कि वे (नये) ज़ारकी आज्ञाका पालन करके अपने पवित्र तथा देश-हित-कार्यको पूरा करते रहें; साथ ही कठिन

अवसरोंपर ज़ारको सहायता करते हुए देशके शासन तथा वैभवको उन्नत करते रहें।

"परमात्मा रूसका कल्याण करे!

"हस्ताक्षर—निकोलस रोमनाफ़ (ज़ार)

"हस्ताक्षर—ज़ारीना।"

यह त्यागपत्र लिखवा लेनेके बाद ज़ार, ज़ारीना, युवराज अलिक्स तथा तीनों राजकुमारियाँ पश्चिमी साइबेरियाके एक गाँवमे नज़रबन्द करके रखी गयीं।

इस प्रकार ज़ार निकोलसके अत्याचारी शासनका अन्त हुआ और साथ-ही-साथ किस प्रकार रूससे ज़ारशाहीके शासन-का सदाके लिये अन्त हुआ, वह अगले पृष्ठोंमें पढ़िये।

सिंहासन उलट दो !

इधर ज़ार राज-सिंहासनके त्याग-पत्रपर हस्ताक्षर कर रहे थे, उधर क्रान्तिकारी जनता जेलके फाटक तोड़कर देश-भक्त क़ैदियोंसे गले मिल रही थी। सफलताके आकाशके नीचे आनन्दके समुद्र उमड़ रहे थे ! बिछुड़े हुए प्रेमी, देशके सर्वस्व और माताके दुलारे नवयुवक लोहेके सींखचोंसे निकल कर स्वाधीन रूसकी पवित्र पृथ्वीपर पदार्पण कर रहे थे। स्थान-स्थानपर उनका स्वागत हो रहा था। फूल बरसाये जा रहे थे। तालियाँ पीटी जा रही थीं। जुलूस निकाले जा रहे थे। क्रान्तिका महोत्सव सर्वत्र हर्ष-ध्वनिके साथ मनाया जा रहा था। रक्त-पात और लूट-मार बन्द थी। छोटे-छोटे बालक राष्ट्रीय पताकाएँ हाथोंमें लिये हुए सड़कोंपर "स्वाधीन रूसका सौभाग्य स्थिर हो !" की आवाज़ें बुलन्द कर रहे थे !

ठीक ऐसे ही समयपर, ज़ारके सिंहासन-त्यागका समाचार पेट्रोग्राड, मास्को और कीव आदि नगरोंमें फैल गया। लेकिन ग्रैण्ड ड्यूक अलेक्ज़ेण्डरो विचके गद्दीपर बिठलाये जानेकी अफ़वाहने जनतापर पत्थर बरसा दिये। फिर जोश उमड़ा। जेलोंसे छूटे हुए देश-भक्तोंने जुलूस निकाल-निकाल कर घोषणा की, कि

जन-सत्ताका जन्म

यह ड्यूमा एक ऐसी संस्था थी, जिसे हम रूसकी व्यवस्थापिका महासभाके नामसे पुकार सकते हैं ; लेकिन जनता-द्वारा स्थापित सोवियट ही असली राष्ट्रीय प्रतिनिधियोंकी संस्था थी। हर-एक ज़िलेमें ये सोवियट (सभाएँ) क़ायम थीं और इस क्रान्तिके बाद इन सोवियटोमे नयी जान पड़ चुकी थी। सोवियटमे किसान, मज़दूर तथा सर्व-साधारण जनताके प्रतिनिधि थे। ड्यूमा केवल ज़ार-द्वारा स्थापित व्यवस्थापक संस्था थी ; लेकिन इस ड्यूमामें भी जनताके सच्चे प्रतिनिधि पहुँच चुके थे। इसीलिये क्रान्तिको सफलतापूर्वक संचालित करनेका सुयोग मिल गया। लेकिन इतना हम ज़रूर कहेंगे, कि ड्यूमामें नरम-दलके नेता अधिक थे, इसी लिये परिमित राज-सत्ताकी स्थापना ड्यूमाने स्वीकार कर ली थी।

दूसरी ओर मज़दूरों और सैनिकोंकी कौंसिल थी, जिसका नाम "श्रमजीवियों और सैनिकोंकी सभा" था। क्रान्तिके दूसरे ही दिनसे यह श्रमजीवी-सैनिक-सभा ज़ोर पकड़ती गयी और सच पूछो, तो इसी सभाके ज़ोर देनेपर ड्यूमाने प्रजातन्त्रकी स्थापना निश्चित की। यदि मज़दूर तथा सैनिक ज़ारशाही का घोर

विरोध न करते, तो आज भी रूसमें ज़ारकी गद्दी क़ायम होती और इङ्गलैण्डकी भाँति परिमित राज-सत्ता दिखलाई पड़ती ।

ग्रैण्ड ड्यूक अलेक्ज़ेण्डरो विचसे त्याग-पत्र ले लेने बाद मन्त्रि-मण्डलके सामने देश-भरके शासनका उत्तरदायित्व आ पड़ा। ईश्वर-की सबसे बड़ी कृपा यह हुई, कि पेट्रोग्राडकी देखादेखी, समस्त रूसमें प्रजातन्त्रकी माँग उठ खड़ी हुई थी और मास्को, कीव, यूक्रेन, साइबेरिया आदि समस्त प्रान्तोंने मन्त्रि-मण्डलका शासन स्वीकार कर लिया था। इसीलिये देशमें अशान्ति कम थी। सेनाओंने तार और अपने-अपने प्रतिनिधि भेजकर अस्थायी प्रजा-तन्त्र-मण्डलको स्वीकार कर लिया था। मन्त्रि-मण्डल धड़ाधड़ सूचनाएँ निकाल कर देशकी स्थितिको अनुकूल बना रहा था। ड्यूमाकी कार्यकारिणी कमेटीने (इसी कमेटीने अस्थायी मन्त्रि-मण्डलकी स्थापना की थी) सबसे पहले जनताके नाम यह सूचना प्रकाशित की :—

(१)—समस्त राजनीतिक, सैनिक तथा कृषिक अपराधियों-(क़ैदियों) को माफी दी जायेगी।

(२)—व्याख्यान देने, प्रेस खोलने, समाचार-पत्रोंको स्वाधी-नता प्रदान करने, सभा-समितियाँ स्थापित करने, मज़दूर-दलके संगठित और सरकारी कर्मचारियोंको भी प्रतिनिधि-सभाएँ सङ्गठित करनेकी स्वाधीनता प्रदान की जायेगी।

(३)—सब प्रकारकी सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक रुकावटें दूर कर दी जायेंगी।

(४)—सार्वजनिक मतके अनुसार देशकी एक प्रतिनिधि-संस्था स्थापित की जायेगी, जिसकी रायसे मन्त्रि-मण्डलका चुनाव हुआ करेगा और जिसकी सम्मति लेकरही शासनका कार्य चलाया जाया करेगा।

(५)—पुलिसके स्थानपर राष्ट्रीय सैनिकोंकी नियुक्ति की जायेगी। इन सैनिकोंका प्रबन्ध म्युनिसिपैलिटियोंके हाथमें रहेगा और इस नगर-रक्षक सेनाके अफसर म्युनिस्पिल प्रतिनिधियों-द्वारा हुआ करेंगे।

(६)—हरएक सम्प्रदायके प्रतिनिधियोंके चुनावका काम आरम्भ कर दिया जायेगा तथा उनके लिये हितकर संस्थाओंका सुचारुरूपसे सङ्गठन करनेका पूरा आयोजन कर दिया जायेगा।

(७)—जिन सैनिकोंने क्रान्तिमें भाग लिया है, उनके हथियार नहीं छीने जायेंगे, लेकिन उन्हें पेट्रोग्राडमें ही रहना चाहिये।

(८)—यद्यपि सैनिकड्यूटीके समय सैनिकोंको नियमोंका पूरा-पूरा पालन करना पड़ेगा, तथापि निजी कामके समय अथवा सामाजिक जीवन-व्यवहारके समय वे पूर्ण नागरिक स्वत्वोंका उपभोग कर सकेंगे।

ड्यूमाकी ओरसे निकलनेवाली ऐसी सूचनाओंने जनतापर अच्छा प्रभाव डाला और साथही रणक्षेत्रोंपर लड़नेवाली सेनाओंने भी प्रजातन्त्रकी स्थापनापर ख़ुशी मनायी। धीरे-धीरे समस्त सेनाओंने मन्त्रि-मण्डलकी सत्ता स्वीकार कर ली। जनताका विश्वास कायम रखनेके लिये मन्त्रि-मण्डलने कमाण्डर-इन-चीफ

ग्रैण्ड ड्यूक निकोलसको अलग करके जेनरल अलिक्ज़ीफ प्रधान सेनापति बनाये गये। इस परिवर्त्तनसे सेनाओंमें उत्साह और श्रद्धाका जन्म हुआ और रणक्षेत्रोंमें नयी बिजली दौड़ गयी। साथ ही सेना तथा युद्ध-विभागके मन्त्री मोशिये गचकाफ़ने रणक्षेत्रोंमें स्वयं जाकर सैनिकोंको ज़ारशाहीके अन्तका शुभ समाचार सुनाया और नये अधिकारोंकी कथा कही। सेनाएँ नये जोशके साथ लड़ने लगीं और गोली-बारूदके कम होते हुए भी जर्मन सेनाओंका मुकाबिला करने लगीं।

* * * *

लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी "मज़दूरों और सैनिकोंकी सभा" अपने साम्यवादी क्रान्ति-आन्दोलनको उठाये हुई थी। उसकी स्पष्ट माँग यह थी, कि जबतक सोवियट यानी वोट देने वाले प्रतिनिधियोंकी राष्ट्रीय सभाका नया सङ्गठन न हो जाये, तबतक देशके शासन-कार्य मज़दूरों और सैनिकोंकी प्रतिनिधि-सभा (कौंसिल) द्वारा चलाया जाये; क्योंकि यह कौंसिल सच्चे प्रातिनिधिक ढङ्गसे क़ायम की गयी थी। ड्यूमा इस कौंसिलका अपने ऊपर माननेसे इनकार करती थी। मोशिये करेन्स्की मज़दूरों और सैनिकोंके पक्षपाती थे; लेकिन वे नरम साम्यवादी थे। तब भी उन्होंने विरोधको दाबे रहनेके लिये साम्यवादी-दलको बहुत कुछ शान्त रखा और बार-बार मज़दूर-सैनिक कौंसिलको विश्वास दिलाया, कि मन्त्रि-मण्डल द्वारा कोई भी ऐसा कार्य न होगा, जिससे श्रमजीवियोंके अधिकारोंमें कमी होगी।

फल यह हुआ, कि मोशिये करेन्स्कोका प्रभाव बढ़ता गया और प्रिन्स ल्वौफ तथा मोशिये मिल्यूकाफ़की पार्टी कमज़ोर पड़तो गयी। इसी विरोधके कारण मो० मिल्यूकाफ़ने मन्त्रि-मण्डलसे इस्तीफा दे दिया! लेकिन दिल्लगी यह थो, कि करेन्स्की मज़दूर-दलके नेता होते हुए भी युद्धको जारी रखना चाहते थे। इसीलिये ड्यूमाकी एक महती बैठकमें नया मन्त्रि-मण्डल बनाया गया, जिसमें करेन्स्की युद्ध-मन्त्री बनाये गये। असल बात यह थी, कि ड्यूमाकी कार्य-कारिणी कमेटी युद्धको अच्छे ढङ्गसे समाप्त करना चाहती थी; लेकिन 'मज़दूर-सैनिक-कौन्सिल'का कहना था, कि युद्ध शीघ्र समाप्त करके देशका भीतरी शासन सुधारा जाये। चूंकि करेन्स्कीका कहना मज़दूर-सैनिक कौंसिलमें माना जाता था, इसी लोभसे ड्यूमाकी कार्यकारिणीने उन्हें युद्ध-मन्त्री बना दिया।

इस परिवर्त्तनसे असन्तुष्ट होकर मोशिये गचकाफने भी मन्त्रि-मण्डलसे इस्तीफा दे दिया। अतः नया मन्त्रि-मण्डल इस प्रकार बनाया गया:—

प्रजातन्त्रका मन्त्रि-मण्डल।

(१) प्रधान मंत्री—(अन्तर्देशीय मंत्री) प्रिन्स ल्वौफ

(२) पर-राष्ट्र मंत्री—मो० टरशन्को।

(३) युद्ध-मंत्री—मो० करेन्स्की।

(४) अर्थ-मंत्री—मो० शिङ्गराफ।

(५) रेल-विभाग मंत्री—मो० निकराफ।

(६) व्यापार-मंत्री—मो० कोनोवलाफ़।

(७) शासन-मंत्री—मो० गोडनेफ।

(८) शिक्षा-मंत्री—मो० मेनोलाफ़।

(९) धार्मिक-मंत्री—मो० व्लेडी मीर लौफ।

(१०) न्याय-मंत्री—मो० परवीजेफ़।

(११) मज़दूर-मंत्री—मो० स्कोबेलाफ।

(१२) कृषि मन्त्री—मो० शेरनाफ।

(१३) डाक-तार-मंत्री—मो० ज़ेरटेली।

(१४) सार्वजनिक-साहाय्य-मंत्री—मो० शेकोवस्की

(१५) वोटर्स-विभाग-मंत्री—मो० ग्रिम।

इस नये मंत्रि-मण्डलमें छ साम्यवादी मन्त्री थे, जो कि मज़दूर-सैनिक कौन्सिलके आन्दोलन उठानेके कारण रखने पड़े थे। यह एक प्रकारका समझौता था, जिसके आधारपर मज़दूर-सैनिक दलने मिलकर काम करनेका वचन दिया था। इस समयतक करेन्स्कीका आदेश मान्य था, लेकिन जैसेही मोशिये लेनिन रूसमे पधारे, वैसेही मा० करेन्स्कीका यह प्रभाव नष्ट हो चला।

साम्यवादकी लहर

इतनी जल्दी क्रान्तिकी सफलताकी आशा किसीको भी न थी। यही कारण था, कि लोक-सत्तावादी जनता पिछड़ी रही; लेकिन साम्यवादी मज़दूर-दल आगे बढ़ गया। साम्यवादी नेता ये थे:—

(१) मोशिये अवियज्ञाव।	(२) मोशिये क्रेमरा।
(३) „ प्लेखेनाव।	(४) „ करेन्स्की।
(५) „ गोज़।	(६) „ शेरनाव।
(७) „ ऐम्सेनटीव।	(८) मैडम ब्रिस्कोवस्कय।
(९) „ स्पिरिडोनाव।	(१०) मोशिये केरलिन।
(११) „ कैमकाव।	(१२) „ कैलाकेइव।
(१३) „ लूनेटेशरकी।	(१४) „ ट्राट्स्की।
(१५) „ जिनोवोव।	(१६) „ केमेनाव।

(१७) „ लेनिन।

आदि-आदि मज़दूरों, सैनिकों और किसानोंको बराबर उकसाते रहते थे। इस उकसाहटके कारण रूसमें श्रमजीवी धीरे-धीरे

साम्यवादके उपासक बन गये थे। बस, यही कारण था, कि क्रान्तिका आरम्भ होते ही मज़दूरों और सैनिकोंकी कौंसिल अन्य पार्टियोंकी अपेक्षा अधिक सुसंगठित हो गयी। मज़दूरोंने क्रान्तिमें बड़े उत्साहसे भाग लिया था। अतः उनके हृदयोंमें यह भाव स्वभावतः उत्पन्न हुआ, कि हम ही क्रान्तिके नेता हैं। दूसरी बात यह, कि मज़दूर-दलके नेता बड़े चतुर थे, उन्होंने यह देखकर कि मन्त्रि-मण्डल पूँजीवादियोंके चंगुलमें फँसा जा रहा है, एक विराट् आन्दोलन खड़ा कर दिया और जनतामें यह भाव फैलाना शुरू किया, कि प्रजातंत्र तबतक सच्चा जनसत्तात्मक राज्य नहीं कहला सकता, जबतक सोवियट-सभाकी विशद् बैठकमें यह तय न हो जाये, कि प्रजातन्त्रका मुख्य लक्ष्य क्या है?

इस आन्दोलनका भयंकर रूप देख कर नरमदलके नेता मंत्रि-मण्डलसे खिंच बैठे और प्रधान-मंत्री प्रिन्स ल्वौफ़ने भी इस्तीफा दे दिया। जब ड्यूमाके चारों नेता—मिल्यूकाफ, गचकाफ, रोड-जिन्को तथा प्रिन्स लाफ—मंत्रि-मण्डलसे अलग हो गये, तब करेन्स्की प्रधान-मंत्री बनाये गये!

मोशिये अलेक्ज़ेण्डर करेन्स्की साम्यवादी नेता थे ज़रूर और उनपर साम्यवादी मज़दूर-दलका विश्वास भी था; लेकिन उनकी नीति यह थी, कि पूँजीवादियों और ज़मींदारोंको साथ लेकर शासन कार्य चलाया जाये। पर साम्यवादी नेताकी यह दुरङ्गी पालिसी कबतक चलती? करेन्स्कीसे अधिक प्रभावशाली नेता मज़दूर-सैनिक-कौन्सिलका कार्य संचालित कर रहे थे। सबके ऊपर

ट्राट्स्की थे, जिनकी संगठन-शक्ति और प्रचार-शक्ति आश्चर्य-जनक थी। करेन्स्की दिन-भरमे जितनी इमारत बनाते थे, रात-भरमें टाट्स्की उन्हें धराशायी कर देते थे।

प्रधान-मन्त्री करेन्सकी यह चाहते थे, कि परस्परका मत-भेद बन्द हो जाये, तो रण-क्षेत्रोंका कार्य सुचारु रूपसे चलाया जाये, और जर्मनीको पीछे हटा कर अपना देश बचा लिया जाये। लेकिन लेनिन, टाट्स्की आदि नेता यह आन्दोलन उठाये हुए थे, कि शीघ्र ही जर्मनोसे सन्धि कर ली जाये और किसानोंको मुफ्तमें ज़मीनें दी जायें, मिलोंपर मज़दूरोंका अधिकार क़ायम किया जाये और सेनाओंपर सैनिक-कमेटियोंका प्रभुत्व स्थायीरूपसे स्थापित कर दिया जाये।

ये तीनों बातें किसानों, मज़दूरों तथा सैनिकोंके मनकी थीं। इस आन्दोलनने करेन्स्कीके सब मनसूबे पस्त कर दिये। करेन्स्की कभी इधर खिंचते थे, तो कभी उधर खिंचते थे। पूँजी-वादियोंने इस मौकेपर एक बड़ा भारी षड़यन्त्र रचा। प्रधान सेनापति मार्नी लाफको ऐसी ताल-पट्टी दी, कि तुम रूसके सैनिक शास्ता (डिक्टेटर) बन जाओ, वर्ना करेन्स्की एक-न-एक दिन साम्य-वादो नेताओंके प्रभावमे आकर मिलो और ज़मीदारियोंपर राष्ट्रीय अधिकार जमा लेंगे और लेनिनका आन्दोलन सफल हो जायेगा! इस समय रूसी मन्त्री-मण्डलपर आपत्तियोंके पहाड़ टूट रहे थे। एक तरफ तो रण-क्षेत्रोंसे रसद तथा गोली-बारूदकी माँग आ रही थी। दूसरी तरफ मास्को तथा पेट्रोग्राडमे मज़दूर-दल हड़ताल

मचाये हुए थे। तीसरी तरफ पूँजीवादी सम्प्रदाय अपनी तरफ घसीट रहा था। चौथी विपत्ति यह आ पड़ी, कि जेनरल कार्नीफ़लाने बड़ी भारी सेना लेकर करेन्स्कीके मन्त्री-मण्डलका विध्वंस करनेके लिये चढ़ाई कर दी।

साम्यवादी नेताओंने जब सुना, कि जेनरल कार्नीलाफ़ने करेन्स्कीकी सत्ता नष्ट करके अमीर आदमियोंका राज्य क़ायम करनेका इरादा किर लिया है और बग़ावतपर कमर कस ली है, तब उनके दलके कुछ लोग करेन्स्कीके पक्षमें चले गये और सैनिक-दलने पेट्रोग्राडमें अपनी सेना संगठित करके करेन्स्कीकी बड़े मौकेपर सहायता की।

जेनरल कार्नीलाफ पेट्रोग्राडके निकट ही परास्त होकर भाग गये और मो० करेन्सकीने पेट्रोग्राडमें आकर अपने नये दुश्मन बोल्शेविकोंको भी नष्ट कर देनेका बीड़ा उठाया। साम्यवादी-दलके उग्र लोग ही बोल्शविकोंके नामसे प्रसिद्ध थे, जब साम्यवादी-दलने देखा, कि हमारी ही सहायतासे करेन्स्कीकी रक्षा हुई और अब हमारे ही एक उग्र अंशके नाश कर देनेका करेन्स्की बीड़ा उठा रहे हैं, तब स्थिति बदल चली!

साम्यवादी-दलमें एकता क़ायम हो गयी और युद्ध बन्द कर देनेका आन्दोलन फिर ज़ोर पकड़ने लगा।

पार्टियोंकी घुड़दौड़!

यद्यपि, रूसकी जनता राजनीतिक ज्ञानमें यूरोपके अन्य देशोंसे पिछड़ी हुई थी, तथापि उसके अन्दर राजनीतिक विचार-भिन्नता इतनी अधिक थी, कि लोग यह सोचनेकी सम्भावना तक नहीं कर सकते थे, कि रूस राजनीतिक विचारोमे पिछड़ा हुआ है क्योंकि रूसके अन्दर दल-बन्दियोंका बाज़ार बहुत गर्म था और क्रान्तिके पहले ही, वहाँ चौदह राजनीतिक पार्टियाँ थीं!

ये पार्टियाँ, तरह-तरहके उपायों और साधनोंका आन्दोलन हाथमें लिये हुए स्वाधीनताकी माँग कर रही थीं। इनका यहाँपर संक्षिप्त परिचय दे देनेसे पाठकोंको आगेकी घटनाओंके समझनेमें सहायता मिलेगी।

(१) राजभक्त—राजभक्त-दल प्रत्येक देशमें होता है, लेकिन इसका वास्तविक अस्तित्व केवल निजी स्वार्थपर निर्भर है। जिन पूँजीवादियों, सेठ-साहूकारों, मिल-मालिकों, व्यापारियों, ऊँचे ओहदेके अधिकारियों, वकीलों और ठेकेदारोंकी रोटियाँ राज-सत्ताकी बदौलत चलती है, वे ही इस पार्टीके सदस्य कहलाते हैं।

रूसमें भी यह दल था और क्रान्तिके पहले इसी दलके पढ़े-लिखे लोग ज़ारके मन्त्री और सेनाध्यक्ष बनाये जाते थे।

(२) परिमिति राजसत्तावादी—यह दल चाहता था, कि ज़ारकी राजगद्दी बनी रहे; लेकिन ड्यूमा अर्थात् व्यवस्थापक सभा देशका शासन किया करे। जिस प्रकार इङ्गलैण्डमें बादशाहके नामसे पार्लमेण्ट राज्य करती है, ठीक उसी प्रकार रूसके परिमित-राजसत्तावादी लोग अपने यहाँ भी राज्य स्थापित करना चाहते थे। इस दलके प्रधान नेता मो० रोडजिन्को तथा मो० शेलगिन आदि थे; लेकिन 'मज़दूर-सैनिक-पार्टी'के आन्दोलनके कारण इनकी भावना फलीभूत नहीं हुई और ज़ारके त्याग-पत्रके बाद ग्रैण्ड ड्यूकको भी इस्तीफ़ा लिख देना पड़ा। इस प्रकार रूससे ज़ारकी गद्दीका नाम-निशान ही मिट गया।

(३) कैडेट्स—यह पढ़े-लिखे अमीरोंका दल था। यद्यपि यह दल भी परिमित राज-सत्ताका इच्छुक था, तथापि ग्रैण्डड्यूकके त्याग-पत्रके बाद, इस दलका मन्त्रि-मण्डल प्रजातन्त्र क़ायम करके एक महीने तक शासन-कार्य चलाता रहा। इस दलकी नीति पूँजीवादियोंसे मिलती-जुलती थी और व्यापारियों तथा मिल-मालिकोंकी उन्नति और प्रभुत्वका यह पक्षपाती था। यह दल इङ्गलैण्डकी मित्रताका समर्थक और युद्ध जारी रखनेके पक्षमें था। साम्यवादी आन्दोलनके कारण शीघ्रही इस दलका प्रभाव क्षीण हो गया और इस दलके प्रधान नेता प्रिन्स ल्वौफ, मिल्यूकाफ़ तथा गचकाफने इस्तीफा देकर मन्त्रिमण्डलसे अपना नाता तोड़

लिया। इस दलके अन्य नेता गचकाफ, टेरशेन्को, शेस्को वैना-वीर आदि थे।

(४) सार्वजनिक-दल—इस नामका एक नया दल राजभक्तों-ने खड़ा किया था, ऊपरसे इस दलके नेता लोकसत्ताके अनुयायी बनते थे, लेकिन भीतर-ही-भीतर अमीर और बड़े-बड़े व्यापारियों के दलके सहयक थे।

(५) सार्वजनिक साम्यवादी—यह दल भी उपर्युक्त दलकी ही भाँति था। कहनेके लिये यह दल श्रमजीवियों, किसानों, क्लर्कों, दूकानदारो और छोटे-छोटे रोज़गारियोंका था। इसमें पुराने विचारके किसान अधिक थे। साम्यवादके नामसे ये लोग पूँजी-वादका समर्थन करते थे। इस दलके नेता पेशीखनाव तथा शेको-वस्की आदि थे।

(६) लोकसत्तावादी मज़दूर-दल—कार्ल मार्क्सने साम्यवादी सिद्धान्तोंका यह दल अनुयायी था। देशमें स्वाधीनता तथा साम्यवादी शासन इसका प्रधान उद्देश था; लेकिन १९०३ मे एक कानफरेन्समे इसके दो भाग हो गये। एकका नाम "बोल्शि-न्स्टवों" पड़ा और दूसरेका "मेन्शिन्स्टवो"। पर १९०५ में बोल्शेविकोंकी संख्या कम हो गयी और मेनशेविकोंकी तादाद बढ़ गयी। (बोल्शिन्स्टवोके अर्थ बहुमतके है और मेन्शिन्स्टवोके अर्थ लघुमतके है)। १९१७ मे बोल्शेविकोंकी संख्या फिर बढ़ गयी।

(७) मेन्शेविकी—उपर्युक्त मेन्शिन्स्टवो दलका ही नाम मेन्शेविकी पड़ा। इस दलमे सब प्रकारके साम्यवादी शामिल थे

और इस दलका उद्देश यह था, कि शासन कार्यमें श्रमजीवियोंका अधिकार बहुमतसेरहे, लेकिन जनतामें प्राकृतिक रूपसे साम्यवादका सिद्धान्त कार्य-रूपमें परिणत होता जाये। इस पार्टीमे शिक्षित श्रमजीवियोंकी ही तूती बोलती थी, अतः इस दलकी अमीरोंके साथ भी थोड़ी बहुत सहानुभूति थी। यही कारण था, कि क्रान्ति-के बाद यह विराट् दल मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानोंको अपने वशमें न रख सका और बाज़ी बोल्शेविकोंके हाथमे चली गयी। इस दलके नेताडैन, लीव्र तथा ज़रटेली आदि थे।

(८) स्वतंत्र मेन्शेविकी—मेन्शेविन्स्टवोंमेसे यह एक शाखा फूट निकली थी। यह दल भी साम्यवादी था और कट्टर साम्यवादी था। अमीरों और पूँजीवादियोंके साथ यह कोई सम-झौता नहीं रखना चाहता था,—यही इस दलकी विशेषता थी। लेकिन तिसपर भी यह दल मेन्शेविकी-दलसे अपना सम्बन्ध विच्छिन्न नहीं करना चाहता था। इसका बोल्शेविकोंसे पूरा मत-भेद था। पहले ट्राट्सकी भी इसी दलमे शामिल थे, लेकिन बादको ये पूरे बोलशेविक सिद्धान्तोंके अनुयायी बन गये। इस दलके मारटाव तथा मारटीनोव आदि नेता थे।

(९) बोलशेविकी—बोल्शिन्स्टवो-दलका नामही बोल्शेविकी पड़ा था। यह दल व्यावहारिक साम्यवादी था और ज़बर्दस्ती-अमीरोंसे धन,ज़मीदारोंसे ज़मीन तथा मिल-मालिकोंसे मिलें छीन कर जनताके अधिकारमें कर देनेका पक्षपाती था। मिलोंके कुली इस दलके प्रधान अङ्ग थे। क्रान्तिके बाद यह दल उत्तरोत्तर बढ़ता

और क्रमशः मज़बूत होता गया ग़रीब किसान तथा पीड़ित सैनिक, नौ-सैनिक आदि भी इस दलमें आ मिले। इसका प्रधान उद्देश श्रमजीवियोंकी गवर्नमेण्ट कायम करनेका था। इस दलके लेनिन, ट्राट्स्की, लूनेटरस्की आदि नेता थे।

(१०) स्वतन्त्र लोकसत्तावादी मज़दूर-दल—यह दल ठीक स्वतन्त्र मेन्शेविकी दलकी भाँति था और बोल्शेविकोंसे अलग रहते हुए भी बोल्शेविक शासनमे शामिल रहा और श्रमजीवियोंके राज्य-का समर्थन करता रहा। इसके नेता मैक्सिम गारकी, अवीलाव तथा क्रमाराव थे।

(११) साम्यवादी क्रान्तिकारी किसान-दल—असलमें प्रजा-तन्त्रवादी किसानोंकी यह पार्टी थी। इसमे वे किसान भी शामिल थे, जो ज़ारके हुक्मसे ज़बरन सेनामे भरती करके सैनिक बना दिये गये थे। पहली क्रान्तिके समय इस पार्टीने अच्छी मदद पहुँ-चायी थी। इसीलिये केडेट्सने इसके प्रतिनिधियोंको मंत्रिमण्डल-मे स्थान दिया था, लेकिन बादमे इस पार्टीने यह माँग पेश की, कि ज़मींदारोंकी ज़मीने ज़ब्त करके किसानोंको दे दी जाये और ज़मींदारोंको कुछ हर्जानेका रुपया दे दिया जाये। लेकिन जब युवक-दलने इस हर्जानेका भीविरोध किया, तब इस दलके दो खण्ड हो गये। एक राइट-पार्टी' और दूसरी 'लेफ्ट-पार्टी'। राइट-पार्टी मेन्शेविकोंसे मिली रही और बोल्शेविकोंसे अलग बनी रही। इस दलके नेता गोज़, करेन्स्की, शेरनाव, अक्सेण्टीव तथा मैडम त्रिस्कोवस्कय आदि थे।

(१२) लेफ्ट साम्यवादी क्रान्तिकारी—उपर्युक्त दलसे बिछुड़े हुए युवक लोग 'लेफ्ट पार्टी' के नामसे पुकारे जाने लगे। ये लोग बोल्शेविकोंसे समझौता करके ज़मींदारोंसे ज़मीने छीनने और किसानों तथा श्रमजीवियोंकी एक नयी सरकार क़ायम करनेके पक्षमें थे। बोल्शेविकोंने विजय प्राप्त होनेपर इस दलके लोगोंको भी मन्त्रि-मण्डलमें रखा। इस दलके स्पिरिडोनाव, केरलिन, कैमनाव, कैलागेईव आदि नेता थे।

इन पार्टियोंके सिवा प्लोवेनाव पार्टी तथा मैक्सी मिलिस्ट पार्टी आदि-आदि कई छोटी-छोटी दल-बन्दियाँ थीं।

व्लडीमीर लेनिन

यूलियनाव व्लडीमीर लेनिनने डीमीरने एक रूसी ज़मीदारके घरमें १० अप्रेल १८७० ई० को जन्म लिया था। इनके पिता पुराने विचारोंके राजभक्त पुरुष थे। एक तो ज़मींदार होनेके कारण उन्हे राजभक्त बननापड़ा था; दूसरे उस ज़मानेमे प्रजातन्त्र और साम्यवादका नाम भी सुनाई नहीं पड़ता था। लेनिनके पिताका विचार था, किलेनिनको पढ़ा-लिखाकर किसी सरकारी मुहकमेमे नौकर करा देंगे; लेकिन उनका यह विचार कभी सफल नहीं हुआ। लेनिन का भाई कालेज छोड़कर अराजक दलका मेम्बर बन गया था। प्रिन्स क्रोपटकिनका दल किसानोंमे अराजकताका बीज बो रहा था। किसानोंपर होनेवाले अत्याचारोंके कारण रूसमें एक विशेष प्रकार-की सनसनी फैल उठी थी। लेनिनका भाई अलेकज़ेण्डर यूलियनाव भी उस आन्दोलनमे शामिल हो गया। अन्तमें ज़ारके प्राण-घातके अपराधमे उसे फाँसीका दण्ड मिला। लेनिन अपने माता-पिताके एकमात्र पुत्र रह गये।

लेनिनने रूसके कई कालेजोंमे शिक्षा प्राप्त की थी। कालेजमे ये प्रखर बुद्धिके छात्र समझे जाते थे। साथही ये उद्दण्ड भी परले

सिरेके थे। कालेजमे इनकी एक पार्टी रहती थी और प्रोफ़ेसरों को तङ्ग करनाही इस पार्टीका मुख्य उद्देश्य था। कालेजकी डिबेटिङ्ग क्लासमें लेनिनका अच्छा नाम था। अध्ययन शील होनेके कारण इनकी तर्क वितर्ककी शक्ति ख़ूब बढ़ी हुई थी। ऊँचे-से ऊँचे क्लासकी वाद्-विवाद्-समितियोंमे ये बुलाये जाते थे और इनके व्याख्यान प्रोफ़ेसर तक बड़े ध्यानसे सुनते थे।

कालेजमें कार्ल मार्क्सके साम्यवाद्-सम्बन्धी ग्रन्थके पढ़नेके बाद्, इनकी रुचि इस विषयमें विशेष ज्ञान प्राप्त करनेकी ओर झुक पड़ी। छात्रावस्थामेंही इन्होंने जर्मन, फ्रेञ्च तथा अंग्रेज़ लेखकोंकी साम्यवाद्-सम्बन्धी बड़ी-बड़ी पुस्तकोंको पढ़ डाला। यहाँतक, कि उसी अवस्थामें, इन्होने फ्रेञ्च तथा जर्मन-साम्यवादियोसे पत्र-व्यवहार स्थापित करके साम्यवाद्के सम्बन्धमे 'वाद्-विवाद् भी जारी कर दिया!

रूसमे साम्यवाद्का प्रचार बढ़ रहा था। मो० प्लेखोनावके नेतृत्वमें साम्यवादी-लोकसत्तावादी दलकी स्थापना हो चुकी थी, लेकिन लेनिनके खरे सिद्धान्त देश-मान्य नेता प्लेखोनावसे कभी नहीं मिले।

कई बार साम्यवाद्-कानफ़रेन्सोंमे लेनिनने नकली साम्यवादियोंके मुँहपर ऐसी-ऐसी खरी बातें सुनायीं, कि सुननेवाले दङ्ग रह गये। इनकी लिखी हुई पुस्तके बड़े आदरसे पढ़ी जाने लगी। प्रधान साम्यवादी नेताओं—प्लेखोनाव, जेसुलिश तथा एकजिलरोड आदिसे इनका मत भेद बढ़ गया। लेकिन लेनिन अवस्थामे

कम होते हुए भी कभी किसीके सामने दबकर नहीं बोले। उनके सिद्धान्त अटल रहे और जब कभी उन्हे मौक़ा मिला, वे सीधी-सीधी बातें कहते रहे। रूसमे, उस समय, लेनिनकी स्पष्ट बाते सुननेवाले भी पैदा नही हुए थे। इसलिये इनके साथी भी बहुत थोड़ेही थे। तब भी बिना किसीके सहयोगके, ये अपने विचारोंका प्रचार करते रहे। बाहरके साम्यवादी विद्वानोंसे इनका पत्र-व्यवहार जारी था। उनके साथ विचारोंका परिवर्तन करके इन्होंने मार्क्स्के सिद्धान्तोंकी एक उग्र टीका तैयार की और रूसके साम्यवादियोंको आड़े हाथों लेकर खूब अच्छी तरह फटकारा; मगर तब भी उन्होंने लेनिनके सिद्धान्त स्वीकार नहीं किये।

कालेजसे निकलनेके बाद भी, इन्होंने अपना साम्यवाद-विषयक अध्ययन जारी रखा था और तरह-तरहके ग्रन्थोंको मँगाकर पढ़ते रहे थे। अमेरिकन साम्यवादियोंके ग्रन्थोंको पढ़कर इनकी समझमें यह बात भी उत्पन्न हुई, कि रूसी किसानोंके कष्ट साम्यवाद द्वारा दूर हो सकते हैं। जर्मनीके कई साम्यवादी नेता इनसे विशेष स्नेह रखने लगे थे। पत्रों द्वारा ये अपने विचार उनके पास भेजते थे और वे लोग अपने परामर्श इनके पास भेजा करते थे। रूसमें श्रमजीवियोंकी ओरसे कुछ ऐसीही संस्थाएँ क़ायम हो चली थीं। इन सभाओंमें भी लेनिन भाग लेने लगे। कालेजसे निकलनेके एक वर्षके पश्चात् ही इन्होंने साम्यवादी सभाओंमे इतने जोशके साथ भाग लिया, कि, १८९० में एक अपराधमे इन्हें छ मासकी सज़ा दे दी गयी!

साइबेरियामें इन्होंने साम्यवादपर कई उत्तम पुस्तकें लिखीं। लेनिनकी पुस्तकें साम्यवादी क्रान्तिका उपदेश देती थीं। वह ज़माना रूसके लिये अराजकतामय था। स्थान-स्थानपर क्रान्तिकारी दल जन्म ले रहे थे। अराजकताका समुद्र लहरें मार रहा था। रह-रह कर तूफ़ान आते थे। बिजलियाँ कड़कती थी। कौंधे लपकते थे। ज़ार-शाहीके ज़ोर-जुल्मसे हाहाकार मच रहा था। संदेह मात्रपर माईके लाल आजन्म कालेपानीका दण्ड भोगनेके लिये साइबेरियाकी जेलोंमे ठूँस दिये जाते थे। न जाने कितने निर्दोष और निरपराध युवक सर्दीके मारे ठिठुर कर साइबेरियामे मर गये; सैकड़ों रूसी नवयुवक जेलोंमे जान-बूझ कर भूखों तड़पा कर मार डाले गये। बीसियों राजनीतिक क़ैदी नदियोंमें डुबाकर मार डाले गये। रिपोर्टें प्रकाशित कर दी गयीं, कि अमुक क़ैदी अमुक रोगसे पीड़ित होकर मर गया। कोई पूछने वाला नहीं था। ज़ारके नामसे प्रजा कम्पित रहती थी। कई बार खुली बग़ावतें हुईं। ज़ारकी अत्याचारी सेनाओंने गोलियाँ चलाकर शान्ति स्थापित की। अराजक नेताओंको लालटेनके खम्भोंमें टाँगकर फाँसी दी गयी और जनताको लेक्चरों द्वारा समझाया गया, कि ज़ारके विरुद्ध आन्दोलन करनेवालोंकी यही दशा की जायेगी!

लेकिन क्या दमनके द्वारा प्रजाके भाव दबाये जा सकते थे? क्या अत्याचारोंके भयसे जनता सन्तुष्ट हो सकती थी? ज़ारने ज्यों-ज्यों दमन किया, त्यों-त्यों जनता अराजकताकी ओर बढ़ती गयी। छूटनेके बाद लेनिनने पेट्रोग्राडमें रहकर दो समाचार-पत्र निकाले।

इन्हीं भयानक दिनोंमें लेनिन अराजकोंका संगठन करते रहे। इसी बीचमे इन्होंने, जर्मनी, आस्ट्रिया, फ्रान्स आदि देशोंमे भ्रमण किया और अन्तर्राष्ट्रीय कूट-नीतिका अध्ययन किया। कई बार लेनिनने जर्मन-सम्राट्की कूटनीतिका भेद समझनेके लिये जर्मन गुप्त-दूतोंका पीछा किया। फ्रान्समे जाकर फ्रेञ्च-राजनीतिज्ञों-के गुप्त भेदोंका ज्ञान प्राप्त किया। इङ्गलैंडके सर एडवर्ड ग्रेट, लार्ड मारले आदि आदि दिग्गज कूट-नीतिज्ञोंकी धूर्त्तता समझनेकी चेष्टा की। लेनिनको साइकिलपर चढ़नेका बड़ा अच्छा अभ्यास हो गया था। ये एक एक दिनमें ७०-७२ मीलतक साइकिलपर सफ़र कर लेते थे!

१९०३ में रूसके भीतर प्रत्यक्ष रूपसे साम्यवादी दलका काम आरम्भ हो गया। एक बड़ी भारी साम्यवादी कानफरेन्स हुई, जिसमें साम्यवादियोंके दो दल हो गये। एक "बोल्शेविकी" (बहुमत), दूसरा "मेन्शेविकी" (लघुमत) इस टूटा-फूटीका असर अच्छा पड़ा। दोनों दल अपनी-अपनी प्रभाव-वृद्धिके लिये ज़ोर-शोरसे प्रचार-कार्य करने लगे। दूसरी तरफ सोवियट-सभाएँ (राष्ट्रीय सभाएँ) भी क़ायम हुईं और अन्तमें २२ जन-वरी १९०५ में जनताका एक बहुत बड़ा समूह, जिसमे स्त्री-बच्चे भी शामिल थे, ज़ारके महलके सामने गया और शासन-सुधारोंकी माँग पेश की। इस समूहको देखकर ज़ारने अपना घोर अपमान समझा और फ़ौरन "कोसक" नामक भयङ्कर सैनिकोंको हुक्म दिया, कि इन सुधार-भिखारियोंको गोली मारकर तितर-बितर कर

दो ! कोसक-सैनिकोंने भयङ्कर गोलाबारी करके सैकड़ों प्रजा-जनोंके प्राण ले लिये और बीसियों लाशे घसीट-घसीट कर नदीमे फेंकवा दी गयीं। इस भयङ्कर हत्याकाण्डका समाचार सुन कर रूसी जनता उत्तेजित हो उठी। ज़ारने फिर दमन-नीतिसे काम लिया। रूसके बड़े-बड़े नेता गिरफ्तार किये गये और फिर जेल भेज दिये गये। १९०५मे लेनिन फिर गिरफ्तार करके साइबेरिया-मे आजन्म क़ैदी बनाकर रखे गये; किन्तु भाग निकले और स्वीटज़रलैण्ड चले चले गये।

लेकिन प्रजामें घोर असन्तोष बढ़ते देखकर ज़ारके प्रधान मन्त्री पी० ए० स्टोलियनने ज़ारके परामर्शसे अगस्त १९०५ मे सुधारोंकी घोषणा की और जनताके प्रतिनिधियोंकी "ड्यूमा" नामक व्यवस्थापिका सभा क़ायम करके जनताको धोखा दिया ; क्योंकि, ज़ारको यह पूर्ण अधिकार दिया गया था, कि वे जब चाहे ड्यूमा-की राय मानें या न मानें, अथवा ड्यूमाको तोड़ दे।

जिस समय रूसको ये सुधार दिये गये थे, उसी समय लेनिन-ने अपने एक मित्रको लिख भेजा था, कि इन सुधारोंके भीतर बड़ा भारी धोखा है। लेकिन इन सुधारोंके असफल होते ही क्रान्तिकारी-दलकी वृद्धि होगी। वैसा ही हुआ। १९०५ में ज़ारने ड्यूमाको अपने विशेष अधिकारसे तोड़ दिया ! नरम-दल-के लोग जो नये सुधारोंपर नाच रहे थे, अपनासा मुँह लेकर रह गये। फिर आन्दोलन उठा ; लेकिन अब क्रान्तिकारी दलने गुप्त-समितियों द्वारा किसानों और मज़दूरोंमे अराजकताका विषैला

बीज बोना शुरू कर दिया था। ट्राट्स्की आदि इन दिनोंमें साइबेरियाके जेलखानेमें पड़े हुए सड़ रहे थे। लेकिन तब भी साम्यवादी-क्रान्तिकारियोंकी कमी नहीं थी। हज़ारों युवक और युवतियोंके दल वेश बदल-बदल कर रातके समय देहातोंमें जाकर क्रान्तिका उपदेश और प्रचार करते फिरते थे। इस आन्दोलनमें भी लेनिनकी बिजली काम कर रही थी।

१९१३में फिर उत्पात हुआ और ज़ारने फिर दमन द्वारा सुधारकोंको दबा दिया। १९१४में यूरोपीय महाभारत आरम्भ हो गया; इसलिये ज़ारने दमन-नीतिको ढीला कर दिया। लेकिन तब भी, यदि उस समय लेनिन रूसमें होते, तो फांसीपर लटका दिये जाते।

१९१७में जब क्रान्ति घटित हो गयी और समस्त राजनीतिक अपराधी स्वाधीनता-पूर्वक रूसमें पहुँच गये, तब जर्मनी तथा स्वीटज़रलैण्डके रूसी क्रान्तिकारियोंने क़ैसरसे यह आज्ञा प्राप्त की, कि एक स्पेशल ट्रेन द्वारा रूसी क्रान्तिकारी रूस भेज दिये जायें!

इसी ट्रेनपर चढ़कर लेनिन भी रूस पहुँचे थे।
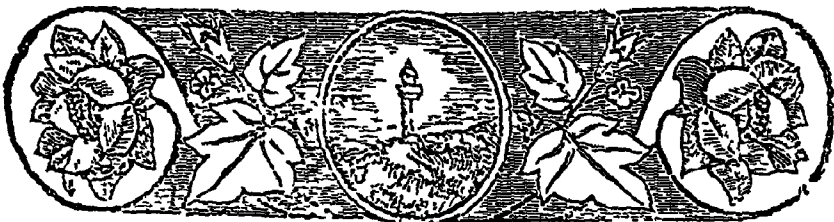
भयंकर भावुक

"If Socialism can only be realised when the intellectual development of all the people permits it, then we shall not see Socialism for at least five hundred years!" —Lenin

दुःखी संसारके बढ़ते हुए कष्टोंको दूर करनेके लिये जिन महापुरुषोंने यथेष्ट सोच-विचार किया है और अपने जीवनको सेवाकी पवित्र वेदीपर भेंट चढ़ा कर यथाशक्ति प्रयत्न किया है, उन्हींमेंसे एक लेनिन भी थे।

समाज-व्यवस्था और शासन-संगठनकी उस तिथिसे, जो इतिहासोंमे प्राप्त है, आजतक संसारके कष्ट बढ़ते आये हैं। निर्बलों और सबलोंकी लड़ाई एवं कुलीनों और दलितोंके संग्रामका अनन्त इतिहास बतलाता है, कि अज्ञानता और जड़ता-वश संसार एक स्थायी समर-क्षेत्र बना रहा है और मनुष्यके स्वार्थोंके इस संघर्षणने सदा समर-भूमिको जाग्रत रखा है।

विचारवान् पुरुषोंने कहा है, कि इस अनन्त संग्राममे, सदा

एक पक्ष निर्बल और दूसरा पक्ष सबल बना रहा है। फलतः संग्रामके साथ-साथ व्यावहारिक समझौते भी होते आये हैं और उन सन्धियों द्वारा ही समाज-व्यवस्था अथवा शासन-संगठन अर्थात् 'सरकार' नामक संस्थाको जन्म मिला है। इस व्यवस्था और इस सरकारकी स्थापनाका मुख्य तात्पर्य यह बतलाया जाता है, कि दो लड़नेवाले पक्षोंकी लड़ाईको रोकने और समाजके अस्तित्वको कायम रखनेकी आवश्यकता समझी गयी थी, लेकिन इन तरह तरह-की व्यवस्थाओं और भाँति-भाँतिकी सरकारोंके संगठनके बाद भी संग्राम जारी रहा। कुलीनोंने ही सामाजिक व्यवस्थापर अपना प्रभुत्व क़ायम रखा। बलवानोंने ही शासन-संगठनपर अपना प्रभाव स्थापित किया। इस प्रकार निर्बलोंपर अत्याचार जारी रहा और दलितोंको समाजमे कभी आदर या सम्मान्य पद नहीं मिला। जिनके हाथोंमे शासन रहा, उन्हींको समाजमें भी उच्च पद प्राप्त होते रहे। पारस्परिक कलहके कारण, बलवानोंकी शक्ति बढ़ी और संसारमें स्वार्थोंके साधन भी बढ़े। पूँजीवाद फैला। साम्राज्य-वाद फैला। व्यापारियोंने जन्म लिया। ज़मीदारोंने जन्म लिया और साहूकारोंने जन्म लिया। ये सब फिरके उन्हीं बलवान् शासकोंमें से निकले थे और आजतक उन्हींकी सहायता करते आये हैं। सबलोंने कड़े-कड़े कानून बनाकर, निर्बलोंको लूटा, उनसे परिश्रम कराया और स्वयं माला-माल बने। अपनी स्वार्थ-पूर्त्तिके लिये, ग़रीबोंके सिर कटाये और स्वयं विजयके भागी बने। मतलब यह, कि इस संग्रामके जारी

रहनेसे, स्वार्थोंके साधन भी बढ़े। सेनाएँ इसलिये बनायी गयीं, कि निर्बल उचकने न पायें और सबल लोग पाशविक शक्ति द्वारा दूसरे-की सम्पत्ति, भूमि और सत्ताका अपहरण कर सकें। अस्त्र-शस्त्र इस लिये बनाये गये, कि कोई उनके विरुद्ध एकता स्थापित करके विद्रोह न खड़ा कर सके। बैंक इस लिये क़ायम हुए, कि ग़रीब लोग सदा वशमें रहें और ऋणके बोझसे दबे रहे।

'सरकार' नामक संस्थाके इस दुरुपयोगपर खिन्न होकर दलित श्रमजीवियोंने अनेक देशोंमें, अनेक बार क्रान्तियाँ कीं। समर-भूमिमे आहुतियाँ चढ़ायीं। परिणाममें समझौते हुए, सन्धियाँ हुईं। एक सरकारके स्थानमें दूसरी सरकार क़ायम हुई। पहले सिर्फ जमींदारोंके हाथमे शासन था, तो बादमे, व्यापारियों और पढ़े-लिखे उदार पूँजीवादियोंको भी शामिल कर लिया गया। लेकिन ये थे तो एक ही थैलीके चट्टे-बट्टे। किसी-न-किसी रूपमें, निर्बलोंके ही सिर बीतती रही। धीरे-धीरे उन्हे भरपेट अन्न, मोटा-झोटा कपड़ा तथा रहनेके लिये क़ाफी ज़मीन तक न मिल-सकनेकी नौबत आ पहुँची। मिलों और कारख़ानोंमें काम करना पड़ा, वहाँ भी उनके परिश्रमका सारा मुनाफ़ा सबल लूट ले जाते थे। खेतोंमें भी काम करना पड़ा; मगर ज़मींदार और सरकार अन्नका एक-एक दाना उठा ले जाती थी। घोर परिश्रम करनेपर भी, उन्हें भर-पेट अनाज नसीब नहीं हुआ और आज भी वे इसी कष्टमें हैं।

कुछ देशोंमें, इस विषम अवस्थासे व्याकुल होकर, सार्वजनिक

क्रान्तियाँ हुईं। नियन्त्रित राज-सत्ता कायम हुई, वैध प्रजातन्त्र क़ायम हुआ, प्रतिनिधि-शासन रचा गया; मगर सबल और निर्बल दोनों ही इन शासनोंमे शामिल हुए! फल वही हुआ। पढ़े-लिखे सबल पूँजी-वादियोंने कोई ऐसी व्यवस्था स्थापित न होने दी, कि जिससे संसारकी विषमता दूर हो सकती या कष्ट मिटाये जा सकते।

इस कड़वे अनुभवने श्रमजीवियोंकी आँखें खोल दीं। उन्होंने प्रत्यक्ष देखा, कि संसारमे हमारी अधिक संख्या होनेपर भी कुछ पूँजीवादी और पढ़े-लिखे सत्ताभिलाषी लोग हमारा सुख, हमारी सम्पत्ति, हमारी शान्ति, सब कुछ अपहरण किये हुए है। बड़े सोच-विचारके बाद "अराजकता"का सिद्धान्त निकाला गया—अर्थात् 'सरकार' नामक संस्था ही मिटा दी जाये; क्योंकि इसी "सरकार" की ओटमे रहकर पूँजीवादी लोग शिकार खेलते है। कई देशोंके श्रमजीवियोंने अराजकतापर भी कमर कसी; मगर परिणाम यह हुआ, कि पहले धीरे-धीरे लूटे जा रहे थे, शनैः-शनैः निचोड़े जा रहे थे, तो अराजकता फैलनेपर पूँजीवादी सबलोंने उन्हे एकबारगी डाकुओंकी तरह दौड़कर लूट लिया; मार-काट मचा दी; तबाह कर डाला, रोटी मिलनेके साधन तक नहीं रखे। बड़ी गड़बड़ी फैली। नुकसान निर्बलोंका ही हुआ। झख मार कर फिर किसी-न-किसी रूपमे 'सरकार' कायम करनी पड़ीं।

अठारहवीं शताब्दीके आरम्भ तक यह सब होता रहा; लेकिन संसारकी विषमता दूर नहीं हुई—समाजका विषाद नहीं मिट

सका। पूँजीवादकी बीमारी बुरी तरह पीछे पड़ गयी। छुटकारा मिलना असम्भव हो गया। तब कुछ समझदारोंने "साम्यवाद"का सिद्धान्त निकाला। इस साम्यवादकी तरह-तरहकी टीकाएँ निकलीं। रूसोने कुछ कहा, मार्क्सने कुछ और कहा। वेण्डरवीलने कुछ और सुनाया। बर्नस्टैन कुछ और बोले। सारेलने सबसे भिन्न होकर निराले उपाय बतलाये। अपने-अपने देशोंकी स्थितिके अनुसार—इन व्यवस्था-दाताओंने साम्यवादके भेद किये। किसीने कहा, कि समस्त श्रमजीवी एक होकर हड़ताल कर दें और पूँजीवादियोंपर सत्ता क़ायम करें, किसीने कहा, कि देश-भरकी समस्त सम्पत्ति नागरिकोंमे समान अंशोंमे बाँट दी जाये। किसीने कहा, कि गाँव-गाँवमे गोष्ठियाँ क़ायम करके, एक दूसरेकी ज़रूरतोंका निश्चय करके, वस्तु-विभाजनकी प्रणाली स्थापित की जाये। मगर व्यावहारिक रूप किसीने भी नहीं दिखलाया। अठारहवीं शताब्दी-भर इन तरह-तरहके साम्यवादियोंकी कानफ़रेन्से होती रहीं; परन्तु फल कुछ भी नहीं निकला।

लेनिनके रूपमें, श्रमजीवियोंके ईश्वरका अवतार हुआ। इन्होंने संसार-भरके साम्यवादिकोंके उपायोंपर विचार किया; बहसें कीं और अपने सिद्धान्त निश्चित किये। कुछ दूरतक ये मार्क्सके साम्यवादी सिद्धान्तोंपर चले; तत्पश्चात् अपने स्वतन्त्र उपाय स्थापित किये।

लेनिनका कहना था, कि सरकार एक ग़ैर-क़ानूनी संस्था है। पूँजीवादी एक जरायमपेशा जत्था है। श्रमजीवियोंको चाहिये,

कि इन दोनोंसे मुक्ति पानेके लिये एकता करके सशस्त्र क्रान्ति करें और शासनपर अपना अधिकार कर ले। फ्रान्स या अमेरिका-की तरह सार्वजनिक प्रतिनिधि-व्यवस्थाका अनुसरण न करके केवल श्रमजीवियोंको ही वोट देनेका अधिकार दें और तब अपनी विशुद्ध निरंकुश श्रमजीवी-सरकार क़ायम करें। लेनिनके इस सिद्धान्त (Dictatorship of Proletariat) अर्थात् श्रम-जीवियोंकी एकतन्त्र सत्तापर संसार-भरके राजनीतिज्ञोंने आक्षेप किया और कहा कि, पूँजीवादियों, व्यापारियों, ज़मींदारों और मिल-मालिकोंको भी सरकारके संगठनमें वोट देनेका अधिकार देना चाहिये ; मगर लेनिनने जवाब दिया, कि श्रमजीवी सरकार इन पूँजीवादियोंके अस्तित्वको ही नहीं मान सकती। फलतः लेनिनने ज़मींदारोंकी ज़मीनें छीनने, रईसोंकी रियासतें छीनने, बैंकोंपर राष्ट्रीय अधिकार करने तथा मकानोंपर सार्वजनिक कब्ज़ा कर लेनेके सिद्धान्त निकाले। इस प्रकार अमीरोंको अन्य श्रमजीवियोंकी तरह निर्धन बनाकर, परिश्रमकी रोटियाँ खानेका आदेश दिया। ज़ब्त की हुई ज़मीनें, खेत, मकान, मिलें, खानें, रेलें आदि-आदि श्रमजीवियोंकी प्रतिनिधि-सभाओंके हाथमें सौंपने-का नियम बनाया।

लेनिनका कहना है, कि इस प्रकार कुछ वर्षोंमें प्रत्येक नागरिक श्रमजीवी-समुदायमें शामिल हो जायेगा। जबतक श्रम नहीं करेगा, तबतक उसे रोटियाँ नहीं मिलेंगी, रहनेको मकान नहीं मिलेगा और वोट देनेका अधिकार नहीं मिलेगा। जब वह श्रम-

जीवी बन जायेगा, तब उसे उसके कुटुम्बके पालन-पोषणके योग्य-ज़मीन आदि मिल जायेगी। इससे अधिक किसीको कुछ नहीं दिया जायेगा। जब सबको यह अनुभव हो जायेगा, कि श्रम करके ही हम अन्न और आवास पा सकते हैं और इससे अधिकके हम कभी अधिकारी नहीं हो सकते, तब पूँजीवाद तथा साम्राज्य-वाद मिट जायेगा और सच्चा साम्यवाद स्थापित हो जायेगा।
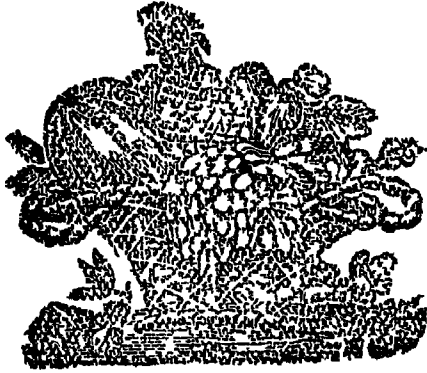
लियन ट्राट्स्की

लियन ट्राट्स्की उन रूसी नवयुवकोंमेंसे है, जिन्होंने अपना सर्वस्व देशकी स्वाधीनताके नामपर अर्पित कर दिया था। १८९३ से ये राजनीतिक आन्दोलनमें काम कर रहे हैं। इन्होंने ज़ार अलेक्ज़ेण्डर तृतीयको गद्दीसे उतरते देखा; ज़ार निकोलसको गद्दीपर बैठते देखा; इन्होंने किसानोंकी क्रान्ति देखी; मज़दूरोंका असन्तोष देखा और पूँजीवादियोंके हथकण्डे देखे।

१९०५ मे ये सोवियटके (मज़दूर-सैनिक-सभाके) सभापति थे। "सोवियट" के अर्थ सभाके हैं; लेकिन रूसमे सोवियट शब्द केवल मज़दूरों और सैनिकोंके प्रतिनिधि-मण्डलको कहते थे। राज्यक्रान्तिके बाद इसके अर्थमें परिवर्त्तन हुआ। आगे चलकर हम 'सोवियट' शब्दकी विशद परिभाषा देंगे।

जिस प्रकार हिन्दुस्तानमें कांग्रेस अर्थात् राष्ट्रीय महासभा है, उस प्रकारकी रूसमे कोई सभा नहीं थी। अलग-अलग दल-बन्दियाँ क़ायम थीं। सार्वजनिक संस्था एक भी नहीं थी। अमीर लोगोंकी अलग सभा थी, ज़मींदारोंकी अलग खिचड़ी पकती थी। लेकिन इन सब सभाओंकी अपेक्षा मज़दूरों और

सैनिकोंकी यह संयुक्त सभा अर्थात् सोवियट सबसे बड़ी प्रभावशाली सभा था। इसका उद्देश्य आरम्भमे प्रजातन्त्रकी स्थापना करना था; लेकिन किसान-सभाओंमें शामिल हो जानेके बाद सोवियटका उद्देश्य साम्यवादी प्रजातन्त्र या पञ्चायती राज्य हो गया। मतलब यह, कि यदि रूसमें, बहुसंख्यक ग़रीब जनताकी कोई प्रातिनिधिक संस्था थी, तो वह सोवियट थी।

लियन ट्राट्स्की मज़दूरों और सैनिकोंके प्रसिद्ध नेता थे। इनकी भाषण-शक्ति आश्चर्य-जनक थी, सभाओंका संगठन करना और ज़ोर-शोरके साथ चला देना इनके बायें हाथका खेल था। इसी लिये थोड़ी ही अवस्थामें इनकी धाक मज़दूरों और सैनिकोंपर जम गयी। १९०५के सालमें लेनिनके साथ इनका घोर मत भेद था। लेनिनका कहना था, कि क्रान्ति किसानोंसे आरम्भ होगी; लेकिन ट्राट्स्कीका कथन था, कि क्रान्तिका सञ्चालन मज़दूर और सैनिक करेंगे। राज्यक्रान्तिका इतिहास पढ़नेवाले आगे चल कर देखेंगे, कि दोनोंकी ही बातें सच निकलीं। पहले ट्राट्स्की "स्वतंत्र मेन्शेविकी दल" के नेता थे; लेकिन बादमें १९१३ के आस-पास ये बोल्शेविकोंसे आ मिले और इनके आ मिलनेसे ही बोल्शेविक दलका संगठन इतना मज़बूत हो गया, कि १९१७में बोल्शेविकोंने करेन्स्कीकी सरकार उखाड़ कर फेक दी।

१९०५ में एक राजनीतिक अपराधमें फँसकर ज़ारके मन्त्रियोंने इन्हें आजन्म कालेपानीकी सज़ा दे दी। कई वर्षतक साइबेरियाकी भयङ्कर जेलमें क़ैद रहे; लेकिन ये जेलमें रहनेवाले जीव न थे

पाठकोंने यूरोपीय महायुद्धके समय पढ़ा होगा, कि हरएक देशमें कुछ अन्तर्राष्ट्रीय गुप्त दूत रहा करते थे। ये गुप्त दूत बड़े चलते-पुरजे होते थे। दूसरे देशोंकी सरकारोंके भीतरी रहस्य जाननेके लिये ये लोग तरह-तरहके वेश बना कर अपना काम निकालते थे। जर्मन सम्राट् कैसरके पास ऐसे चतुर गुप्त दूत बहुत बड़ी संख्यामें थे। आन्दोलन-कार्यके समय ऐसे गुप्त दूतोंसे ट्राट्स्कीने भी कुछ कूट-विद्या सीख ली थी। साइबेरियामें वह विद्या काम आ गयी। एक दिन रातके समय, वेश बदल कर पहरेदारोंको चकमा देकर ट्राट्स्की भाग निकले। वेश बदले हुएही ये मास्को आये। यहाँपर छिपकर ये कई सप्ताह तक अपना काम करते रहे। इनका पता सरकारी पुलिसको लग गया; परन्तु एक मित्रने इन्हें सूचना दी, कि रूस छोड़ दो। सूचना मिलनेके पाँच मिनटके भीतर ट्राट्स्की आस्ट्रियाकी तरफ चल दिये। यदि आध घण्टेकी भी और देर हो जाती, तो पुलिस इनको गिरफ्तार कर लेती और 'कम-से-कम' इन्हें फाँसीकी सज़ा तो देही दी जाती!

आस्ट्रिया पहुँचकर इन्होंने एक अख़बारके दफ्तरमें उपसम्पादकी कर ली। युद्ध छिड़ते ही फिर उसी मित्रने इन्हे समाचार दिया, कि आस्ट्रिया भी छोड़ दो। फौरन ट्राट्स्की बिना किसी दूसरे सम्पादकसे कहे-सुने स्वीटज़रलैण्डका रास्ता नापते नज़र आये। स्वीटज़रलैण्डमें इनकी मुलाकात लेनिनसे हुई और कुछ दिनों तक खूब वार्तालाप होता रहा। यहींपर, ट्राट्स्कीने लेनिनके सिद्धान्तोंको हृदयसे स्वीकार किया।

युद्ध तो छिड़ा ही हुआ था, इसलिये ट्राट्स्कीने अमेरिका जानेकी ठानी। अमेरिका पहुँचनेपर उन्हे मालूम हुआ, कि इङ्गलैण्डने अमेरिकाको युद्धमें निमन्त्रण देनेके लिये लार्ड रीडिंगको भेजा है। ट्राट्स्कीने लार्ड रीडिंगके हथकण्डोंको देखनेके लिये इनका पीछा किया। अमेरिकन साम्यवादी पत्र "नोवी मीर" (रूसी भाषाका पत्र) अमेरिकाके युद्धमे शामिल होनेसे रोकता रहा; लेकिन अमेरिकाके प्रेसिडेण्ट विल्सन धोखा खा गये; लार्ड रीडिंगके हत्थेपर चढ़कर अमेरिकन सीनेटने युद्धकी स्वीकृति दे दी।

ट्राट्स्की "नोवी मीर" पत्रमें दो वर्षतक सम्पादकीय विभागमें काम करते रहे।

१९१७ मे ज़ारके सिंहासन-त्यागका समाचार पाकर ये रूस लौटनेकी तैयारी करने लगे। लेकिन ये कनाडा होकर जाना चाहते थे। कनाडा-सरकारने इन्हे जर्मन गुप्तचर समझ कर गिरफ्तार कर लिया; पर ये भी बड़े चतुर थे। इन्होंने झट रूसी प्रजातन्त्रके परराष्ट्र-मंत्री मि० मिल्यूकाफको तार दिया, कि मैं जर्मन गुप्तचर समझ कर गिरफ्तार कर लिया गया हूँ। मिल्यूकाफने कनाडा-सरकारको तार दिया, कि मि० ट्राट्स्की रूसके देश-भक्त नेता है, उन्हे छोड़ दो। इस प्रमाणके आतेही इनका छुटकारा हो गया।

शीघ्र ही ये रूस पहुँच गये और फिर मज़दूर-सैनिक-सभाके नेता बन गये। इसके आगेका हाल अगले पृष्ठोंमें पढ़िये।

बोल्शेविक नेतागण

रूसके समाज-सत्तावादी श्रमजीवियोंके दलके कई टुकड़े थे। इन समस्त विभागोंमें भिन्न-भिन्न विचारोंके नेता थे। लेकिन बोल्शेविक सरकारकी स्थापनाके समय कई उप-पक्षोंने एका करके बोल्शेविकोंके सिद्धान्त मान लिये। अतः उन सब दलोंके नेताओंको भी हम बोल्शेविक नेता ही कहेंगे।

(१) ज़िनोवीव—लेनिनके परम मित्रोंमेंसे एक ज़िनोवीव थे। इन्होंने भी रूसके साम्यवादी आन्दोलनमें निरन्तर भाग लिया था। लेनिनके साथ ही इन्हें भी १९०६ मे ज़ारकी सरकारने साइबेरियामें क़ैद कर दिया था। क़ैदसे छूटनेके बाद ये गुप्त प्रचारका कार्य करते रहे और ऊपरसे सोवियट-संगठनको बढ़ाते रहे। करेन्स्कीकी सरकारके विरोधमें इन्होंने विका आन्दोलन उठाया था। अतः जुलाई १९१७ में ये फिर जेल भेजे गये; किन्तु अन्य बोल्शेविकोंके साथ इनका भी छुटकारा हुआ। बोल्शेविक सरकारकी स्थापनाके समय इनका लेनिनसे मत-भेद हो गया। ये नरम साम्यवादियोंको भी मन्त्रि-मण्डलमे रखना चाहते थे। लेनिनके मुकाबिलेमे, कार्य-कारिणी सोवियटके अन्दर इनकी बात

रद्द हो गयी। इसपर क्रुद्ध होकर इन्होंने बोल्शेविक-पार्टीसे भी इस्तीफा दे दिया। इसपर पेट्रोग्राडकी नगर-सोवियटने इन्हे सभापतिके पदपरसे हटा दिया। उस समय, सारी मित्रता भुला-कर, लेनिनने अपने "प्रवडा" अखबारमे लिखा था :—

"Remember, Comrades, that two of these deserters Kamemev and Zinoviev, even before the uprising in Petrograd, appeared as deserters and strike-breakers, by voting at the decisive meeting of the Central Committee !

"Shame upon those who are of little faith, who hesitate, whe doubt···"

अपने घनिष्ट मित्रको भी लेनिनने इस तरह फटकारा था। बादको ज़िनोवीव फिर बोल्शोविक पार्टीमे शामिल हो गये।

(२) केमीनीव—केमीनीव बोल्शेविक पार्टीमें बहुत गम्भीर और विद्वान् नेता माने जाते हैं। १९१७ के नवम्बरमे ये अखिल रूसी श्रमजीवी-सैनिक सोवियटके सभापति थे। लेकिन इन्होंने भी कार्य-कारिणी कमेटीमे लेनिनका विरोध किया था, जिसके कारण इनको सोवियट कार्य-कारिणीके सभापतित्वसे इस्तीफ दे देना पड़ा। १९१८ में ये फिर बोल्शेविक पार्टीमे आ मिले।

(३) रायकाफ—मास्कोकी बोल्शोविक पार्टीके ये प्रधान नेता थे। बोल्शेविक सरकारके संगठनपर,ये अन्तर्देशीय मंत्री (Home-Minister) चुने गये थे। बादमें इन्होंने भी नरम साम्यवादियोंको

शामिल करने तथा पूँजीवादियोंके अखबार बन्द न करनेका पक्ष लिया। कार्य-कारिणीमे हार जानेसे इन्होंने भी मंत्रि-पदसे इस्तीफा दे दिया था; मगर आजकल (लेनिनकी मृत्युके पश्चात् यही रायकाफ रूसके प्रधान मंत्री (President of Peoples Commissars) हैं।

(४) नोगिन—यह भी मास्कोके प्रधान बोल्शेविक नेता थे। बोल्शेविक मंत्रि-मण्डलमे उन्हे व्यापार-मंत्रीका पद दिया गया था। इन्होंने उपर्युक्त कारणोंसे मंत्रि-मण्डलसे इस्तीफा दे दिया था। इनकी भाषण-शक्ति अच्छी है। इस समय ये फिर बोल्शेविक पार्टीमें मिल गये है।

(५) पोवस्की—नवम्बरकी बोल्शेविक क्रान्तिके समय ये क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीके सभापति थे। उन १० दिनोंमें इन्होंने दिन-रात परिश्रम करके पेट्रोग्राडकी समस्त विद्रोही सेनाओंको परास्त किया और बोल्शेविक सत्ताको स्थापित किया। इनमें सेना संगठित करनेकी अद्भुत शक्ति है। इन्होंनेही अपनी बुद्धिसे करेन्स्कीकी समर्थक सेनाओंको तोड़कर अपनी तरफ मिला लिया था।

(६) बुखारिन—ये बोल्शेविक पार्टीके सबसे उग्र नेताओंमेंसे हैं। इन्होंने क्रन्तिके समय मास्कोकी सोवियटका काम बड़े अच्छे ढंगसे संचालित किया और करेन्स्कीके समर्थक सैनिकोंपर भयंकर गोला-बारी कराके उन्हे परास्त किया था।

(७) शिशेरिन—क्रान्तिके समय इनका नाम कहीं नहीं सुनाई पड़ा था। सम्भवतः उस समय ये क़ैद थे। १९२० मे ये बोल्शे-

विक सरकारके पर-राष्ट्र विभागमें नियुक्त हुए। जिनेवा-कान्फरेन्स-में जाकर इन्होंने लायड जार्जके दाँत खट्टे कर दिये, जर्मनोंसे अलग सन्धि स्थापित करके कान्फरेन्सको एक सीमा तक भंग कर दिया। उसी समयसे संसारमें इनका नाम फैल गया। आजकल ये बोल्शेविक मंत्रि-मण्डलमें प्रचार-कार्यके प्रधान प्रबन्धक हैं।

(८) श्रीमती कोलण्टाय—ये आरम्भसेही बोल्शेविक सम्प्रदाय-की सदस्या थीं। करेन्स्कीकी सरकारने १९१७ के जुलाई मासमें इन्हें जेल भेज दिया। बीमारीके कारण जेल-डाक्टरके परामर्शसे ये छोड़ी गयीं। इनके मकानपर करेन्स्कीने गुप्त जासूस बिठला दिये थे, तब भी ये बोल्शेविक अन्दोलनमें भाग लेती रहीं। बोल्शे-विक मन्त्रि-मण्डलमें इन्हे सार्वजनिक सहायता विभागके मन्त्रि-पदका काम दिया गया।

इन नेताओंके अतिरिक्त अविलाव, लूनाशस्की, मिलीटीन, अप्योकाव, स्टालिन, अण्टानाव आदि-आदि नेता भी हैं, जिन्होंने क्रान्तिके समय अपूर्व दृढ़ता और धीरताका परिचय दिया है। आगेके अध्यायोंमें इन नेताओंकी कार्रवाइयोंका विस्तृत रूपसे वर्णन लिखा जायेगा।

सोवियट-संगठन

१०

"The word Soviet means "Council" Under the Tsar the Imperial Council of State was called—Gosudarstvennyi soviet. Since the Revolution, however, the term Soviet has come to be associated with a certain type of parliament elected by members of working class economic organisations—the Soviet of Workers, of Soldiers, or of Peasants Deputies" —John Reed.

अन्यत्र कहीं हम लिख चुके हैं, कि रूसमे कोई ऐसी सार्वजनिक संस्था नहीं थी, जिसमे अमीर, गरीब, मजदूर, किसान, सैनिक, व्यापारी अथवा ज़मींदार एक उद्देश्यसे एकत्रित हो सकते। जिस प्रकार हमारे हिन्दुस्तानमे राष्ट्रीय महासभा अर्थात् नेशनल कांग्रेस है, उस प्रकारकी भी कोई संस्था रूसमे नही थी। अलग-अलग विचार रखनेवाले दल अपनी अलग-अलग सभाएँ स्थापित किये हुए थे। सम्भवतः यही मुख्य कारण था, कि १८६४ से १९१७ तक रूसमे भाँति-भाँतिके आन्दोलन उठे;

लेकिन वास्तविक सफलता किसी भी आन्दोलनको प्राप्त न हो सकी। ज़ार महोदय इन फिरके-बन्दियोंका लाभ उठाते रहे और जनताके स्वाधीन भावोंको मनमाने अत्याचार करके कुचलते रहे। यदि सब दल एक होकर ज़ारके निरंकुश शासनके विरुद्ध आवाज़ उठाते, तो १९०५ मेंही वास्तविक सुधार मिल जाते। लेकिन जनताके अन्दर तरह-तरहके राजनीतिक दल बने हुए थे और वे सब मिलकर काम करनेकी कल्पना तक नहीं करते थे!

इन सब दलोंमें सोवियट-पार्टी सबसे बड़ी थी। इसका स्पष्ट कारण यह था, कि इस पार्टीमें श्रमजीवी अर्थात् मिलोंके मज़दूर, जो कि देहातोंके किसान-सम्प्रदायसे आते थे, शामिल थे। साथ ही सोवियटमें वे सैनिक भी थे, जो किसानोंमेसेही सेनामें भरती किये जाते थे। मज़दूर और सैनिक दोनोंही देहाती किसानोंके बिछुड़े हुए अंग थे, अतः सोवियटमें किसानोंकाही अधिक भाग सम्मिलित था। लेकिन १९१७तक यह बात स्पष्ट नहीं थी, कि किसान भी सोवियटके पक्के अनुयायी हैं। सोवियट एक सच्ची राष्ट्रीय संस्था थी; अतएव ज़ारकी इसपर कड़ी नज़र रहा करती थी। १८८० में, निहलिस्टोंने अराजकताका आन्दोलन उठाकर सारे रूसकी आँखें खोल दी थीं। १८८१ में, रूसके उस समयके ज़ार द्वितीय अलेकज़ेण्डरने कुछ सुधार देनेकी घोषणा की,लेकिन इन सुधारोंकी घोषणामें इतना विलम्ब हो चुका था, कि निहलिस्ट धीरज न धर सके। उन्होंने रानी-सहित ज़ार द्वितीय अलेक्ज़ेण्डरकी हत्या कर डाली। मृत ज़ारके स्थानपर तृतीय अलेक्ज़ेण्डर रूसके ज़ार

हुए। इन्होंने निहलिस्टोंका खूब दमन किया। हज़ारों आदमी आजन्म कालेपानीकी सज़ा देकर साइबीरिया भेजे गये, सैकड़ों फाँसीपर चढ़ाये गये। घोर दमन जारी रहा।

इसी अवसरपर, सोवियट संगठनका प्रचार हुआ। निहलिस्टोंकी देखादेखी मज़दूरों और सैनिकोंने अपनी-अपनी सोवियटोंको दृढ़ बनाया। एक तो निहलिष्ट दल ही गुप्त रूपसे भयंकर अराजकताका प्रचार कर रहा था, दूसरी तरफ सोवियट-संगठन ज़ोर पकड़ गया। फल यह हुआ, कि अलेक्ज़ेण्डर तृतीय अयोग्य प्रमाणित हुए और गद्दीसे उतार दिये गये। यदि सोवियट-संगठन दृढ़ हो चुका होता, तो १८९४ मे ही सारे रूसमें प्रजातंत्र क़ायम हो जाता। लेकिन अभी बहुत कुछ कमी थी, जनताने प्रजातंत्रका नाम भी कम सुना था, अतः ज़ार रोमनाफ़ निकोलस २६ वर्षकी अवस्थामें गद्दीपर बैठाये गये। यह बहुत शिक्षित और उदार विचारके कहलाते थे। यूरोपके भिन्न-भिन्न देशोंकी इन्होंने सैर की थी। एक बार युवराज-अवस्थामे भारतवर्षमे भी पधारे थे। जनताने सोचा, कि यह हमारी माँगे पूरी करेंगे और योग्यता-पूर्वक शासन-कार्य चलायेंगे।

लेकिन आशा निराशामें परिणत हुई। जनतामें फिर असन्तोष फैला। दूसरी तरफ जर्मनीकी ताल-पट्टीमें आकर ज़ारने जापानके साथ युद्ध छेड़ दिया। रूस-भरमें ज़ब्रिया सैनिकोंकी भरती शुरू हो गयी। इसका परिणाम यह हुआ, कि सोवियटने ज़ोर-शोरके साथ ज़ारकी नीतिका विरोध करना आरम्भ कर दिया। युद्धमें

रूस बुरी तरह हारा। १९०४में अराजकोंने अर्थ-मंत्री वानप्लीव-की बम द्वारा हत्या कर डाली गयी। १९०५मे सोवियट तथा अन्य राजनीतिक दलोंकी बड़ो-बड़ी सभाएँ हुईं और सुधारोंकी माँग पेश हुई। ज़ारने क्रुद्ध होकर अपने महलके सामने एकत्रित सुधारके अभिलाषी जन-समूहपर गोली चलवा दी! इस भयंकर हत्याकाण्डकी निन्दा रूसके समस्त राजनीतिक दलोंने की। सोवि-यटका प्रसार इस असन्तोषके बीचमे बड़ी तेज़ीके साथ हुआ। लेकिन सोवियटके प्रधान नेता ट्राट्स्की आदि जेल भेज दिये गये। सब दल एक न हो जाये, इस डर से, अन्त मे, ज़ारने अगस्त १९०५ मे कुछ सुधार घोषित किये। इन सुधारोंमे "ड्यूमा" अर्थात् प्रजा-प्रतिनिधियोंकी कौंसिल स्थापित करनेका वचन दिया गया। लेकिन शीघ्रही १९०७ में यह ड्यूमा तोड़ दी गयी! १९१३ तक सुधारोंको छीछालेदर होती रही। तीन बार ड्यूमा बनी और तीन बार तोड़ी गयी। इस विरोध और असन्तोषका केन्द्र पेट्रोग्राड-की सेण्ट्रल सोवियट थी। इस संस्थाने ज़ारको सुखकी नींद सोने नहीं दिया। १९१५ से १९१७ तक सोवियटपर करेन्स्कीका प्रभाव रहा और इस प्रभावकी बदौलत ही करेन्स्की रूसी प्रजातंत्रके प्रधान मंत्री भी हो गये। लेकिन लेनिन और ट्राट्स्कीने रूस वापस आकर सोवियटके वार्षिक चुनावमें देहाती किसानोंके बहुसंख्यक प्रतिनिधि शामिल कर दिये और सोवियटका बहुमत अपने पक्षमें कर लिया। यह कार्रवाई बड़ी होशियारीसे की गयी।

पूँजीवाद-प्रजातन्त्र

"They (the working people) saw it was possible that even under a free Government, if it fell into the hands of other social classes (propertied class), they might still continue to starve......"

—William English Walling.

इस 'पूँजीवादी' शब्दका अर्थ धनी-सम्प्रदायसे है। पढ़े-लिखे अमीरों, व्यापारियों, वकीलों, ज़मींदारों और मिल-मालिकोंकी एक पार्टी थी, जिसे "कैडेट्स" कहते थे। अपने व्यापार और खेती-बारीके फायदेके लिये ये लोग नरम आवाज़से सुधारोंकी माँग उठाते थे। जिस प्रकार हिन्दुस्तानमें माडरेट-दलमें अधिकतर धनिक और व्यापारी सम्प्रदायके लोग शामिल हैं, उसी प्रकार कैडेट्समें अमीर लोग शामिल थे। ड्यूमामें भी इन लोगोंकी अच्छी संख्या थी। ऊपरसे ये लोग जनताके हितैषी बनते थे, लेकिन भीतरी मंशा यह रखते थे, कि रूसका शासन हमारे ही हाथोंमें रहे, जिससे हमारे अधिकारों और सम्पत्तिमें वाधा न पड़े। पहली क्रान्तिके (मार्चकी क्रान्तिके) बाद, ड्यूमाके हाथमें शासन-सूत्र

आ जानेसे पहला मन्त्रि-मंडल पूँजीवादी-दलकाही बना। असलमें यह मन्त्रि-मण्डल परिमित-राज-सत्ताका समर्थक था, इसी ग़रज़से इसने ज़ारके त्याग-पत्रमें ग्रैण्ड-ड्यूक अलेक्ज़ेंडरो विचकी रिजेन्सी (संरक्षकता) तथा युवराज अलिक्सके सिंहासन-अधिकार मान लिये थे। लेकिन, जब मज़दूरों और सैनिकोंकी कौंसिलने 'ज़ार' के नामको ही रूससे उठा देनेका आन्दोलन उठाया और मेन्शेविकी दलने भी शुद्ध प्रजातन्त्रकी माँग पेश की; तब मजबूरन् पूँजी-वादी मन्त्रि-मण्डलने ग्रैण्ड ड्यूकसे भी त्याग-पत्र लिखाया। यदि मेन्शेविकी दल और साम्यवादी-क्रान्तिकारी-दल ज़ोर न डालते, तो प्रिन्सप्लौफ और मिल्यूकाफ महोदय रूसमें इङ्गलैण्डकी भाँति परिमित राजसत्ता क़ायम करके दिखला देते।

ड्यूमा (व्यवस्थापिका सभा) में मेन्शेविकी दलके प्रतिनिधि भी अधिक थे और साथ ही मज़दूर-सैनिक दलके प्रतिनिधि भी काफ़ी थे। इसीलिये, पूँजीवादी (कैडेट्स) स्वच्छन्दता-पूर्वक शासन-कार्य न चला सके। धीरे-धीरे प्रिन्स प्लौफ, मिल्यूकाफ तथा गचकाफ आदिने मन्त्रि-मण्डलसे इस्तीफा दे दिया और इस प्रकार पाँच बार मन्त्रि-मण्डल टूटा और बना। तीसरी बार जब मोशिये करेन्स्की प्रधान मन्त्री हुए, तब वे भी पूँजी-वादियोंसे मिले रहे। करेन्स्की थे तो साम्यवादी-क्रान्तिकारी-दलके नेता, लेकिन इनकी इच्छा यह थी, कि शासन-मण्डलमें पूँजीवादी लोग भी शामिल रहें। इनको पंचायती दलका मंत्रि-मण्डल अधिक उपयोगी जान पड़ा। इसीलिये, इन्होंने अपने मंत्रि-मण्डलमें कई

पार्टियोंके नेताओंको शामिल किया, लेकिन बोल्शेविक दलका एक भी व्यक्ति मंत्रि-मण्डलमें शामिल नहीं किया। इसका कारण यह भी था, कि बोल्शेविक-दल करेन्स्कीकी पार्टी (साम्यवादी-क्रान्तिकारी-दल) को धीरे-धीरे अपनी ओर मिला रहा था। जिस दलके प्रभुत्वकी बदौलत करेन्स्की प्रधान मंत्री बनाये गये थे, उसीकी जड़में लेनिन और ट्राट्स्की दीमक लगा रहे थे!

वैसे तो करेन्स्की बड़े विचारवान् पुरुष थे, लेकिन उन्होंने जनताके विचारोंको अच्छी तरहसे समझ नहीं पाया। अथवा समझ कर भी जनताके भावोंका आदर नही किया; क्योंकि रूसके किसान और मज़दूर यह चाहते थे, कि प्रजातंत्रका संगठन साम्यवादके सिद्धान्तोंके अनुसार किया जाये और उसमेंसे ज़मींदारोंका नाम मिटा दिया जाये तथा खेतोंपर किसानोंका अधिकार कर दिया जाये। इसी प्रकार, मिलोंपर मज़दूरोंका अधिकार क़ायम किया जाये। सैनिक-दलकी यह माँग थी, कि वे अपने वोटोंसे अपने अफसर चुना करें और अपने लिये स्वयं नियम बनायें। अपनी प्रतिनिधि-सभाओं द्वारा सेनाओंका कार्य सञ्चालित करें। इन सब बातोंके अतिरिक्त देशभरके श्रमजीवी सम्प्रदायकी यह भी माँग थी, कि यूरोपीय महायुद्धसे रूस हाथ खींच ले और मित्रराष्ट्रोंकी सम्मति लिये बिना ही जर्मनी और आष्ट्रियासे सन्धि कर ले!

करेन्स्कीकी समझमें ये बातें ज़रा भी नहीं आयीं! उनका विचार था, कि धीरे-धीरे ज़मींदारोंकी सत्ता कम करके किसानोंको सुविधा पहुँचायी जाये। मिलोंके स्वत्वपर हस्तक्षेप न करके केवल

मिलोंके भीतरी प्रबन्धमें मज़दूर-कमेटियोंको थोड़ेसे अधिकार दे, उनको ठंढा कर दिया जाये !

युद्ध बन्द करनेके सम्बन्धमें, करेन्स्को यह चाहते थे, कि इङ्गलैण्डको सम्मति लेकर और भीतरी स्थितिके सुधारनेका बहाना करके मित्र-राष्ट्रोंकी स्वीकृतिके बाद जर्मनीसे उचित शर्त्तोंपर अस्थायी सन्धि की जाये। लेकिन रणक्षेत्रोंमें लड़नेवाले सिपाही बिना रसद और कपड़ेके व्याकुल थे। वक्तपर उन्हें बारूद भी नहीं पहुँच पाती थी। दूसरे, लेनिनका यह आन्दोलन रणक्षेत्रोंकी खाइयोंमें बड़े ज़ोरोंके साथ चल रहा था, कि "युद्ध शीघ्र बन्द हो।"

इन कठिनाइयोंको सम्हालनेके लिये, करेन्स्कीको पूँजी-वादी-दलको मिलाना पड़ा। पूँजीवादी-दलने अपनी ज़रूरत पूरी होती देखकर और भी पैर पसार दिये।

"The propertied classes wanted merely a political revolution, which would take the power from the Tsar and give it to them. They wanted Russia to be a constitutional Republic, like France or the United States; or a Constitutional Monarchy like England". —John Reed.

करेन्स्कीको ताल-पट्टी देकर, पूँजीवादी मंत्रियोंने "परिमित प्रजातंत्र" की स्थापनाका उपदेश दिया और क्रान्तिकारी-दलको कुचलने और मज़दूर-सैनिक-पार्टीके अखबारोंको बन्द कर देनेके लिये मजबूर किया। मेन्शेविकी दलने भी इसमें उनकी मदद की।

दलबन्दियोंका दंगल

"I will cite here the most Characteristic passage from a whole series of articles published in "*Rabotchi Put*" by Ulianov-Lenin, a state criminal, who is in hiding and whom we are trying to find......This state criminal has invited the proletariat and the Petrograd Garrison to repeat the experience of 16th & 18th of July, and insists upon the immediate necessity for an armed rising.

—Kerensky.

(Speech in the Council of Republic.)

पाठकोंको फिर एक बार स्मरण दिलाया जाता है, कि ८ मार्च सन् १९१७को जो राज्यक्रान्ति हुई थी, उसमें ज़ार को राजसिंहासनसे उतारकर ड्यूमा यानी सरकारी व्यवस्थापिका सभाके प्रजा-प्रतिनिधियोंने अपना मंत्रि-मण्डल स्थापित किया था। लेकिन इस प्रथम प्रजातन्त्रके मंत्रि-मण्डलमें अमीरों और नरमदलके-साम्यवादियोंकी अधिकता थी। ८ मार्चसे ९ नवम्बर तक रूसी

प्रजातंत्र इन्हीं नरम साम्यवादियों और अमीरोंके हाथमें रहा। इन आठ महीनोंका संक्षिप्त इतिहास पिछले अध्यायोंमें दिया जा चुका है।" पार्टियोंकी घुड़दौड़ शीर्षक अध्यायमें हमने पाठकोंकी सुविधाके लिये रूसकी समस्त पार्टियोंका संक्षिप्त परिचय तथा उनके सिद्धान्तोंका मतभेद प्रकट कर दिया है। इन आठ महीनोंतक, जबतक कि बोल्शेविकोंने ९ नवम्बरको क्रान्ति करके रूसी शासन अपने अधिकारमें नहीं कर लिया, समस्त पार्टियाँ अपना-अपना ज़ोर आजमाती रहीं।

अप्रैल और मईमें कैडेट्स (पूँजीवादी-दल) के हाथमें मंत्रि-मण्डल रहा। बादको, करेन्स्की प्रधान-मंत्री हुए। करेन्स्की एक ऐसी पार्टीके नेता थे, जिसका नाम साम्यवादी-क्रान्तिकारी (किसान-दल) था। पहली क्रान्तिके बाद रूसमें यह दल सबसे बड़ा दल था, लेकिन करेन्स्कीने समझौता करके अपने मंत्रि-मण्डलमें पूँजीवादी-दल तथा मेन्शेविकी-दलको भी शामिल कर लिया था और इन दोनों दलोंके दबावसे, किसानोंको ज़मींदारोंसे ज़मीनें छीनकर देनेका वचन भंग कर दिया था; इसलिये, करेन्स्कीकी साम्यवादी-क्रान्तिकारी-पार्टीके दो टुकड़े हो गये थे। ये दो भाग लेनिनके प्रयत्नसे हुए थे, जिसका वर्णन आगे चल कर किया जायेगा। अब किसान-दल दो भागोंमें विभाजित हो गया। करेन्स्कीके दलके लोग नरम दलके लोगोंसे समझौता करके ज़मींदारोंको ज़मीनके बदले हर्जानेकी रकम दे देनेपर राज़ी थे। लेकिन नवयुवक किसान (जिन्हें बोल्शेविकोंने भड़का रखा था),

इस बातपर राज़ी नहीं हुए और करेन्स्कीके विरोधी बन कर बोल्शेविकोंके तरफ़दार हो गये। इसका मुख्य कारण यह था, कि बोल्शेविक-दल :—

(१) सैनिकोंके लिये ...... युद्ध स्थगित कराने,

(२) किसानोंके लिये .... निःशुल्क ज़मीनें दिलाने तथा

(३) मज़दूरोंके लिये ...... मिलोंपर अधिकार कर लेने

का आन्दोलन उठाये हुए थे। इन तीन प्रलोभनोंके कारण करेन्स्कीकी पार्टी पिघलने लगी!

"घुड़दौड़" में राज-सत्तावादी, राज-भक्त तथा परिमित प्रजा-तंत्र-वादी दल पिछड़ चुके थे, अतः सितम्बर और अक्टूबरके दंगलमें दो ही दल मैदानमें रह गये। एक तो, करेन्स्कीकी साम्यवादी-क्रान्तिकारी किसान-पार्टी, जिसमें अब केवल बूढ़े किसान और नरम दलसे समझौता रखनेवाले अमीर किसान शामिल थे, दूसरा बोल्शेविक-दल था, जिसके हाथमें, रूस-भरके सैनिकों और मज़दूरोंकी सम्मिलित सभा थी और इधर करे-न्स्कीके दलसे फूटे हुए बहु-संख्यक नौजवान किसान आ मिले थे, जो इस बातपर तुले हुए थे, कि राज्यक्रान्ति तबतक सफल ही नहीं हो सकती, जबतक ज़मींदारोंकी ज़मीनें ज़ब्त न कर ली जायें और किसानोंमें न बाँट दी जायें! इनके सिवा, बोल्शेविकोंकी तरफ़ "स्वतंत्र लोक सत्तावादी-दल" भी था, जो कि मेन्शेविकी-दलका शत्रु था और मैक्सिम गारकीका अनुयायी था। इस प्रकार करेन्स्की और लेनिनके पक्षमें निम्नलिखित दल मदद पहुँचा रहे थे :—

करेन्स्कीके सहायक—

(१) साम्यवादी-क्रान्तिकारी किसानोंका समझौता चाहने वाला दल।

(२) मेन्शेविकी-दल।

(३) पूँजीवादी दल।

(४) ज़मींदार-दल।

(५) नरम साम्यवादी दल।

लेनिनके सहायक—

(१) साम्यवादी क्रान्तिकारी नवयुवक किसानोंका कट्टर दल।

(२) बोल्शेविक दल।

(३) सैनिक-दल }
(४) मज़दूर-दल } "मज़दूर-सैनिक-दल"।

(५) स्वतन्त्र लोक-सत्तावादी-दल।

इस प्रकार तीन-तीन चार-चार पार्टियोंके गोल बन गये थे, और करेन्स्कीके मंत्रि-मण्डलको क़ायम रखकर युद्ध भी जारी रखना चाहते थे और किसानोंको भूमि नहीं दिया चाहते थे। दूसरी तरफ, बोल्शेविकोंने प्रचारकोंको भेजकर गाँव-गाँवमें करेन्स्कीके मंत्रि-मण्डलकी धूर्त्तता प्रकट करना आरम्भ कर दिया था। दूसरी तरफ रण-क्षेत्रमें लड़नेवाले सैनिकोंमें लेनिनने लाखों परचे इस आशयके बँटवा दिये थे, कि इस युद्धमें पूँजीवादियोंका

स्वार्थ है। ग़रीब मज़दूरों, सैनिकों और किसानोंका इससे कोई हित नहीं होगा। अमीर लोग अपने स्वार्थोंकी पूर्त्तिके लिये तुम्हारा गला कटा रहे हैं। अत: ऐसा अधर्म-युद्ध शीघ्र बन्द होना चाहिये। जर्मनीके साथ शीघ्र शान्ति स्थापित होनी चाहिये और सब लोगोंको मिलकर देशके भीतरकी समस्या हल करनी चाहिये।

इस प्रचार-कार्यको भयंकरताके साथ बढ़ता देखकर करेन्स्कीके रोंगटे खड़े हो गये! ट्राट्स्की दिन-रात प्रचार-कार्यको बढ़ा रहे थे। वेश बदले हुए मोशिये लेनिन देहातोंमें घूम रहे थे। बोल्शेविकोंके गुप्त दूत रण-क्षेत्रोंके सैनिकोंको सन्धिके लिये भड़का रहे थे। फिनलैण्डके नाविकोंमें पर्चे बाँटे जा रहे थे, कि तुम जहाज़ोंकी नौकरी छोड़कर पेट्रोग्राडपर क़ब्ज़ा करके साम्यवादी प्रजातंत्र स्थापित करो।

जब लेनिनने सन्धि आन्दोलनको इतने ज़ोरोंसे चलाया, कि रण-क्षेत्रोंपरसे सैनिक दल लड़ाई छोड़-छोड़कर वापस आने लगे, तब तो करेन्स्कीको सितारे दिखलाई पड़ने लगे। उन्होंने सरकारी सूचना निकाल कर घोषित किया, कि लेनिन जर्मनीके गुप्तचर हैं, क़ैसरने इन्हे रूसमें युद्धसे हाथ खींचनेके लिये आन्दोलन उठानेका काम सौंपा है, इसीलिये जर्मन-सरकारने स्पेशल ट्रेनपर चढ़ाकर रूस भेज दिया है। लेनिनको जहाँ पाओ, गिरफ्तार करके पेट्रोग्राड भेज दो!

गिरफ्तार करो

१३

"The capitalists, . . . seeing that the position of the Government was untenable, resorted to a method which since 1848 has been for decades practised by the capitalists in order to befog, devide and finally overpower the working class. This method is the so called "Co-alition Ministry", composed of bourgeois and of renegades from the socialist camp . . . for example in England and France—the capitalists make use of this subterfuge, and very successfully too"

—Lenin.

ऊपरका उद्धरण मोशिये लेनिनकी पुस्तक "क्रान्तिकी समस्याएँ" से लिया गया है। इसका संक्षिप्त तात्पर्य यह है, कि जब पूँजीवादी-दल अपना मतलब साधना चाहता है, तब क्रान्तिकारी-दलके कुछ नेताओंको आमन्त्रित करके गंगा-जमुनी मन्त्रि-मण्डल स्थापित कर लेता है और जनताको धोखा देकर

अपनी स्वार्थ-नीति पूरी करता रहता है। इङ्गलैण्ड और फ्रान्समें यही हाल है और रूसमें भी ऐसाही हुआ। प्रिन्स लौफ़ने करेन्सकी आदि तीन-चार व्यक्तियोंको शामिल करके जनताको फाँस लिया था; लेकिन मज़दूर-सैनिक-सभाके प्रभावके कारण पूँजीवादियोंकी एक न चली। फिर भी उनका प्रभाव करेन्सकीपर इतना अधिक पड़ चुका था, कि करेन्सकी पूँजीवादियोंकी सलाहके बिना कुछ भी नहीं करते थे। इस बातको पूँजीवादी भी समझ गये थे, कि करेन्सकी बिना हमारी मददके मन्त्रि मण्डलकी नीति स्थापित नहीं कर सकते। यही कारण था, कि करेन्सकी पथ-भ्रष्ट हो गये।

स्वाधीनताकी लहर सारे रूसमें प्लेगकी तरह फैल रही थी। मिलोंमें मज़दूरोंकी कमेटियाँ क़ायम हो रही थीं और मिल-मालिकोंपर दबाव डाल रही थी, कि सात घण्टे और छ घण्टे काम लिया जाये। मिलोंकी आमदनीका मुनाफा मज़दूरोंमें बाँटा जाये और प्रबन्धकी नीति मज़दूर-प्रतिनिधियों द्वारा निश्चित हुआ करे।

देहातोंमें किसान-कमेटियाँ बन रही थीं। उनकी स्पष्ट पुकार यह थी, कि ज़मींदार नेस्त-नाबूद कर दिये जाये और ज़मीनपर किसानोंका अधिकार क़ायम किया जाये। छावनियोंमें सैनिकोंकी कमेटियाँ बन रही थीं। उनकी माँग यह थी, कि अफ़सरान सैनिकोंके साथ बराबरीका वर्त्ताव किया करें। साथही सैनिक-कमेटियोंको यह अधिकार दिया जाये, कि वे ख़ुद अपने-अपने अफ़सर चुन लिया करें। आज्ञा-पालन और अफ़-

सरोंके आदर-सम्मानके नियम सिर्फ संग्राम भूमिके लिये लागू रहे। हर वक्तके लिये, अफसर और सिपाहीमें समानताका व्यवहार स्थापित किया जाये।

ये तीनों आन्दोलन बोल्शेविकोंने उठाये थे। इसीलये करेन्सकी-के हृदयमें बोल्शेविक नेता काँटोंकी तरह खटक रहे थे। एक बात और थी। लेनिनका उपर्युक्त प्रचार-कार्य रण-क्षेत्रोंमें लड़नेवाली सेनाओंमें भी ज़ोरोंके साथ जारी था। फ्रान्समें लड़नेवाली रूसी सेनाके सम्बन्धमें एक समाचार आया था, जिसे करेन्सकीकी सरकारने छिपा डाला। वह इस प्रकार था, कि कुछ रूसी सैनिकों-ने अपनी सैनिक-कमेटी स्थापित करनी चाही। जेनरलने बाधा डाली। इसपर चिढ़कर सैनिकोंने जनरलकी आज्ञाओंका पालन करना छोड़ दिया। जेनरलने फ्रान्सीसी तोपख़ाने द्वारा सैनिकों-पर गोले चलवाये, तब सारी रूसी सैनिकोंने मेशीन-गनसे मुका-बिला किया।

सोचनेकी बात यह थी, कि मौतके साथ लड़नेवाले रूसी सैनिक कहाँतक लड़ते? न तो उनके पास काफी कपड़े थे और न वक्तपर उन्हें गोली-बारूद ही मिलती थी। तब फिर प्राण गॅवानेके लिये कितने सैनिक तैयार हो सकते थे?

युद्ध बन्द करनेके आन्दोलनको रोकनेके लिये करेन्सकीने घोर दमन-नीतिसे काम लिया। रणक्षेत्रोंमें सन्धि-आन्दोलन फैलाने-वाले प्रचारक-गिरफ्तार किये गये। बोल्शेविक अख़बार बन्द कर दिये गये। बोल्शेविक किसानो और मज़दूरोंके हथियार

ज़ब्त कर लिये गये। पेट्रोग्राड आदि नगरोंके प्रसिद्ध बोल्शेविक नेता गिरफ्तार करके जेलोंमे ठूँस दिये गये। कोसक-सवारोंको भेजकर देहातोंमें होनेवाले बोल्शेविक आन्दोलनका दमन किया गया।

सितम्बरमे यह दमन घोर रूपमे परिणत हुआ। करेन्सकोके साथ-साथ मेन्शिविकी-दलने तथा नरम साम्यवादियोंने भी दमनका समर्थन किया। पूँजीवादियोंने करेन्सकीको उत्साहित करके खूब दमन कराया। रूसी मजदूरोके अखबार "रबोची"ने इस दमनका इस प्रकार वर्णन लिखा था :—

(१) ज़ेरटेलीने मज़दूरोंके हथियार सैनिक सहायता द्वारा छीन लिये और सेनामें सैनिकोंको गोलीसे मार देनेकी सज़ा फिरसे जारी करवा दी।

(२) स्कोबिलीवने श्रमजीवियोंकी कमेटियोंको जबरन तुड़वा दिया और मज़दूरोको दबानेके लिये तरह-तरहके दमन जारी किये।

(३) एक्सेगटोवने किसान-कमेटियोंको तुड़वा दिया; कई सौ किसानोंको जेलमे ठूँस दिया और मज़दूरों तथा सैनिकोंके पक्षपाती समाचार-पत्रोंको बन्द करवा दिया।

(४) शेरनावने फिनलैण्डमें जानेवाली खाद्य-सामग्रीको रुकवा दिया।

(५) जेरूनीने उत्साही क्रान्तिकारी सैनिकों और नौसैनिकों-को जेल भिजवाया।

(६) निकीटिनने रेलके कुलियोंपर घोर अत्याचार किये।

(७) करेन्सकी तो प्रधान मन्त्री ही थे। इन समस्त अत्याचारोंकी जवाबदेही उनपर ही थी। उनकी नीतिके कारणही उपर्युक्त नरम साम्यवादी मंत्रियोंने, बोल्शेविकोंपर अत्याचार किये और यही कारण था, कि जनताका विश्वास करेन्सकी तथा नरम साम्यवादियोंपरसे बिलकुल उठ गया। साथ ही इस दमनके बाद जनता पूर्णरूपसे बोल्शेविकोंके पक्षमें आ गयी।

करेन्सकीके सिरपर दमनका भूत चढ़ गया था। उन्होंने विदेशोंसे लौटनेवाले रूसी देश-भक्तोंको भी देशमें नहीं आने दिया और यहाँतक दमन किया कि, १९०५ में जिन लोगोंने ज़ारके विरुद्ध क्रान्ति की थी, उनपर मुकद्दमे चलवाये और उन्हें दण्ड दिया।

बोल्शेविकोंके नेता ट्राट्स्की, मैडम कोलनटाय तथा कैमनीव जेल भेजे गये। गिरफ्तारीके वारण्ट जारी होनेपर मो० लेनिन तथा जिनोवीव वेश बदलकर फ़िनलैण्डकी तरफ़ जा छिपे और गुप्त रूपसे अपना प्रचार कार्य करते रहे। इसी समय करेन्सकीके मन्त्रि-मण्डलने यह बात भी मशहूर की, कि बोल्शेविक-पार्टी छिपे तौरपर जर्मनीको सहायता दे रही है और रूसमें युद्ध बन्द कर देनेका आन्दोलन उठाये हुए है। लेकिन जिन काग़ज़ोंको मन्त्रि-मण्डलने प्रमाण रूपमें प्रकाशित किया था, वे काग़ज़ात (Sisson Documents) झूठे साबित हुए! इन काग़ज़ातके झूठे प्रमाणित होनेपर करेन्सकीको दमन रोकना पड़ा और बोल्शे-विकोंको जेलसे छोड़ना पड़ा। अगस्तमें बोल्शेविकोंने फिर आन्दो-

लन उठाया, कि युद्ध बन्द किया जाये; किसानोंको ज़मीनें दी जायें, मज़दूरोंको अधिकार दिये जायें, सैनिकोंके साथ समताका व्यवहार किया जाये तथा सोवियटके हाथमें रूसका शासन सौंप दिया जाये।

यद्यपि उस समयकी केन्द्र-सोवियटमें नरम-दलके साम्यवादियों और मेन्शेविकियोंकी संख्या अधिक थी, तथापि बोल्शेविकोंको पूर्ण विश्वास था, कि नये चुनावमें, सोवियटके अन्दर बोल्शेविकोंके प्रतिनिधि बहुत बड़ी संख्यामें आ जायेंगे। और ऐसा ही हुआ भी।

फिर आग भड़की

१४
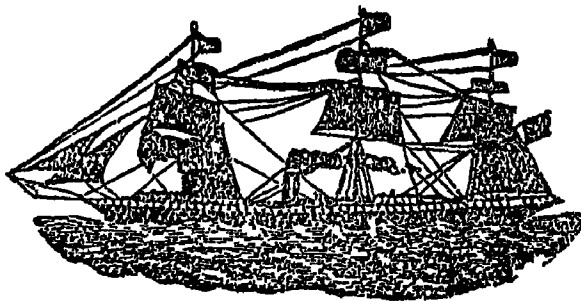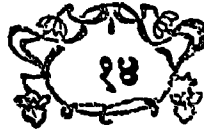
जब किसानोंने देखा, कि जिस ग़रज़से क्रान्ति की गयी थी, वह करेन्सकीके मन्त्रि-मण्डलसे पूरी नहीं हो सकती, तब निराश होकर उन्होंने बोल्शेविक-दलकी शरण ली। इसी प्रकार धीरे-धीरे मज़दूर-दल, सैनिक-दल और नौसैनिक-दल भी करेन्सकीकी सरकारसे पीड़ित होकर मुक्तिका उपाय ढूँढ़ने लगे। बोल्शेविक-दल तो यह चाहता ही था, कि बहुमत अपने पक्षमें आ जाये; क्योंकि सोवियटका चुनाव निकट आ रहा था। यदि सोवियटमें बोल्शेविकोंका बहुमत हो गया, अधिक प्रतिनिधि बोल्शेविक सिद्धान्तोंके पक्षमें आ गये, तो बस, करेन्सकीका मन्त्रि मण्डल एक घण्टेमें टूट सकता था। इसी ख़यालसे ट्राट्स्की सब दलोंके असन्तुष्ट लोगोंको बोल्शेविक-दलमें शामिल करते गये। उधर करेन्सकीकी पार्टी कमज़ोर पड़ती गयी। एक तो अनुचित दमनके कारण जनता असन्तुष्ट थी ही, दूसरे सरकार अमीरोंसे मिली हुई थी। ग़रीब जनता, जिसने अपना ख़ून बहाकर ज़ारका तख़्ता उलटा था, यह ढकोसला अधिक न देख सकी। फिर घर-घरमें दूसरी क्रान्तिकी तैयारी होने लगी।

बाल्टिक समुद्रकी समुद्री सेनाने अपनी कमेटीमें निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया :—

"हम लोग अपनी यह माँग पेश करते हैं, कि अस्थायी मन्त्रि-मण्डलमेंसे साम्यवादी कहलानेवाला राजनीतिक खिलाड़ी 'करेन्सकी' अलग कर दिया जाये; क्योंकि उसने क्रान्तिके महत्वको अमीरों-से मिलकर नष्ट कर दिया है।"

जनतामें बोल्शेविकोंके प्रति जो प्रेम और सहानुभूति उत्पन्न हो गयी थी, वह अपने आप नहीं हुई थी। उन दिनों ट्राट्स्की, लेनिन तथा जिनोवीव आदि नेताओंने दिन-रात घोर परिश्रम करके अपना आन्दोलन देशके कोने-कोनेमें व्याप्त कर दिया था। यही कारण था, कि नरम-दलके साम्यवादी डरने लगे थे, कि यदि नियमानुसार सितम्बरमें सोवियटका चुनाव किया गया, तो बोल्शेविक बाज़ी मार ले जायेंगे। बात भी ठीक थी ; क्योंकि म्युनिसिपेलिटियोंके चुनावमे नरम दलके साम्यवादियोंका पाँसा पलट गया था।

मास्कोके म्युनिसिपल चुनावमें, जून सन् १९१७ में इस प्रकार सदस्य पहुँचे थे:—

(१) नरम साम्यवादी ५८

(२) पूँजीवादी १७

(३) मेन्शेविकी १२

(४) बोल्शेविकी ११

किन्तु, सितम्बरमें हवा बदल गयी। सारा देश बोल्शेविकोंको

पसन्द करने लगा। तीन महीनेके बाद उसी म्युनिसिपैलिटीमें इस प्रकार सदस्य चुनकर भेजे गये:—

(१) नरम साम्यवादी १४

(२) पूँजीवादी ३०

(३) मेन्शेविकी ४

(४) बोल्शेविकी ४७ (!)

तीन महीनेके भीतर बोल्शेविकोंकी संख्या चौगुनीसे भी अधिक हो गयी!

करेन्स्कीके मंत्रि-मण्डलने तय किया था, कि देश-भरके वोटरोंकी रायसे एक सरकारी नेशनल ऐसेम्बली सङ्गठित की जायेगी; इसीलिये सोवियटका चुनाव टाला जा रहा था। करेन्सकीकी यह विकट चाल थी और यदि बोल्शेविक नेता इस चालको समझ न लेते, तो उनके हाथोंमें रूसी शासनका आना कठिन हो जाता; क्योकि यदि सोवियटका चुनाव रुका रहता और नेशनल असेम्बली पहले सङ्गठित हो जाती, तो करेन्स्कीके पक्षपातियोंको संख्या ऐसेम्बलीमें अधिक हो जाती; क्योंकि पुरानी चुनी हुई म्युनिसिपैलिटियोंमें करेन्सकीके अनुयायी काफी थे। लेकिन अगर सोवियटका चुनाव पहले हो जाता, तो उसमें बोल्शेविकोंके पक्षपाती अधिक संख्यामें आ पहुँचते और आते ही करेन्सकीके मन्त्रि-मण्डलको तोड़ कर बोल्शेविक-पार्टीको नया मन्त्रि-मण्डल चुननेका अधिकार दे देते!

यद्यपि सितम्बर और अक्तूबरमें रूसके भीतर बेहद सर्दी

पड़ने लगती है और लगभग सभी कारबार तथा आन्दोलन सुस्त पड़ जाते हैं, तथापि बोल्शेविकोंकी सरगर्मी बन्द नहीं हुई। उनके प्रचारक सेनाओंमें, मिलोंमें, गाँवोंमें, दूकानोंमें, खेतोंमें, खानोंमें, रेलोंमे, डाक-घरोंमें, सर्वत्र अपना प्रचार करते फिर रहे थे। सर्दीके दिनोंमें पौलैण्डकी सीमापर लड़ने वाली सेनाओंको काफी कपड़े नही मिल सके; इसलिये बहुतेरे सैनिक फिर भाग आये। इन भाग आनेवालोंको प्राण-दण्डकी आज्ञा दी गयी। बस, इन्हीं कारणोंसे देशके भीतर फिर असन्तोषकी अग्नि भड़क उठी!

किसानोंमें असन्तोष

१५
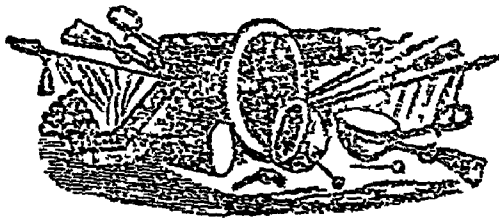
रूसमें लगभग ८० फी सदी किसान रहते हैं। हरेक प्रतिनिधि-सभामें उनका बहुमत होना स्वाभाविक है। लेकिन ज़ारके ज़मानेसेही उनपर घोर अत्याचार होते थे। यही कारण था, कि किसानोंने कठोर क़ानूनों और ज़मीदारोंके अत्याचारोंके विरुद्ध १८६४ सेही आवाज़ उठानी शुरू कर दी थी। इसके बाद १८८० में, १९०५ में तथा १९१३ में भी किसानोंने कठोर क़ानूनोंसे मुक्ति पानेके लिये आन्दोलन उठाये। लेकिन पत्येक बार, दमनके कुल्हाड़ेसे वे कुचले गये और कड़े-कड़े क़ानूनोंके बन्धनोंमें बाँध दिये गये। १९१७ की राज्यक्रान्तिमें किसानोंने इसी अभिलाषासे भाग लिया था, कि प्रजातन्त्र क़ायम होनेसे हमारे दु:ख दूर होंगे और ज़मीदारोंका अत्याचारी शासन दूर हो जायेगा।

जब करेन्सकीके हाथमें मन्त्रि-मण्डल आया और देशकी शासन-नीतिका दायित्व साम्यवादी-क्रान्तिकारी किसान-दलके हाथमें आया, तब किसानोंकी यह अभिलाषा और बढ़ी, कि प्रधान मन्त्री करेन्सकी ज़मींदारोंसे ज़मीन छीन कर किसानोंमें बाँट दे। करेन्सकीने इसका बचन भी दिया था और किसान-दलकी सेण्ट्रल-

कमेटीने भी पहले यही पास किया था; लेकिन करेन्सकीने पूँजी-वादियों और नरम साम्यवादी (मेन्शेविकी) दलको मिलाकर गङ्गा जमुनी मन्त्रि-मण्डल कायम किया और इस मन्त्रि-मण्डलने साम्यवादी ढँगको ठुकराकर ज़मींदारोंसे ज़मीनें छीनकर किसानोंमें विभाजित करनेके प्रस्तावको अस्वीकृत कर दिया। करेन्सकीने भी किसानोंके लिये कुछ नहीं किया—यद्यपि वे क्रान्तिकारी-किसान-दलके प्रधान नेताओंमेंसे एक थे।

पुराने मतके किसान तो इस बातपर राज़ी हो गये, कि ज़मींदारोंको क्षति-पूर्तिके रूपमें रुपये दे दिये जायें और तब ज़मींदारोंसे ज़मीनें ली जायें; लेकिन नौजवान किसानोंने इस समझौतेको नापसन्द किया और इस प्रकार किसान-दलके दो दल हो गये। एक दल,"राइट सोशियलिस्ट रिवोल्यूशनरी पार्टी"यानी "करेन्सकी-का दल" कहलाया और दूसरा "लेफ्ट सोशियलिस्ट रिवोल्यूशनरी पार्टी" कहलाया, जो बोल्शेविकोंसे जा मिला।

करेन्सकी चाहते थे, कि अब देशमें कोई आन्दोलन न उठे और धीरे-धीरे शान्ति स्थापित होकर राज-काज चलने लगे और देश-भरके वोटरोंकी एक बड़ी प्रतिनिधि-सभा (कान्सटीचुएण्ट ऐसेम्बली) कायम हो जाये तथा उसके निश्चयके अनुसार ही ये बड़े-बड़े मसले तय हों। लेकिन किसानोंको यह पसन्द नहीं था। चूँकि उन्होंने ख़ून बहाकर क्रान्तिको सफल बनाया था, अतः वे तुरन्त अपनी माँग पूरी कराना चाहते थे। देशमें और कोई ऐसी पार्टी नहीं थी, जो उनकी सहायता करती। केवल बोल्शेविक-

दल "किसानोंका राज्य" स्थापित करनेके लिये ज़ोर-शोरसे आन्दोलन उठा रहे थे। बस, किसान-दल करेन्स्कीकी पार्टी छोड़कर लेनिनकी शरणमे चले गये।

लेनिन गुप्त रहकर भी अपने आन्दोलनको बड़े ज़ोरोंसे चला रहे थे। ट्राट्स्को तथा जिनोवीव, कैमकाव तथा मारटाव आदि गॉव-गॉवमे किसान कमेटियाँ बनाकर यह आन्दोलन फैला रहे थ, कि भूमिपर किसानोंका क़ब्ज़ा होना चाहिये। अपने सीधे मतलबकी बात सुनकर किसान लोग धड़ाधड़ सभाएँ स्थापित कर रहे थे। इन कमेटियोंकी स्थापनासे देश-भरमे बोल्शेविकोंका प्रभाव बढ़ता जा रहा था और आगामी सोवियटके चुनावके लिये बोल्शेविकोंका बहुमत तेयार हो रहा था। लेनिन इसीलिये अपने आन्दोलनको इस ढङ्गसे चला रहे थे, कि अगले चुनावमे करेन्सकीको पार्टी छोटी पड़ जाये और सब जगह बोल्शेविक उम्मेदवार बाज़ी मार ले जायें। अभीतक "सोवियट" मे जिस पार्टीके मेम्बर अधिक सख्यामें पहुँच जाते थे, उसी पार्टीका मन्त्रि-मण्डल क़ायम होता था। इसीलिये लेनिन यह चाल चल रहे थे।

करेन्सकी इस चालको बड़ी देरसे समझ सके और उस वक्त समझ सके, जब कि किसान, मज़दूर तथा सैनिक तीनों बड़े-बड़े सम्प्रदाय उनकी नीतिसे असन्तुष्ट होकर बोल्शेविकोंसे जा मिले थे। लेकिन करेन्स्कीने भी ज़ोर मारा और सरकारी तौरपर यह घोषित किया, कि "सोवियट"के द्वारा मन्त्रि मण्डलकी नीति स्थिर न होनी चाहिये। देश-भरकी एक प्रतिनिधि-सभा संगठित की

जायेगी। उसमे पूँजीवादी, मेन्शेविकी, ज़मींदार, व्यापारी तथा किसान, मज़दूर एवं सैनिक, इन समस्त सम्प्रदायोंके प्रतिनिधि रखे जायेंगे। वही देश-भरकी सच्ची प्रतिनिधि-सभा होगी। करेन्स्कीने सोचा था, कि इस "सवजातीय" प्रतिनिधि-सभामें पूँजीवादी, ज़मींदार, व्यापारी तथा मेन्शेविकी दलके प्रतिनिधि मिलकर किसानों, मज़दूरों तथा सैनिकोंके प्रतिनिधियोंसे संख्यामे अधिक हो जायेंगे, तब फिर हमाराही मन्त्रि-मण्डल क़ायम हो जायेगा!

करेन्सकीकी बात सुन, लेनिनने उसके पैंतरे ताड़ लिये। उन्होंने तुरन्त अपने साथियोंको आदेश दिया, कि यदि सोवियटका चुनाव पिछड़ गया, तो हमारी हार हो जायेगी; क्योंकि सब पार्टियोंकी जो सम्मिलित कानफरेन्स करनेका ढोंग मन्त्रि-मण्डलने रचा है, उसका यही अर्थ है, कि करेन्सकी अपनी अकेली पार्टीके बलसे हमे नहीं हरा सकते, लेकिन पूँजीवादियों, ज़मींदारों, व्यापारियों, म्युनिसिपैलिटियों, ज़िला-बोर्डों, कोआपरेटिव सुसाइटियों तथा मेन्शेविकी-दलके सम्मिलित वोटोंसे हमें हरा देंगे!

झट ट्राट्स्कीने आन्दोलनका पहलू वदल दिया और किसान-कमेटियोंको सोवियटमें अपने प्रतिनिधि भेजकर बहुमत क़ायम करनेका आदेश दिया। करेन्स्कीने हरचन्द चाहा और कोशिश की कि, किसान-कमेटियाँ टूट जायें, मगर किसानोंपर ज्यों-ज्यों दमन हुआ, त्यों त्यों करेन्सीका प्रभाव क्षीण होता गया। किसानोंमें करेन्सकीके मन्त्रि-मण्डलके प्रति असन्तोषका भाव बढ़ता गया।

मज़दूर भी बिगड़े

"It was neither his rate of pay nor the conditions under which he works that led the Russian workman to engage in the present revolutionary movement. The Revolution was from the first political, in the strict sense of the word. It was directed against Czarism. Its aim was to win liberty."

—Emile Vandervelde

सचमुच पेट्रोग्राडके मज़दूरोंने देशभरकी स्वाधीनताके नामपर क्रान्तिमें भाग लिया था। उनकी साम्यवादी-लोकसत्तावादी-मज़दूर-पार्टीने क्रान्तिको देश-भरकी मुक्तिका साधन माना था और इसीलिये मिलोंमें हड़ताल करके मज़दूरोंने ज़ारकी सेनाओंके आक्रमणको रोकनेके लिये मार्च १९१७ मे अस्त्र धारण किये थे। इतनाही नहीं, मज़दूरोंने ही ज़ारकी पुलिसको ढूँढ़-ढूँढ़ कर मारा था और पेट्रोग्राड, मास्को आदि बड़े-बड़े नगरोंमें मज़दूरोंने ही ड्यूमाको आज्ञा शिरोधार्य करके क्रान्तिको सफल बनाया

था। इतना सब कुछ कर चुकनेके बाद, यदि रूसी मज़दूरोंने कुछ माँगें पेश कीं, तो क्या बुरा किया? रूसी मज़दूर १८२१ ई०से आन्दोलन उठाये हुए थे। उन्होंने कई बार मिलों और फैक्ट-रियोंमें हड़तालें कीं; लेकिन अमीर मिल-मालिकोंने अपने हाथ-की कठ-पुतली ज़ारोंसे ऐसे-ऐसे कड़े क़ानून बनवाये, कि मज़दूर जीते-जी कुचल दिये गये। इस बातके स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं, कि मज़दूरोंको ज़िन्दा बाइलरोंमें झोंक दिया गया, पर मिलके मालिकों-का एक बाल तक बाँका नहीं हुआ! लगातार दमनकी चक्कीमें पिसते रहनेके कारण, मज़दूरोंका हृदय बहुत सख्त हो गया था। वे समझ गये थे, कि मिल-मालिक हमें विवश समझ कर ही ऐसा बर्त्ताव कर रहे हैं। वे जानते हैं, कि इन मज़दूरोंको झख मार कर मिलोंकी शरणमें आना पड़ेगा; क्योंकि इन मज़दूरोंके पास इतना धन कहाँ है, जो ये दो-चार महीने भी बैठकर खा सकें और हड़ताल जारी रख सकें। रूसी मिलों और फैक्टरियोंमें, मिल-मालिकोंने एक प्रकारकी नौकर-शाही कायम कर रखी थी। मज़दूरोंके ऊपर "फोरमैन" और फोरमैनोंके ऊपर "ओवरसियर" रहते थे। इन ओवरसियरोंके ऊपर भी "डिपार्टमेण्ट-आफिसर" रहा करते थे। इन सबके ऊपर मेनेजर तथा जेनरल मैनेजर रहा करते थे। इस प्रकार, ग़रीब मज़दूर अपने अन्नदाता मिल-मालिकके पास कभी नहीं पहुँच सकता था।

रूसके अन्दर, चमड़े, कपड़े, और लकड़ीके कामकी अधिक मिलें और फैक्टरियाँ हैं। इनके सिवा कोयले, सोने, चाँदी और

लोहेकी खानें हैं। रेलवे, डाक तथा तारके मुहकमे हैं। इन सबमें काम करनेवाले भी श्रमजीवी ही थे; पर इनके साथ भी कठोर बर्ताव होता था। मनुष्य होते हुए भी ये पशु समझे जाते थे। चाहे अपना बाप भी पड़ा-पड़ा क्यों न मर रहा हो; पर मिलोंमें काम करनेवाले मज़दूरोंको छुट्टी नहीं मिलती थी।

रूसी मिलोंके मालिक मज़दूरोंसे ख़ूब डटकर काम लेते थे और मुनाफ़ेसे अपना घर भरते थे। युद्धके समयमें करोड़ों और अरबों रुपयोंका लाभ रूसी मिलोंको हुआ; पर तब भी वेतनमें सन्तोष-जनक उन्नति नहीं हुई। बहुतेरी मिलोंमें तो कभी वेतन बढ़ानेका ज़िक्र तक नहीं किया गया! १९१४ में जब कि युद्ध आरम्भ हुआ था, तब रूसी मज़दूरोंको वेतन इस प्रकार दिया जाता था :—

१९१४ में

नाम पेशेवर—	वेतन—
(१) मज़दूर	४ रबल रोज़ाना
(२) क्लर्क	२०० रबल मासिक
(३) फोरमैन	२५० रबल मासिक
(४) ओवर-सियर	३०० रबल मासिक

१९१४ से लेकर १९१६ तक इस वेतनमें नाममात्रका परि-वर्त्तन हुआ, लेकिन मिलके मालिकोंने इतने सस्ते वेतनपर काम कराकर अपने घर सोनेकी ईंटोंसे भर लिये।

मज़दूरोंको वेतन-सम्बन्धी, एकही शिकायत नहीं थी; बल्कि मिलोंमें उनका घोर निरादर और अपमान भी होता था। उनकी

ग़ैरहाज़िरी कट जाती थी; बीमारी कट जाती थी; ज़रा-ज़रासे अप-राधोंके लिये उनपर लम्बे-लम्बे ,ज़ुर्माने कर दिये जाते थे। मिलके कामको घोर परिश्रम करके लाभप्रद बनानेपर भी कुछ हाथ नहीं आता था। अगर किसीका वेतन बढ़ाया भी जाता था, तो वे ओवरसियर या फोरमैन थे, जो घोर कठोरताके साथ पेश आते थे और मज़दूरोंको पशु समझते थे। रूसमें मज़दूरोंके रहनेके लिये मिल-मालिकोंकी ओरसे कोई भी प्रबन्ध न था। पेट्रोग्राड, मास्को, कीव, उडेसा, कारकोव, समारा तथा काज़ान आदि व्यापारी शहरोंमें भी मज़दूरोंके लिये खुले हवादार मकान नहीं थे। अन्धकारपूर्ण सकरी गलियोंमें ग़रीब मज़दूर अपने जीवनके दिन पूरे करते थे और बिगुल बजतेही रोटीकी उम्मीदमें, मिलोंकी ग़ुलामी करनेके लिये चले जाते थे।

इन समस्त कष्टोंका अनुभव करकेही क्रान्तिके पश्चात् मज़-दूरोंने यह माँग पेश की थी, कि मिलोंपर सरकारी क़ब्जा हो जाये और मिलोंके-भीतर मज़दूर-कमेटियाँ क़ायम करके मिलोंका सारा इन्तज़ाम मज़दूरोंके प्रतिनिधियोंपर छोड़ दिया जाये। मज़दूरोंकी सम्मतिसे ही काम करनेके घण्टे, मज़दूरोंके वेतन तथा अपराध करनेवाले मज़दूरोंको दण्ड दिया जाये।

करेन्सकीके मन्त्रि-मण्डलने, इन माँगोंको अशान्ति-मूलक बताया और मज़दूरोंकी साम्यवादी, कमेटियोंको ग़ैर-क़ानूनी कहकर ताड़ना शुरू किया। इसीसे करेन्सकीके शासनसे असन्तुष्ट होकर मज़दूर बोल्शेविकोंसे जा मिले।

सेनाओंमें सनसनी

रूसमें सेनाएँ किस प्रकार संगठित हुईं, इस विषयपर हम अपनी पुस्तक "रूसकी राज्य-क्रान्ति"*में विस्तृत वर्णन दे चुके हैं। एक प्रकारसे १६०० ईसवी तक ज़ारका जन-साधारणसे सीधा सम्बन्ध नहीं था। ज़मींदारोंके द्वाराही टैक्स वसूल होते थे। ज़मींदारोंपर ही यह जिम्मेदारी थी, कि वे ज़मीनोंको लगानके ऊपर किसानोंमें तक़सीम कर दिया करें। इस विशेष अधिकारके कारण ज़मींदारोंपर एक बड़ी भारी जिम्मेदारी यह भी थी, कि वे ज़ारकी सेनाके लिये सैनिक भरती करके भेजा करते थे। युद्ध इत्यादिके समय यह भी बँधा हुआ नियम था, कि ज़मींदार लोग अपनी-अपनी हैसियतके अनुसार रँगरूट सिपाही भेजा करते थे।

इस प्रकार, रूसी सेनामें अधिकतर किसान ही भरती होते थे। ज़ारकी स्थायी सेनाओंमें कोसक, फिनलैण्डर्स, काकेशस आदि जातियोंके चुने हुए जवान रहते थे। यूरोपमें रूसी सिपाहियोंका अच्छा नाम था। जबसे रूसी सेनाओंने नेपोलियनकी सेनाओंको परास्त किया था, तबसे उनका मान और भी बढ़

*'रूसकी राज्य-क्रान्ति' नामक पुस्तक हमारे यहाँसे मँगा देखें, मूल्य २॥)

गया था। लेकिन इतनेपर भी रूसी सैनिकोंपर बड़े कठोर क़ानून लागू थे। आज्ञाकारिताके नामपर वे कठपुतलियोंकी तरह नचाये जाते थे। चाहे वे ड्यूटीपर हों अथवा बारिकोंमें हों, उन्हें हर वक्त अफ़सरोंका कानूनो सम्मान करना पड़ता था और अफ़सर उन्हें "तू" कहकर सम्बोधित करते थे। एक अमेरिकन लेखकने इस कठोर पाबन्दीकी हँसी उड़ाते हुए अपने ग्रन्थोंमें यहाँ तक लिखा है, कि "रूसी सरकारने सैनिक नहीं रखे थे; बल्कि कुत्ते पाले थे!"

यही कारण था, कि रूसकी सेनाओंमें भी ज़ारके कठोर शासनके प्रति घृणा उत्पन्न हो गयी थी और चूँकि वे किसान घरोंके ही थे, अतः किसानोंपर होनेवाले अत्याचारोंका भी उनके चित्तपर बुरा प्रभाव पड़ता था। जब कभी उन्होंने इन कठोर नियमोंके विरुद्ध आवाज़ उठायी, तभी उनका अपमान किया गया; उनका आन्दोलन सैनिक-विप्लव समझा गया और अनेकों आन्दोलनकारी सैनिकोंको फाँसीका दण्ड (Capital Punishment) दिया गया। १९१४ में जब ज़ार महोदयने यूरोपीय महायुद्धके नामपर सैनिकोंकी भर्ती शुरू की, तब मिलोंके मज़दूरों और रेलवेके कुलियों तकको सेनाओंमें भरती कर लिया! इसका परिणाम यह हुआ, कि देशके अन्दर मिलोंका काम सुस्त पड़ गया और माल महँगा हो गया। गरीबोंको कष्ट होने लगा। युद्धके कारण विदेशोंसे भी मालका आना बन्द था; अतः कपड़े और अन्य आवश्यक सामग्रीका अकाल सा पड़ने लगा। इस कमीका असर सेनापर भो पड़ा। जर्मनीकी सोमापर और फ़्रान्सके रणक्षेत्रमें

लड़नेवाले रूसी सैनिकोंको पूरी वर्दियाँ भी नहीं पहुँच सकीं। अक्सर गोली-बारूदकी भी कमी पड़ती रही। जो सैनिक प्राण गवाँकर यूरोपीय महायुद्ध लड़ रहे थे, उनके खाने-पीने और कपड़ों तकके लिये ज़ारने फिक्र नहीं की। इन समस्त कारणोंसे सैनिक असन्तुष्ट हो रहे थे। जिस समय उन्होंने सुना, कि रूसमे ज़ारका तख्ता उलट दिया गया और प्रजा-तन्त्र क़ायम हो गया, उस समय वे बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें ढाढ़स बँधा, कि अब हमारे भी कष्टोंका निवारण होगा। इसी आशामे रूसी सैनिकोंने और यहाँ तक कि ज़ारके विश्वस्त सैनिक, "कोसकों" ने भी प्रजातन्त्रका साथ दिया और क्रान्तिके समय पेट्रोग्राडकी जनतापर गोली चलानेसे इनकार कर दिया। धीरे-धीरे समस्त सेनाएँ ज़ारके विरुद्ध हो गयीं और जनतासे मिल गयीं। यदि सेनाएँ ज़ारके साथ रहतीं, तो ज़ार सिंहासनके अधिकार न छोड़ते और पेट्रोग्राडपर फ़ौजी हमला करके ड्यूमाके मन्त्रि-मण्डलको भङ्ग कर देते। लेकिन ये सैनिकही थे, जिन्होंने क्रान्तिको सफल बनाया और कान्तिकारी जनताका साथ देकर अत्याचारी ज़ारका नाम मिटा दिया।

मार्च १९१७ में प्रजा-तन्त्र मन्त्रि-मण्डल स्थापित हुआ और उसने घोषणा की, कि सैनिकोंके कष्ट दूर किये जायेंगे। सोवियट-की केन्द्र-सभा (सेण्ट्रल कमेटी) में, जिसमें सैनिकोंके भी प्रतिनिधि अच्छी संख्यामें रहते थे, यह तय हुआ, कि सैनिकोंको अपनी प्रतिनिधि-सभाएँ स्थापित करनेका अधिकार दिया जाये और प्राण-दण्डका अधिकार उठा दिया जाये। करेन्सकीके

मन्त्रिमण्डलने पहले तो इस प्रस्तावके अनुसार काम करना शुरू किया, लेकिन जब बोल्शेविकोंने सन्धि-आन्दोलन उठाया और बारिकों तथा युद्ध-क्षेत्रोंकी सैनिक-कमेटियोंने सन्धिका समर्थन किया और करेन्सकीकी नीतिका विरोध किया, तब करेन्सकीने सैनिक-कमेटियाँ तोड़ देने और प्राणदण्डका विधान जारी कर देनेकी घोषणा कर दी !

लेकिन बोल्शेविकोंका प्रचार-कार्य जारी रहा। सैनिकोंके हृदयोंमे यह बात प्रविष्ट करा दी गयी थी, कि यह युद्ध इङ्गलैण्ड और फ्रांसकी स्वार्थ-सिद्धिके लिये लड़ा जा रहा है। इस युद्धमें रूसका सम्मिलित रहना व्यर्थ है ; क्योंकि इङ्गलैण्डने वादा किया था, कि रीगाकी खाड़ीमें जर्मन-जहाज़ोंके आक्रमणको रोकनेके लिये ब्रिटिश जहाज़ भेजे जायेंगे, लेकिन इङ्गलैण्डने ऐसा नहीं किया और जर्मन जहाज़ोंने भयंकर हमला करके रीगाकी खाड़ीमे रूसी नौ-सेनाको नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। मित्र-राष्ट्रोंकी ऐसी ही लापरवाहियोंको दिखलाते हुए, बोल्शेविकोंने सैनिकोंको यह सुझाया, कि अब युद्ध बन्द हो जाना चाहिये और देशके अन्दर साम्यवादी प्रजातन्त्र स्थापित होना चाहिये।

करेन्सकीने, जो कि प्रधान मन्त्री थे, साथ-ही-साथ युद्ध-मन्त्री भी थे, यह देखकर, कि सैनिक संग्राम छोड़ कर वापस आ रहे हैं, सैनिकोंके साथ बड़ी सख्तीका बर्ताव करना शुरू कर दिया। भागे हुए सैनिकोंको प्राण-दण्ड देना आरम्भ किया और रणक्षेत्रोमें भोजनका पहुँचाना बन्द करवा दिया !

युद्ध-क्षेत्रोंसे लौटे हुए सैनिक पेट्रोग्राडकी सभाओंमें स्पीचें देते और करेन्सकीकी इस प्रकार निन्दा करते थे:—

"Comrades, show me what I am fighting for. Is it Constantinople or is it free Russia? If you can prove to me that I am defending the Revolution, then I will go out and fight without capital punishment to force me."

आठ नम्बरकी सेनाके एक प्रतिनिधिने सभाके बीचमें खड़े होकर कहा:—

"We are weak. We have only a few men left in each company. They (Ministers) must give us food and boots and reinforcements or soon there will be left only empty trenches. Peace or supplies.....either let the Government end the war or support the Army."

साइबेरियन तोपखानेके प्रतिनिधिने खड़े होकर कहा :—

"Officers will not work with our Committees, they betray us to the enemy, they apply the death penalty to our agitators......We thought that the Revolution will bring peace. But now the Government forbids us even to talk of such things, and at the same time doesn't give us enough food to live on, or enough ammunition to fight with."

इस प्रकार, पेट्रोग्राडकी सार्वजनिक सभाओंमे रणक्षेत्रोंसे आये हुए सैनिक यह रोना रो-रो कर सुनाते थे, कि न तो हमें भोजन मिलता है, न गोली-बारूद मिलती है। हम जर्मनोंसे लड़ें, तो कैसे लड़ें ? अफसर लोग हमारी कमेटियोंके दुश्मन हो रहे है। हमारे आन्दोलन-कारियोंको प्राण-दण्ड देते हैं, हमें जर्मन-सैनिकों-को गोलियोंका शिकार बनाते हैं और वह सरकार जिसपर हम विश्वास किये हुए थे, कि युद्ध बन्द करेगी, अब हमें स्वाधीनता-पूर्वक बोलनेतकसे वञ्चित कर रही है।
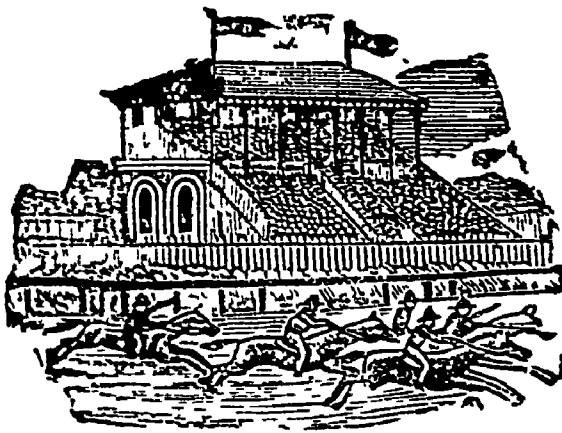
विद्रोही सेनापति !
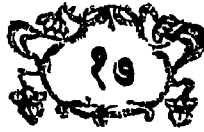
" Kerensky knew about the movement of several detachments from the Front towards Petrograd, and it is possible that as Prime Minister and Minister of War, realising the growing Bolshevist danger, he called for them. "

—A. J. Sack.

सितम्बरके महीनेमें पेट्रोग्राडकी स्थिति बड़ी नाज़ुक थी। एक तो रीगाकी खाड़ीपर जर्मनोंका क़ब्ज़ा हो गया था, जिसके कारण अमीर लोग घबरा रहे थे, कि कहीं जर्मन-सेनाएँ पेट्रोग्राडपर भी क़ब्ज़ा करनेके लिये धावा न बोल दें। दूसरी तरफ सेना-कमेटियोंके कारण फौजी अफसर परेशान थे। उनके हुक्मकी तामील नहीं होती थी। कई रणक्षेत्रोंसे सिपाही भागकर अपने-अपने प्रदेशोंको वापस चले आये थे। कई सेनाओंने अपने जेनरलों और कर्नलोंको अलग करके कमेटी द्वारा निर्वाचित करके नये अफसरोंको नियुक्त किया था।

करेन्सकीके मन्त्रि-मण्डलमें खींचा-तानी मची हुई थी। पूँजी-

वादी अपनी तरफ खींच रहे थे और सेनाओंके लिये कठोर नियमोंका परामर्श दे रहे थे और दूसरी तरफ सेवियटकी सेण्ट्रल-कमेटी साम्यवादी मन्त्रियोंसे जवाब तलब कर रही थी, कि तुम पूँजी-वादियोंसे समझौता क्यों कर रहे हो ? सेवेनकाव, जो कि साम्यवादी क्रान्तिकारी-किसान दलके एक नेता थे, इसी अपराधके कारण अपनी पार्टीसे निकाल दिये गये, कि उन्होंने पूँजीवादियोंसे समझौता करके क्रान्तिकी महत्ताको नष्ट करना चाहा था।

इन सब बातोंके देखते हुए जेनरल कार्नीलाफने प्रजा-तन्त्र मन्त्रि-मण्डलके सामने यह माँग पेश की, कि घरेलू झगड़ोंके कारण रणक्षेत्रोंकी सेनाओंका संगठन बिगड़ा जा रहा है। अतः समस्त सैनिक-संगठन मेरे सुपुर्द किया जाये; अन्यथा इस ढील-ढालके कारण रीगाकी भाँति अन्य स्थान भी हाथसे जाते रहेंगे।

जेनरल कार्नीलाफकी यह माँग करेन्सकीके लिये अपमान-जनक थी, क्योंकि करेन्सकी युद्ध-मन्त्री भी थे। प्रधान मन्त्रीके प्रबन्धमें त्रुटि दिखलाते हुए जेनरल कार्नीलाफने जो माँग पेश की थी, वह नामञ्जूर हुई। बस, जेनरल साहब बुरा मान गये। जेनरल कार्नीलाफको अपने कोसक सवारोंपर पूर्ण विश्वास था। अतः उन्होंने सोचा, कि क्यों न इस उथल-पुथलके ज़मानेमें तक़दीरकी आज़माइश की जाये। रीगाकी हारके बाद ही जेनरल कार्नीलाफने १० सितम्बरको पेट्रोग्राडकी तरफ चढ़ाई बोल दी। जेनरलका यह इरादा था, कि इस समय रूसकी जनता एक "सैनिक एकतंत्री अधिनायक" (Military Dictator) चाहती है। अतः मैं पेट्रोग्राडपर अधिकार

करके जनताकी सहानुभूति जीत लूँगा। सेनाएँ मेरे क़ब्ज़ेमें हैं ही; मैं अपने हुक्मसे शासन चलाऊँगा और साम्यवादी-दलोंका दमन करके पूँजी-वादियोंकी सत्ता फिरसे क़ायम कर दूँगा। इतने बड़े हौसले लेकर आफतका मारा जेनरल कार्नीलाफ पेट्रोग्राडकी तरफ़ बढ़ने लगा। अब यहाँ पेट्रोग्राडमें हल्ला मच गया, कि "वह आ रहा है! वह आ रहा है!!" सर्व साधारणका यह ख़याल था, कि ज़रूर मार-काट होगी; इसलिये बहुतेरे सेठ-साहूकार जवाहिरातकी पोटलियाँ बाँध-बाँध कर मास्कोकी तरफ़ भाग गये। इधर करेन्सकीने इस नयी विपत्तिका सामना करनेके लिये सेनाएँ एकत्रित कीं। चाहिये तो यह था, कि रीगाके पासही कार्नीलाफकी मरहम-पट्टी कर दी जाती; मगर करेन्सकीके हिमायतियोंका कहना है, कि उन्होंने जान-बूझकर जेनरल कार्नीलाफको पेट्रोग्राडके निकट बढ़ आने दिया। जो कुछ भी हो, जेनरल कार्नीलाफने जब यह सुना, कि पेट्रोग्राडमें भी सेनाएँ एकत्रित हो रही हैं, तब जेनरलने सैनिक प्रकाशन-विभागके द्वारा रणक्षेत्रोंपरकी सेनाओंको फौरन पेट्रो-ग्राडकी तरफ आकर मदद पहुँचानेका हुक्म भेजा। मगर करेन्सकी जानते थे, कि जनरल कार्नीलाफ रणक्षेत्रोंपर भी सेनाओंसे अवश्य मदद लेंगे, अत: करेन्सकीने प्रधान मन्त्री और युद्ध-मन्त्रीकी हैसियतसे बेतारके तार दौड़ाकर रणक्षेत्रोंपर घोषित करवा दिया, कि जेनरल कार्नीलाफ़ बाग़ी हो गये हैं।

जब जेनरल कार्नीलाफ पेट्रोग्राडसे ३०।४० मीलकी दूरीपर रह गये, तब सरकारी सेनाओंने जाकर उनका मुकाबिला किया।

इधर बोल्शेविकोंको यह चिन्ता थी, कि अगर पेट्रोग्राड इस लड़ाई-झगड़ेमें पड़ गया, तो सोवियटका चुनाव पिछड़ जायेगा। इसलिये बोल्शेविकोंने अपने गुप्त दूत दौड़ाकर कार्नीलाफ़की सेनाओंमे इस आशयके पर्चे बँटवाने शुरू किये, कि कार्नीलाफ पूँजीवादियोंसे मिला हुआ है और पेट्रोग्राडपर क़ब्ज़ा करके मज़दूरों और सैनिकोंके साम्यवादी आन्दोलनको नष्ट करना चाहता है, उसका साथ छोड़ दो! बोल्शेविकोंके इस आदेशका पहुँचना हुआ, कि कार्नीलाफकी सेना बाग़ी हो गयी और दूसरे ही दिन सैनिक-कमेटीने जेनरल कार्नीलाफको गिरफ्तार कर लिया!

जेनरल कार्नीलाफके विद्रोहके कारण सबको आँखें खुल गयीं। अब नरम और गरम, सभी साम्यवादियोंको इस बातकी फ़िक्र हुई, कि पूँजी-वादियोंकी इन भयंकर चालोंसे बचनेके लिये अपना पक्ष मज़बूत बनानेकी आवश्यकता है।

पहली चाल !

१८

पाठक जानते हैं, कि 'ड्यूमा' केवल ज़ारके सुधार क़ानूनोंके आधारपर बनी हुई व्यवस्थापक-सभा थी। उसमें जनताके सच्चे प्रतिनिधि बहुत कम थे; पूंजीवादी और ज़मींदार-पार्टीके लोगही अधिक थे। लेकिन जब पूंजीवादी प्रधान मन्त्री प्रिन्स ल्वौफ, मिल्यूकाफ, गचकाफ आदि इस्तीफ़ा देकर अलग हो गये, तब ड्यूमाका महत्व जाता रहा। एक प्रकारसे ड्यूमा व्यर्थ हो गयी। सोवियटकी अखिल रूसी केन्द्र प्रतिनिधि-सभा यही चाहती थी, कि मन्त्रि-मण्डलपर हमारा प्रभाव रहे। अतः उसने साम्यवादी क्रान्तिकारी-दलके नेता करेन्सकीको साम्यवादी-मन्त्रिमण्डल क़ायम करनेकी आज्ञा दी। करेन्सकीने प्रधान मन्त्रीका पद तो स्वीकार कर लिया था, लेकिन उनका विचार था, कि पूँजीवादी-दलके कुछ लोग ज़रूर मन्त्रिमण्डलमें रखे जायें; क्योंकि यदि पूँजी-वादी अपने मिल-क़ारख़ाने बन्द कर देंगे, तो मज़दूर-दलकी सत्ता कम पड़ जायेगी; दूसरे, लड़ाईका सामान बनना बन्द हो जायेगा। इस स्वार्थके कारण करेन्सकी बराबर अमीरोंका पक्ष लेते रहे। २६ अगस्तकी विशेष राष्ट्रीय-प्रतिनिधि-सभा (मास्को) में भी करेन्सकीने

अपना ज़ोर डालकर पूँजी-वादी-दलके साथ सहयोग रखने और युद्ध जारी रखनेके प्रस्ताव पास करा लिये थे। पूँजी-वादियोंको शामिल रखनेके कारण स्वयं करेन्सकीपर उसके दलवाले—साम्य-वादी क्रान्तिकारी दलके लोग—सन्देह करने लग गये थे, लेकिन करेन्सकीके सिवा उनके पास कोई ज़ोरदार नेता भी नही था, करते तो क्या करते ?

जेनरल कार्निलाफके विद्रोहके बाद, करेन्सकीका दल मन्त्रि-मण्डलपर बहुत बिगड़ा और उसने स्पष्टतः घोषित किया, कि पूर्णतः साम्यवादी मन्त्रियोंका मन्त्रि-मण्डल क़ायम किया जाये; क्योंकि पूँजीवादी-दल फिरसे षड्यन्त्र रच कर शासन-सत्तापर अधिकार जमाना चाहता है। करेन्सकीको यह बात माननी पड़ी और अन्तमे पाँच आदमियोंका एक अस्थायी कार्यकारी-मण्डल क़ायम किया गया। इस प्रकार ड्यूमाकी मृत्यु हो गयी, और ड्यूमाके सदस्य, जो कि अधिकतर पूँजीवादी थे, निराश होकर चुप हो रहे। लेकिन उन्होंने मन्त्रि-मण्डलके कार्यमें बाधा डालनेके लिये धीरे-धीरे अपने मिल और कारख़ाने बन्द करने शुरू कर दिये। करेन्सकीको फिर भय उत्पन्न हुआ, कि साम्यवादी-दलकी की हुई ग़लतीका फल मुझपर आ पड़ेगा, अर्थात् युद्ध-सामग्री न मिलनेसे युद्धमें हार होगी और हार निश्चित थी; क्योंकि पेट्रोग्राडसे सिर्फ ६०-७० मीलपर रीगा शहरमें जर्मन-जहाज़ मोर्चा बाँधे डटे हुए थे।

बोल्शेविकोंने अपनी शक्तिका अन्दाज़ा लगानेके लिये एक

अच्छी चाल चली। उन्होंने सोवियटमें आन्दोलन उठाया, कि सोवियटकी केन्द्र-सभाका चुनाव जल्द किया जाये। लेकिन केन्द्र-सभामें अब भी करेन्सकीके पक्षपाती साम्यवादी-क्रान्तिकारी दल, मेन्शेविकी दल तथा स्वतन्त्र लोक-सत्ता-वादी दलके प्रतिनिधि अधिक थे। करेन्सकी खूब समझते थे, कि ज़िला-सोवियटों और प्रान्तिक तथा स्थानिक सोवियटोंमें बोल्शेविकोंकी बहुसंख्या हो चुकी है; अतः ज्योंही केन्द्र-सभा (जेनरल कार्य-कारिणी-कमेटी) का चुनाव किया गया, त्योंही मेरा मन्त्रि-मण्डल रद्द कर दिया जायेगा। अतः सोवियटकी केन्द्र-सभाका चुनाव बराबर टलता गया।

तब बोल्शेविकोंने सोवियटकी केन्द्र-सभा और करेन्सकीमें फूट डालनेका दाँव खेला। लेनिन और ट्राट्स्कीने केन्द्र-सभाको एक सार्वजनिक कान्फरेन्स (Democratic conference) बुलानेके लिये उत्साहित किया। करेन्सकीकी पार्टी इस ताल-पट्टीमें आगयी और २७ सितम्बरको यह कान्फरेन्स पेट्रोग्राडमें बुलायी गयी।

इस कान्फरेन्सका मुख्य उद्देश्य था, कि देश-भरकी पार्टियोंके प्रभावानुसार निश्चित संख्यामें प्रतिनिधि आयें और मन्त्रि-मण्डलके निर्माण तथा अस्थायी प्रतिनिधि-सभा (The Provisinal Council of Russian Republic) का चुनाव करें।

करेन्सकी सोवियट-आन्दोलनसे ऊब गये थे और उन्हें सदा

भय रहता था, कि एक-न एक दिन, जब केन्द्र-सभाका चुनाव हो जायेगा, तब हमारा मन्त्रि-मण्डल टूट जायेगा। अतः उन्होंने भी अस्थायी प्रतिनिधि-सभाकी स्थापना अपने लिये हितकर समझ कर कान्फरेन्स बिठलानेकी राय दे दी; लेकिन कान्फरेन्समें किस दलके प्रतिनिधि कितनी तादादमें आ सकेंगे, यह बात करेन्सकीने अपने ही हाथमें रखी। न मालूम क्यों, साम्यवादी-क्रान्तिकारी-दलने करेन्सकीका यह हठ भी स्वीकार कर लिया।

पहले इस सार्वजनिक कान्फरेन्समें इस प्रकार प्रतिनिधियोंकी संख्या निश्चित हुई थी :—

प्रतिनिधि—	दलका नाम—
१००	अखिल मज़दूर-सैनिक-सोवियटसे
१००	अखिल किसान-सोवियटसे
५०	प्रान्तिक मज़दूर-सैनिक-सोवियटसे
५०	ज़िला किसान-कमेटियोंसे
१००	व्यापार-समितियोंसे
८४	रण-क्षेत्रोंकी सैनिक-कमेटियोंसे
१५०	श्रमजीवी-किसानोंकी को-आपरेटिव सोसाइटियोंसे
२०	रेलवे-कर्मचारी-कमेटीसे
१०	डाक-तारके कर्मचारियोंकी कमेटीसे
२०	व्यापारियोंके क्लर्कोंकी कमेटीसे
१५	डाक्टरों, सम्पादकों और वकीलोंसे
५०	ज़िला-बार्डों (जेम्सटोवों) से

५९ पोलैंड, उक्रेन आदि प्रान्तोंसे।

लेकिन प्रतिनिधियोंकी संख्यामें दो तीन बार घटाव-बढ़ाव किया गया और अन्तमें करेन्सकीने ऐसी संख्या रखी, कि बोल्शेविकोंका बहुमत इस कान्फरेन्समें भी न रह सके, अर्थात्—

प्रतिनिधि—	दलका नाम—
३००	मज़दूर सैनिक-किसान सोवियटसे
३००	को-आपरेटिव-सुसाइटियोंसे
३००	म्युनिसिपैलिटियोंसे
१५०	सैनिक कमेटियोंसे
१५०	प्रान्तिक जेम्स्टोवोंसे
२००	व्यापार-समितियोंसे
१००	पोलैंड, उक्रेन प्रान्तोंसे
२००	अन्य छोटे-छोटे सम्प्रदायोंसे

इस कान्फरेन्समें, करेन्सकीने जैसा चक्र घुमाया था, वैसा ही हुआ। सोवियट-केन्द्र-सभाने स्वयं अपने पैरोंमें कुल्हाड़ी मारी, अर्थात् अभी तक वह मन्त्रि-मण्डलपर पूरा अधिकार रखती थी, लेकिन इस कान्फरेन्समें उसने देखा, कि पूँजीवादियों और समझौता-वादियोंकी बहुत बड़ी संख्या आ पहुँची। बोल्शेविक तो यह चाहते ही थे, कि केन्द्र-सभाका प्रभाव नष्ट हो जाये और सबको नयी केन्द्र-सभाके चुननेकी ज़रूरत जान पड़ने लगे।

कान्फरेन्समें करेन्सकीके समर्थक बहुतेरे थे। मेन्शेविकी दल जी-जानसे कोशिश कर रहा था, कि पूँजीवादियोंको मन्त्रि-मण्डल-

में शामिल कर लिया जाये और ऐसा ही हुआ। प्रस्ताव पास हुआ, कि मन्त्रि-मण्डलमें पूँजीवादी भी शामिल कर लिये जायें और मेन्शेविकी भी बढ़ाये जायें।

दूसरे प्रस्ताव द्वारा एक व्यवस्थापिका सभाके ढङ्गकी (Council of Russian Republic) नामको एक स्थायी प्रतिनिधि-सभा स्थापित की गयी। जिस प्रकार कान्फरेन्समें पूँजीवादियों और मेन्शेविकोंका बहुमत था, उसी प्रकार इस अस्थायी प्रतिनिधि-सभामें भी उनका बहुमत था। दिल्लगी यह थी, कि इस सभाको सिर्फ सलाह-भर देनेका अधिकार था, इसके ऊपर निरंकुश मन्त्रि-मण्डल था, जो इस प्रतिनिधि सभाकी बिना सम्मति लिये, मनमानी कार्रवाई कर सकता था। आठ महीनेके अन्दर यह पाँचवों वार मन्त्रि-मण्डल क़ायम हुआ था।

इस प्रकार करेन्सकी सोवियटके भयसे मुक्त हुए, लेकिन क्या सचमुच सोवियटका उन्हे डर नहीं रहा ?

पूँजीवादियोंका राज्य

अब घटना-क्रमका वह झुकाव आ पहुँचा है, कि हमारे पाठक ज़रा गौरके साथ सोवियटकी वास्तविक स्थिति समझ लें। हम बतला चुके हैं, कि इनमें तीन समुदाय सम्मिलित थे। मज़दूर, सैनिक और किसान,—ये तीनों दो पार्टियोंके अनुयायी थे। कुछ मज़दूर, सैनिक और किसान तो नरम साम्यवादी यानो मेन्शेविकी और साम्यवादी-क्रान्तिकारी दलके थे और कुछ स्वतन्त्र-लोकसत्तावादो एवं बोल्शेविक-दलके थे। मार्चसे अगस्त तक इन सोवियटोंमे नरम साम्यवादी ही अधिक रहे और वे करेन्सकीकी मदद करते रहे। नरम साम्यवादी यहाँतक अधिक थे, कि ड्यूमा तकको तोड़कर अपनी सोवियट द्वारा ही रूसपर शासन करते रहे। लेकिन अगस्तमें देश-भरकी स्थानीय, ज़िला तथा प्रान्तिक सोवियटोंका नया चुनाव हुआ, जिसमें मेन्शेविकी अर्थात् नरम साम्यवादी वहुत कम चुने गये। अब रह गया, पेट्रोग्राडमें रहने वाली केन्द्र-सभा अर्थात् अखिल रूसी सोवियटकी कार्य-कारिणी कमेटीका चुनाव। जब करेन्सकीके दल—साम्यवादी क्रान्तिकारी-दल—ने देखा, कि पेट्रोग्राडकी नगर-सोवियट, कीव,

मास्को, उडेसा आदि और-और प्रान्तोंकी सभी सोवियटोंमें बोल्शेविकोंकी बड़ो भारी तादाद है, तब उन्होंने केन्द्र-सभा अर्थात् "कार्य-कारिणी-सोवियट" का चुनाव टाल दिया। इसका तात्पर्य यह था, कि उसमें अभी तक मेन्शेविकी आदि नरम साम्यवादी थे, जो करेन्स्कीकी हाँ-में हाँ मिलाते रहते थे। उनके हो कारण पूँजोवादी मन्त्री, फिर मन्त्रि-मण्डलमें रखे गये और सोवियट-की वह सभा, जो देश-भरको प्रतिनिधि-सभा मानी जाती थी और मन्त्रि मण्डलको बनाती-बिगाड़ती थी और जिसने ड्यूमाको तोड़ दिया था, २७ सितम्बरको अस्थायी "प्रजातन्त्र-कौंसिल" (Council of Russian Republic) के हाथोंमें चली गयी। अब इसके बाद क्या होना था? यही कि मन्त्रि-मण्डल निःसंकोच सोवियट-के तोड़नेका हुक्म जारी कर दे। ऐसा ही हुआ। नये मन्त्रि-मण्डलने देश-हितके नामपर एक हुक्म निकाला, जिसमें उत्पात उठाने वाली संस्थाओंके तोड़नेकी बात कही गयी थी।

करेन्स्कीकी बोल्शेविकोंपर यह खुली चोट थी। लेनिन ताड़ गये, कि अब सुरंगोंसे काम नहीं चलेगा। खुल कर खेलना पड़ेगा।

यह रूसका क्षणिक दुर्भाग्य था, जो साम्यवादियोंके हाथमें आकर भी, देशका शासन फिर पूँजी-वादियोंके हाथोंमें चला गया। अब मन्त्रि-मण्डलमें भी पूँजीवादी अधिक थे और "प्रजातन्त्र-कौन्सिल" में भी उन्हींका बोल बाला था। पहले तो ऐसा ख़याल था, कि यह प्रजातन्त्र-कौन्सिल कायदा-क़ानून बना सकेगी; मगर बादमें मन्त्रि-मण्डलने बड़ी सहूलियतके साथ प्रकट किया, कि

इसे सिर्फ़ सलाह देने-भरका अधिकार रहेगा और जो कोई क़ानून बनेगा, वह सिर्फ़ मन्त्रि-मण्डलमें बनेगा।

तीसरी बात मन्त्रि-मण्डलने यह घोषित की, कि किसानोंको ज़मीनोंपर क़ब्ज़ा दिलाया जायेगा, लेकिन स्थायी प्रजातन्त्र-कौन्सिलके चुनावके बाद! यह घोषणा बिल्कुल झूठी थी; क्योंकि मन्त्रि मण्डलसे लेकर "प्रजातन्त्र-कौन्सिल" तक पूँजीवादियों, ज़मींदारों, बैंकरों और व्यापारियोंका बहुमत था।

इन सब चालोंको देखकर बोल्शेविक मेम्बरोंने उस नक़ली प्रजातन्त्र-कौन्सिलसे इस्तीफे दे दिये और मो० ट्राटस्कीने एक ज़ोरदार स्पीच दी, जो कि अगले अध्यायमें दी जायेगी। इन इस्तीफोंसे पूँजीवादी और भी ख़ुश हुए, कि चलो, बला टली!

अब बोल्शेविकोंके चले जानेसे पूँजीवादियोंका स्पष्ट बहुमत दोनों स्थानोंपर हो गया। करेन्सकी हाथपर हाथ रखे जाते थे और पूँजीवादी मन्त्री अपने मनके क़ानून मन्त्रि-मण्डलमें भी पास कर लेते थे। प्रजातन्त्र-कौंसिलमें होना ही क्या था? वह तो सिर्फ़ एक स्वाँग था।

पूँजीवादियोंकी यहाँ तक हिम्मत बढ़ गयी, कि उन्होंने एक दिन "प्रजातन्त्र-कौन्सिल" में अपने बहुमतकी तरफ़ इशारा करते हुए कह ही डाला, कि "जब इस कौन्सिलमें राज-सत्ताके समर्थकोंका पूर्ण बहुमत है, तब रूसको "प्रजातन्त्र" कहनेका इस सरकारको कोई हक नहीं है!"

बोल्शेविक-असहयोग

२०

जब बोल्शेविक मेम्बरोंने देखा, कि मन्त्रि-मण्डलमें भी पूँजीवादियोंका आधिक्य है और प्रजातन्त्र-कौन्सिल-में भी बहुमत है, तब उन्होंने मन्त्रि-मण्डलकी घोषणाओं और अनियन्त्रित सत्ताके विरोधमें कौन्सिलसे इस्तीफे दे दिये। मन्त्रि-मण्डलमें कोई बोल्शेविक था भी नहीं। मोशिये ट्राट्स्कीने जो कि उस समय प्रजातन्त्र-कौन्सिलके अन्दर अन्य बोल्शेविक मेम्बरोंके मुखिया थे, निम्नलिखित भाषण दिया :—

"सहयोगियो !

२७ सितम्बरको देश-भरके सर्वजातीय प्रतिनिधियोंकी जो कान्फरेन्स हुई थी, उसका अभिप्राय यह था, कि रूससे निरंकुश सत्ताधारी व्यक्तियोंकी सरकार हटाकर ऐसी सरकार बनायी जाये, जो बार-बार जेनरल कार्नीलाफ पैदा न होने दे और जिसमें इतनी शक्ति हो, कि वह युद्धको समाप्त कर सके तथा देश-भरकी "प्रतिनिधि-सभा" को निश्चित तिथिपर सङ्गठित कर सके। लेकिन उक्त कान्फरेन्सकी आड़में, हमने ध्यानके साथ देखा, कि करेन्स-कीने, पूँजीवादियोंने, मेन्शेविकियों और साम्यवादी-क्रान्तिकारी

दलके लोगोंने धोखेबाज़ीसे बिल्कुल उल्टी कार्रवाई कर दिखलायी। पहले जो उद्देश्य घोषित किये गये थे, कान्फरेन्समें उनके बिल्कुल विपरीत परिणाम उत्पन्न किये गये। इस ढोंगको रचकर अब शासनके ऊपर ऐसी सत्ता स्थापित की गयी है, जिसके बाहर-भीतर सब तरफ पूँजीवादी काम करते नज़र आ रहे हैं। मन्त्रि-मण्डलकी निरंकुशता इसी बातसे प्रकट हो चुकी है, कि उसने "प्रजातन्त्र-कौन्सिल" को क़ानून बनानेका कोई अधिकार न देकर, केवल परामर्श देने और प्रश्न पूछ लेने भरकी इजाज़त दी है! कितने आश्चर्यकी बात है, कि आठ महीनेके बाद, मन्त्रि-मण्डलने अपनी निरंकुशता छिपानेके लिये जो आड़ खड़ी भी की, वह इतनी उपहासजनक है, कि 'ड्यूमा'से भी गयी-गुजरी है। इस प्रजातन्त्र-कौन्सिलमें, पूँजीवादियोंके इतने अधिक प्रतिनिधि भर दिये गये हैं, जिन्हें देखनेसे स्पष्ट पता चल जाता है, कि वे देशकी निर्वाचन-स्थितिके अनुसार नहीं हैं; बल्कि जितनी संख्या उनकी होनी चाहिये थी, उससे वे कई गुने अधिक इस कौन्सिलमें हैं। इन्हींमें वे कैडेट्स (उदार पूँजीवादी) भी हैं, जो कल तक मन्त्रि-मण्डलको ड्यूमाकी आज्ञा बजानेका आदेश देते रहे हैं। इसी उदार पूँजीवादी-पार्टीने मन्त्रि-मण्डलको निरंकुश सत्ताधारी बनाया है। आगामी स्थायी प्रजातन्त्र-कौन्सिलमें पूँजीवादी इतनी संख्यामें कदापि न आ सकेंगे और उनकी यह निरंकुशता और उच्छृङ्खलता भी देखनेमें न आयेगी। विचारनेकी बात यह है, कि यदि पूँजीवादी लोग अगले छ हफ्ते बाद होनेवाले स्थायी चुनावके

इच्छ्ुक होते, तो इस प्रकारकी अनुत्तरदायित्वपूर्ण सरकार स्थापित करनेकी कोई आवश्यकता नहीं थी। सच बात तो यह है, कि पूँजी-वादियोंने यह निश्चय कर लिया है, कि वे प्रजातन्त्र-कौन्सिल-का चुनाव होने ही न देंगे।

"क्या आप लोग नहीं देख रहे हैं, कि क्या हो रहा है ? ठीक ऐसा ही मानिये, जैसा कि मैं कह रहा हूँ। पूँजीवादी-दल इसी उद्योगमें है, कि मौक़ा आते ही क्रान्तिकी सफलता मिटाकर, शासन-पर अपना क़ब्ज़ा कर ले। देखिये, हरएक सरकारी विभागमें गड़बड़ी और अव्यवस्था बढ़ रही है। ये पूँजीवादी ही हैं, जो किसानोंकी क्रान्तिको उभाड़ रहे हैं। ये पूँजीवादी ही हैं, जो देशमें दल-बन्दीका संग्राम फैलाये हुए हैं। इस प्रकार अव्यवस्था करके ये लोग प्रजातन्त्र-कौन्सिलको भी तोड़ देंगे और अपनी पार्टीकी सत्ता क़ायम करके जनताके प्रजातन्त्र-अधिकारोंका सब प्रकारसे अपहरण करेंगे।

"इसी प्रकार, अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें भी यह पार्टी और इसका मन्त्रि-मण्डल क़ुसूरवार है। आपही ग़ौर कीजिये, लड़ाईको छिड़े साढ़े तीन वर्ष हो गये और अभी तक राजधानीकी रक्षाका कोई उपाय नहीं सोचा गया। शत्रु की सेनाएँ छातीपर चढ़ी आ रही हैं। नगर-भरमें प्राणोंका भय व्याप रहा है और दिल्लगी सुनिये, शत्रुके डरसे सरकार यह सोच रही है, कि राजधानी मास्कोको उठा ले जायेगी। इस तबदीलीमें भी छिपी हुई चाल है ! यह तो सोचा नहीं जाता, कि इस समय युद्ध बन्द कर देने-

बोल्शेविक-लालक्रान्ति
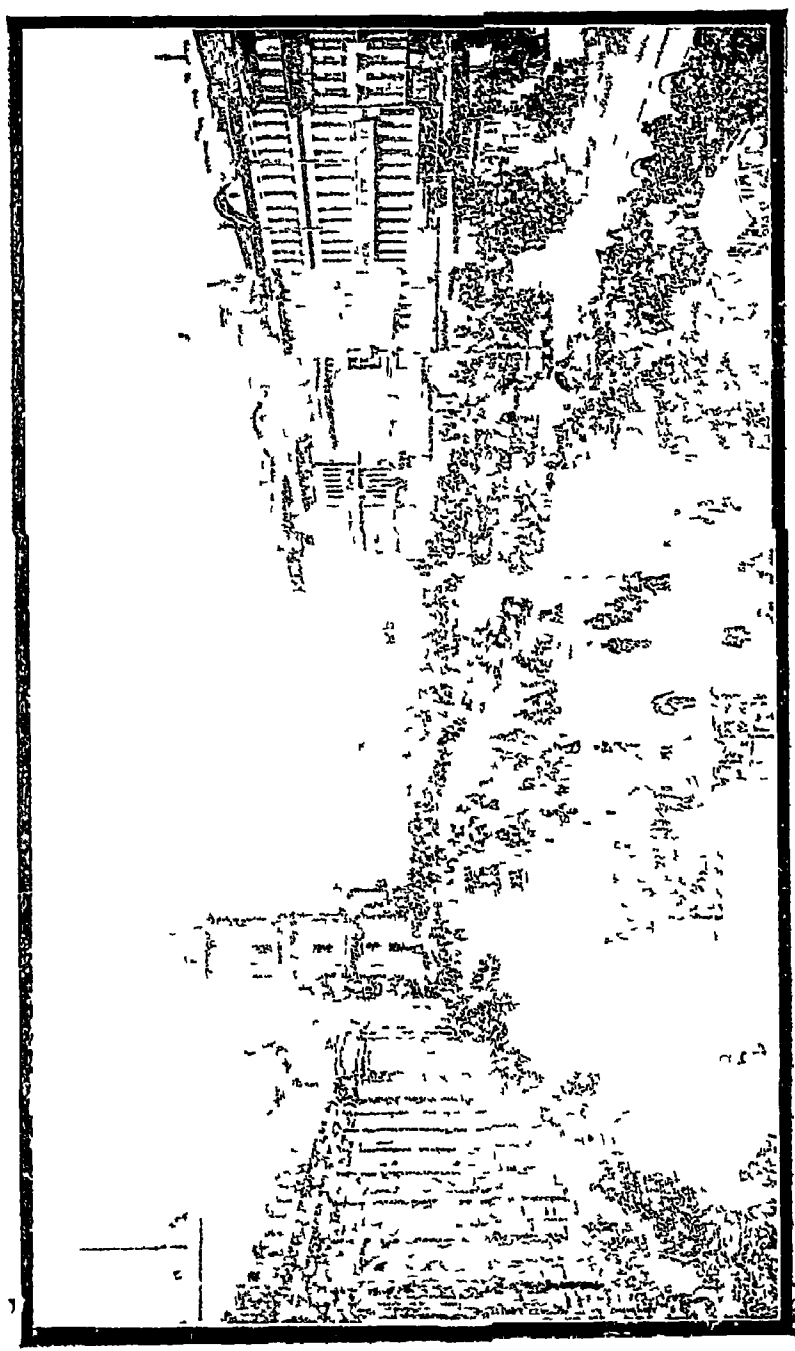
में ही देशका हित है; क्योंकि सब लोग इस युद्धसे परेशान हो चुके हैं,—थके हुए हैं। चाहिये तो यह था, कि जनताको युद्ध बन्द करनेके लिये प्रेरित करके मित्र-राष्ट्रों तथा अन्य स्वदेशी राष्ट्रोंसे परामर्श करके इस अकारण हत्याकाण्डको बन्द किया जाता। मगर सरकार पूँजीवादियोंके हाथमें कठपुतलीकी तरह नाचती हुई, मित्र राष्ट्रोंके साम्राज्यवादियोंके दिलासेपर व्यर्थमें रूसके नौजवानोंको दूसरोंकी स्वार्थ-वेदीपर अपनी मूर्खताके कारण बलि चढ़ा रही है! और सुनिये, इस हत्याकाण्डसे हाथ खींचनेवाले सैनिकोंको व्यर्थमें ही प्राण-दण्ड दिये जा रहे हैं। और इधर सिपाहियोंकी कमीके कारण राजधानी उठाकर मास्कोमें बनानेकी तैयारी हो रही है।

"ऐसे भयङ्कर समयमें जब कि, बोल्शेविक सैनिक और मल्लाह अपने प्राण देकर युद्ध कर रहे हैं, तब उनके पक्षके अखबार बन्द किये जा रहे हैं और ऐसा करनेवाले प्रधान मन्त्री, प्रधान सेनापति, एवं युद्ध मन्त्री स्वयं करेन्सकी महोदय हैं।

"इसलिये, साम्यवादी-लोकसत्तावादी-दलके हम बोल्शेविक मेम्बर, जनतासे विश्वासघात करनेवाली इस सरकारसे अपना सम्बन्ध विच्छेद करते हैं। हमारा उस सर्वसाधारणके हत्या-काण्डसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, जो शासनके पर्देमें इस निरंकुश सत्ता द्वारा हो रहा है। हम किसी प्रकारसे, एक दिनके लिये, भी इस जघन्य कार्यका पक्ष-समर्थन नहीं कर सकते। जब कि कैसर विलियमकी फ़ौजें पेट्रोग्राडपर चढ़ाई बोलनेकी धमकी दे

रही हैं, तब करेन्सकी और पूँजीवादियोंकी सरकार मास्को भाग जाना चाहती है और वहाँ एक दूसरी क्रान्तिका सामान जुटाना चाहती है!

"इसलिये हम मास्कोके मज़दूरों, सैनिकों और किसानोंको चेतावनी देते हैं, कि वे सावधान हो जायें। इस कौन्सिलको छोड़ते समय, हम रूस-भरके श्रमजीवियोंकी बुद्धि और मनुष्यता-से अपील करते हैं, कि पेट्रोग्राड खतरेमें है! क्रान्ति खतरेमें है! इस सरकारने खतरा खड़ा किया है। पूँजीवादियोंने कठिनाई बढ़ायी है। अब केवल रूसकी जनताही अपनी तथा अपने देशकी रक्षा कर सकती है!

अन्तमें हम यह शुभकामना करते हैं, कि शीघ्र होनेवाली, सच्ची और लोकसत्तात्मक सन्धि स्थायी हो! सब शक्ति सोवि-यटके हाथमें रहे, सब ज़मीन जनताके अधिकारमें रहे और प्रति-निधि सभा चिरञ्जीवी हो!!"

ट्राट्स्कीके साथ साथ समस्त बोल्शेविक मेम्बर प्रजातन्त्र-कौन्सिलसे उठ आये। एकदम सन्नाटा छा गया। लेकिन नरम दलके साम्यवादी चुप बैठे रहे। पूँजीवादी मेम्बर अपना बहुमत प्रकट होते देखकर मन-ही मन आनन्दित हुए!

प्रान्तोंमें बगावत

प्रजातन्त्र-कौन्सिलसे बोल्शेविकोंके निकल आनेसे पूँजी-वादियोंके लिये तो आनन्द हो गया था, लेकिन दूसरी तरफ मेन्शेविकी तथा उग्र साम्यवादी-क्रान्तिकारी-दल अल्प-संख्यामें रह जानेके कारण खीज उठा था। अब ऐसी हालतमें इन नरम साम्यवादियोंने कौन्सिलके अन्दर "सन्धि" करनेकी पुकार शुरू की और किसानोंको फौरन ज़मीन देने तथा मिलोंके प्रबन्धमें मज़दूरोंको अधिकार सौंपनेपर ज़ोर दिया। असलमें यह कार्यक्रम बोल्शेविकोंका था, जिसे अब मेन्शेविकी और साम्यवादी-क्रान्तिकारी-दलके लोग आगे बढ़ा रहे थे।

स्वतन्त्र मेन्शेविकी दलके प्रधान नेता मोशिये मारटावने एक दिन कुढ़कर कौन्सिलमें यह ज़ोरदार व्याख्यान दियाः—

"तुम हमको पराजय-इच्छुक समझते हो, लेकिन पराजय-इच्छुक वे हैं, जो सन्धिमें देर लगाकर रूसका नाश किया चाहते हैं और सचमुच पराजय बुलानेकी कोशिशमें हैं। वे ऐसा अवसर बुला रहे हैं, जब रूसी सेनाओंका नाम-निशान तक बाक़ी न रहे और तब रूस साम्राज्यवादी देशोंके लिये हिस्सा बाँटका

सौदा हो जाये। तुम लोग पूँजी-वादियोंके स्वार्थोंको पूर्तिके लिये रूसी जनताको प्रेरित करना चाहते हो।......सन्धिका प्रस्ताव जल्दसे जल्द उठाना चाहिये और सन्धि हो जानेके बाद, तुम्हारी समझमें आ जायेगा कि, जिन्हें तुम जर्मनीके गुप्तचर समझते थे, वे सच्चे देश-भक्त निकले और उन्होंने रूसकी भलाईके लिये ही सन्धिको परमावश्यक समझा था।......"

इस प्रकार साम्यवादी-क्रान्तिकारियों और नरम साम्यवादियों-को उन्हींके एक अंश (स्वतन्त्र-मेन्शेविकियों) ने लज्जित करना शुरू कर दिया।

इसी समय मित्र-राष्ट्रोंने रूसी-सरकारके पास खरीता भेजा, कि १० नवम्बरको पेरिसमें मित्र-राष्ट्रोंकी एक कान्फरेन्स होगी। रूसके साम्यवादी बहुत दिनोंसे यह पुकार मचा रहे थे, कि आखिर इस युद्धका उद्देश्य क्या है, उसको फिरसे प्रकट करना चाहिये; अन्यथा रूस इस युद्धमें क्यों शामिल रहे? लेकिन मित्र-राष्ट्रोंने यह स्पष्ट रूपसे नहीं लिखा था, कि युद्धके उद्देश्योंपर बहस होगी; बल्कि बादमें ब्रिटिश पार्लामेण्टके भीतर एक प्रश्नके उत्तरमे यह भी कहा, कि इस मित्र-राष्ट्रीय कान्फरेन्समे सिर्फ युद्धको अच्छे ढङ्गसे संचालित करने मात्रका विषय छेड़ा जायेगा।

रूसी मन्त्रि-मण्डलने, इस कान्फरेन्सको ग़नीमत समझकर अपनी बात रखनेके लिये, जेनरल अलिम्जीव तथा परराष्ट्र-मन्त्री टेरशेन्कोको पेरिस भेजना निश्चित किया। दूसरी तरफ सोवियटने स्कोविलोवको चुना और उनके साथ रूसके युद्ध-उद्देश्योंका एक

प्रस्ताव भी भेजना निश्चित किया। यह प्रस्ताव सरकारी नीतिके बिल्कुल ख़िलाफ़ था। मन्त्रि-मण्डलने भी इसका विरोध किया और पेट्रोग्राडमें रहनेवाले मित्र-राष्ट्रोंके राजदूतोंने भी नापसन्द किया।

अब सोचनेकी बात यह है, कि सोवियटको हर मामलेमें अपना निर्वाचित प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार था; इस अधिकार-को ज़ब्त करनेके लिये ही मन्त्रि-मण्डलने स्कोबिलीवको पेरिस भेजना अस्वीकार किया। दूसरे, अभीतक सोवियट ही देशकी प्रधान नीति-सञ्चालक-संस्था मानी जाती थी, सो उसका प्रस्ताव भी नापसन्द किया गया। इस घटनासे प्रान्तिक सोवियटोंको भी क्रोध मालूम हुआ और रण-क्षेत्रोंपरकी सैनिक-कमेटियाँ,जोकि शीघ्र सन्धि चाहती थीं, असन्तुष्ट हो गयीं। फल-स्वरूप पेट्रोग्राडमें रहनेवाली केन्द्र-सोवियटने अपना घोर अपमान अनुभव किया।

बोल्शेविकोंके लिये यह प्रसन्नताकी बात थी; क्योंकि उनके प्रतिनिधि स्थानिक और प्रान्तिक सोवियटोंमें तो बहुमत रखते थे, लेकिन केन्द्र-सोवियटमें मेन्शेविकियोंका ही अभीतक (जबतक नया चुनाव न हो जाता) बहुमत था। जब मेन्शेविकियोंकी बात मन्त्रि-मण्डलने रद्द कर दी, तब बोल्शेविकोंको यह प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ा कि, अब करेन्स्कीके मन्त्रि-मण्डलकी सहायता पहुँचानेवाले नरम साम्यवादी भी हमारे साथ आ जायेंगे।

इस बातको निश्चित समझ कर बोल्शेविकोंने रण-क्षेत्रोंपरकी सैनिक-कमेटियोंको अच्छी तरहसे सूचित कर दिया,कि यह मन्त्रि-मण्डल सन्धि करने नहीं जा रहा है,बल्कि पेरिस-कान्फरेन्सके बाद

भी, मित्रोंकी ताल-पट्टीमें आकर युद्ध जारी रखेगा। उधर सैनिक-दल शीघ्र सन्धिकी नित्य पुकार मचा रहा था। जब उसने देखा, कि हम लोग कुत्तोंकी मौत मर रहे हैं, तब भी सन्धि करनेके लिये हमारी सरकार तैयार नहीं है, तब हमही क्यों न सन्धि करना शुरू कर दें?

सेनाके इस सन्धि-आन्दोलनके उत्तरमें परराष्ट्र-मन्त्री टेरशेन्कोने एक लम्बी वक्तृता देकर प्रजातन्त्र-कौन्सिलमें सरकारी मन्शा ज़ाहिर की। उसका निचोड़ यह था, कि हम मित्र-राष्ट्रोंके साथ पूरी मित्रता रखते हैं और अन्ततक युद्ध करेंगे। चूँकि, मित्र-राष्ट्र, सावियटके सन्धि-प्रस्तावको नापसन्द करते हैं, अतः हम भी उसे नापसन्द करते है।

सेनाका एक अंश अर्थात् कोसक-सैनिक-दल अभीतक सरकारके कहेमें था, लेकिन जब उन्हें मालूम हुआ, कि कार्नीलाफपर मुकद्दमा चलाया जायेगा और उनके दूसरे नेता कैलडीन बर्खास्त कर दिये गये, तो उनमे भी असन्तोष फैल गया। डान प्रान्तमें, जोकि कोसकोंका प्रधान स्थान था, स्वतन्त्र प्रजातन्त्र स्थापित हो गया था। उसकी देखा देखी कुबान प्रान्तके कोसकोंने भी स्वाधीनताकी घोषणा कर दी। कोसकोंका यह इरादा था, कि समस्त दक्षिणी-पूर्वीय रूसपर अपना राज्य स्थापित कर लेंगे और रूसी सरकारसे सम्बन्ध तोड़कर "सैनिक-एकतन्त्र-सत्ता" क़ायम करेंगे। इसी गरजसे कोसक-सैनिकोंने खारकावकी कोयलेकी खानोंपर भी कब्ज़ा कर लिया। इस आन्दोलनके नेता थे, कैलडीन, डूटाव,

केरूलाव तथा वारडिज़ी आदि। सन्धिको होते न देख कर और रूसी मन्त्रि-मण्डलकी निरंकुश कार्रवाइयोंको नापसन्द करके कई अन्य प्रान्तोंमें भी अराजकता फैल गयी थी। लोग सोचने लगे थे, कि ऐसी अत्याचारी सरकारके साथ सहयोग रखना और अपने प्रान्तका धन युद्धमें पानीकी तरह बहाना स्वयं अपनी तबाही बुलानेके बराबर है।

उक्रेन, फिनलैंण्ड, पोलैण्ड, सफेद रूस आदि प्रान्तोंमें भी असन्तोष फैला और उनकी प्रान्तिक सरकारें रूसी सरकारसे स्वाधीनता माँगने लगीं। विवाद यहाँतक बढ़ा, कि उन्होंने मन्त्रि-मण्डलकी आज्ञाओंका पालन करना बन्द कर दिया; प्रान्तिक सरकारोंने सैनिक भेजने तथा आर्थिक सहायता देनेसे इनकार कर दिया। कोव प्रान्तमें पूँजीवादियोंने अमीरोंका राज्य स्थापित किया और दक्षिणी रूसके समस्त बड़े-बड़े ज़मींदारोंने उनका साथ दिया। उन्होंने एक सेना भी सङ्गठित कर ली। साथ ही उक्रेन प्रान्तमें मन्त्रि-मण्डल भी क़ायम हो गया और उसके प्रधान-मन्त्री विनीशेन्कोने जर्मनोंसे अलग सन्धि कर लेनेका विचार प्रकट किया। साइबेरिया और काकेशस प्रान्तोंने अपनी अलग प्रजातन्त्र-कौन्सिल क़ायम करनेकी घोषणाएँ कीं। इन समस्त प्रदेशोंमे सोवियट-आन्दोलन ज़ोर पकड़ गया।

पूँजीवादियोंके प्रभावको एकदम नष्ट करनेकी आवश्यकता थी। बोल्शेविक-दल इसी प्रयत्नमें लगे हुए थे। अनेक प्रान्तोंमे सोवियटों द्वारा मन्त्रि-मण्डलकी अयोग्यता सिद्ध की जा रही थी। इसका प्रभाव यह पड़ा, कि प्रान्तीय सरकारें बाग़ी होनेपर तुल गयीं। दूसरी तरफ बोल्शेविकोंने रण-क्षेत्रोंमें यह खबर पहुँचायी, कि मन्त्रि-मण्डल सन्धिके विरुद्ध है और व्यर्थमें सैनिकोंको मित्र-राष्ट्रोंकी स्वार्थ-पूर्तिके निमित्त कटाना चाहता है। पाठक जानते हैं, कि रण-क्षेत्रोंपरकी सेनाओंमें सैनिकोंने अपनी-अपनी कमेटियाँ स्थापित कर ली थीं। मन्त्रि-मण्डलने ज्यों-ज्यों इन कमेटियोंके तोड़नेकी कोशिश की त्यों-त्यों इनकी शक्ति प्रबल होती गयी; यहाँतक कि बहुतेरी कमेटियोंने अपने अफसरोंको गोली मार कर ढेर कर दिया और अपने वोट द्वारा नये अफ़सर नियुक्त किया। कहना नहीं होगा, कि इन सैनिक कमेटियोंमें बोल्शेविक मतके लोग ही अधिक अथवा सब-के-सब थे। मुख्य कारण यह था, कि रण-क्षेत्रोंपरके सैनिक युद्ध बन्द करके स्वदेशको लौटना चाहते थे।

जब बोल्शेविकोंका उपर्युक्त सन्देश सैनिकोंके पास पहुँचा, तब

सैनिक कमेटियोंने युद्ध बन्द करना निश्चित करके रणक्षेत्रोंको छोड़ना आरम्भ कर दिया।

सरकारने ज्यों-ज्यों दमन करनेपर कमर कसी, त्यों-त्यों देशमें गड़बड़ी बढ़ती गयी। टैम्बाव और टेवर ज़िलोंके किसानोंने ज़मीदारोंका क़त्लेआम शुरू कर दिया और भूमिपर क़ब्जा जमाना शुरू कर दिया। तीसरी ओर मज़दूर भी चुप नहीं थे। उन्होंने मास्को, कीव, उडेसा तथा पेट्रोग्राडमें हड़तालें आरम्भ कर दीं। रणक्षेत्रोंमें सामानका पहुँचना बिल्कुल बन्द हो गया। रही-सही सेनाएं भी भाग चलनेकी तैयारी करने लगीं।

देशकी आर्थिक स्थिति सुधारनेके लिये सरकारने एक कान्फरेन्स बिठलायी; मगर पूँजीवादियोंने उसमें ऐसा ऊधम मचाया, कि मज़दूर-दल और भी चिढ़ गया। फल यह हुआ, कि मार-पीटकी नौबत आने लगी। अन्तमें करेन्स्कीने इस कान्फरेन्सको बर्ख़ास्त कर दिया। पूँजीवादी सैनिक अफ़सरोंने फिर सैनिकोंके लिये कड़े क़ानून बनानेकी सलाह दी। दूसरी तरफ़ नौ-सैनिक मन्त्री वर्डरवस्की तथा युद्ध-मन्त्री वरखोवस्कोने असन्तुष्ट सैनिकोंसे समझौता करके आज्ञाकारिताकी स्थापना करनी चाही; मगर मर्ज़ बहुत बढ़ गया था; कोई भी दवा कारगर न हुई। नित्य सैनिकोंके दलके दल सीमान्तपरसे वापस आने लगे।

२३ अक्टूबरको रीगाकी खाड़ीमें जर्मन जहाज़ोंसे फिर एक मुठ-भेड़ हो गयी। अब यह निश्चित सा था, कि सरकार पेट्रोग्राड छोड़कर मास्को भाग जायेगी।

लेनिन घबराये, कि यदि सरकार चली गयी, तो मन्त्रि-मण्डल-पर कब्ज़ा करना कठिन हो जायेगा, अतः बोल्शेविकोंने पोस्टर और पर्चे छापकर प्रकट किया, कि सरकार क्रान्तिकी महत्ताको नष्ट करनेकी दृष्टिसे पेट्रोग्राड छोड़ना चाहती है। रीगा जर्मनोंके हाथ बेच ही दिया गया है और पेट्रोग्राड भी दिया जानेवाला है!

मगर पूँजीवादी अख़बार बड़े खुश थे। "रेच" समाचार-पत्रने लिखा था, कि "मास्कोकी शान्त आबहवामें सरकार निर्विघ्न रूपसे राज-काज सम्हाल सकेगी, वहाँ उपद्रवियोंकी दाल न गलने पायेगी।" उदार पूँजीवादियोंके नेता रोडजिन्को (भूतपूर्व सभापति, ड्यूमा) ने अपने "उट्रोरूसी" में बड़ी बेहयाईके साथ लिखा—पेट्रोग्राड ख़तरेमें है। ईश्वर पेट्रोग्राडकी रक्षा करे। क्रान्तिकारियोंका कहना है, कि यदि पेट्रोग्राड हाथसे निकल गया, तो क्रान्तिकारी संस्थाओंका नाश हो जायेगा। इसके उत्तरमें मैं कहता हूँ, कि ये संस्थाएँ जिस दिन नष्ट हो जायेंगी, उस दिन मुझे खुशी होगी; क्योंकि इनका अस्तित्व रूसके लिये केवल नाश बुला रहा है। पेट्रोग्राडके शत्रुओंके हाथमें जाते ही, बाल्टिक-बेड़ा भी नष्ट हो जायेगा, लेकिन लोग अच्छी तरहसे जानते हैं, कि उक्त नौ-सैनिक बेड़ेके सैनिक काम छोड़े हुए क्रान्तिकारियोंके साथ हो चुके हैं। ऐसे बेड़ेके होने और न होनेसे क्या लाभ है?

लेकिन पेट्रोग्राडकी जनताके घोर आन्दोलन करनेपर मन्त्रि-मण्डलने मास्को जाना स्थगित कर दिया। अब बोल्शेविकोंने अपना भयङ्कर उपाय आरम्भ किया। उन्होंने

घोषणा की, कि अखिल रूसी सोवियटकी केन्द्र सभाका चुनाव २ नवम्बरको होगा और केन्द्र-सभा रूसका शासन अपने हाथोंमें ले लेगी। नरम साम्यवादियोंने हरचन्द कोशिश की और मन्त्रि-मण्डलने भी चाहा, कि यह चुनाव न होने पाये और सोवियट-प्रतिनिधि-कान्फरेन्स स्थगित रहे, लेकिन बोल्शेविकोंने देश-भरकी सोवियटों और सैनिक-कमेटियोंको अपने-अपने प्रतिनिधि ठीक समयपर भेजनेका आदेश भेज दिया और तार भेजकर सबको निश्चय दिला दिया, कि २ नवम्बरको पेट्रोग्राडमें आ जाओ।

बारिकोंमें जाकर, बोल्शेविकोंने सैनिकोंको अपनी मददके लिये ठीक कर लिया, और जहाँ-जहाँ सोवियटके चुनावका विरोध खड़ा हुआ, वहाँ-वहाँ स्वयं जनताने बोल्शेविकोंका खुले तौरपर पक्ष लिया और प्रतिनिधि-निर्वाचित करके भेजना तय किया। रणक्षेत्रोंसे लौटे हुए सैनिक पेट्रोग्राडकी सड़कोंपर व्याख्यान देते फिरते थे, कि करेन्स्कीकी सरकारको नष्ट कर दो।
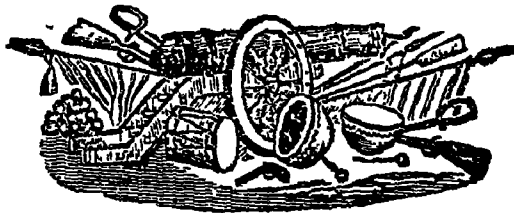
बोल्शेविकोंकी तैयारी

दूसरी नवम्बरको, बोल्शेविकोंने अखिल रूसी सोवियट-कांग्रेसकी तिथि निश्चित की थी। इस सोवियट कांग्रेसकी तिथि ज्यों-ज्यों निकट आती जाती थी, त्यों-त्यों करेन्सकीका हृदय व्याकुल हो रहा था ; क्योंकि सोवियटोंके हाथमें ही सेना और मज़दूर थे। इस अवस्थामें यदि सोवियट-कांग्रेस यह प्रस्ताव पास कर दे, कि सैनिकगण प्रेट्रोग्राडपर कब्ज़ा कर लें, तो वैसा ही किया जाता। मन्त्रि-मण्डल अथवा प्रजातन्त्र कौंसिल बैठी गाल बजाया करती। नरम साम्यवादियोंको यही भय था।

लेकिन इस कांग्रेसको रोकनेके लिये विपक्षियोंकी ओरसे कोई प्रयत्न उठा नहीं रखा गया। नरम साम्यवादियोंने अपने गुप्तचरोंको भेजकर हर एक शहरमें,यह कोशिश की, कि कांग्रेसके लिये प्रतिनिधि न भेजे जायें। जहाँ हो सकीं, वहाँ विरोध-सभाएँ भी की गयीं और प्रस्ताव पास किये गये, कि स्थायी प्रजातन्त्र-कौंसिलका चुनाव तो निकट आ ही रहा है, तब फिर क्यों यह कांग्रेस की जा रही है। इस कांग्रेसके होनेसे देशमें फूट फैल जायेगी। घरेलू युद्ध जारी हो जायेंगे।

लेकिन अब बोल्शेविक नेता बैठे हुए मुसकुरा रहे थे। उनके हाथमें प्रबल पक्ष आ चुका था। उनकी तैयारी कई गुनी अधिक और प्रबल थी। हज़ारों प्रचारक रूस-भरमें फैले हुए थे। बीसियों अख़बार उनका पक्ष-समर्थन कर रहे थे। लाखों पोस्टर और परचे छापकर नित्य बाँटे जा रहे थे।

पेट्रोग्राडमें, बोल्शेविकोंके दो दैनिक पत्र थे। "रबोची-पुट" श्रमजीवियोंका था और "सोल्डेट" सिपाहियोंके लिये था। अक्टूबरके दूसरे सप्ताहसे, "डेरीवे-स्कम बेडनोटा" नामक एक बड़ा भारी दैनिक निकलना शुरू हो गया और फिर १७ अक्टूबरको "रबोचो-ई-सोल्डेट" एक और नया दैनिक निकला, इसने अपने पहले प्रधान लेखमें लिखा:—

"युद्धको इस चौथे वर्षमें भी जारी रखना, सैनिकोंकी हत्या करनेके बराबर है। साथ-ही-साथ इससे देशकी भी बड़ी भयङ्कर हानि होगी। पेट्रोग्राडके लिये बड़ा भारी ख़तरा सामने है। क्रांतिके विरोधी इस दुर्भाग्यपर ख़ुशी मना रहे हैं।............जब ग़रीब किसान निराश होकर अपनी रक्षाके लिये विरोध करते हैं, तब पूँजीवादी लोग और उनकी यह सरकार उनपर गोलियाँ छोड़ती है, क़त्लेआम करती है। कारख़ाने और खानें जान-बूझ कर बन्द की जा रही हैं। मज़दूर बेचारे भूखों मरे जा रहे हैं......

"करेन्स्कीकी सरकार जनताकी शत्रु है। करेन्स्की देशका सर्वनाश कर रहे हैं। यह पत्र जनताका है और इसे जनताने ही निकाला है। यह पत्र ग़रीबों, मज़दूरों, सैनिकों और किसा-

नोंका है। क्रान्तिकी रक्षा करनेसे ही जनताकी रक्षा हो सकेगी। इस कार्यकी पूर्तिके लिये यह परमावश्यक है, कि शासनका समस्त उत्तरदायित्व सोवियटके हाथमें चला जाये।

"हमारा उद्देश्य इस प्रकार है:—

(१) पेट्रोग्राड तथा प्रान्तिक शासनका समस्त कार्य सोवियटके हाथमे दिया जाये,

(२) सब रणक्षेत्रोंमें लड़ाई बन्द की जाये और ईमानदारीकी शर्तोंपर जनताके साथ सन्धि की जाये,

(३) ज़मींदारोंकी जमीनें बिना हर्जाना दिये, ज़ब्त की जायें और किसानोंमें बाँट दी जायें,

(४) मिलों और कारखानोंकी उपजपर मज़दूरोंका अधिकार क़ायम किया जाये और

(५) सच्चे तथा उचित प्रतिनिधि चुननेके नियमोंके अनुसार प्रजातन्त्र-कौंसिलका चुनाव किया जाये।"

करेन्स्कीके मन्त्रि-मण्डलने एक बार बोलशेविकोंको जर्मनीका गुप्तचर बतलाया था। इङ्गलैण्डके अखबारोंने इस झूठी अफवाहको सच्चा कह कर संसार-भरमें फैलाया था। इन्हीं जर्मन गुप्तचरों अर्थात् बोल्शेविकोंके पत्र "रबोची-ई सोल्डेट" ने जर्मनीके खिलाफ़ उसी वक्त ये शब्द लिखे थे:—

"जर्मन कैसर, जिसके सिरपर लाखों आदमियोंकी हत्याएँ सवार हैं, अब अपनी सेनाएँ पेट्रोग्राडकी ओर बढ़ा रहा है। इसलिये, हमें उन जर्मन श्रमजीवियों, सैनिकों और किसानोंको इधर

आकर्षित करना चाहिये, जो कि हमारीही तरह इस अभागे युद्धसे घृणा करते हैं। यह तभी हो सकता है, जब हमारे देशमें सच्ची क्रान्तिकी उपासक ऐसी सरकार क़ायम हो, जो श्रमजीवियों, सैनिकों तथा किसानोंकी सच्ची अभिलाषा प्रकट करनेमें समर्थ हो सके, और जो जर्मन सैनिकोंसे सीधी बातचीत कर सके, जर्मनी की खाइयोंमें, हमारे श्रमजीवियोंकी अपीलें पहुँचा सके, और हवाई ज़हाज़ों द्वारा हमारी घोषणाएँ जर्मनी-भरमें फैला सके।"

इस लेखको पढ़कर कौन कह सकता है, कि बोल्शेविक जर्मनी-से मिले हुए थे या सहायताके लोभसे युद्ध बन्द करनेका आन्दोलन उठाये हुए थे। युद्ध बन्द करनेका आन्दोलन उन्होंने केवल देश-हितके लिये उठाया था; क्योंकि रूसमें इतनी शक्ति ही बाकी नहीं रही थी, कि वह युद्ध जारी रख सकता। दूसरे स्वयं सैनिकगण लड़ते-लड़ते थक गये थे और रणक्षेत्रोंमें बिना कपड़ा, अन्न और गोली बारूदके कुत्तोंकी मौत मर रहे थे।

बोल्शेविकोंके इस घनघोर आन्दोलनको देखकर मन्त्रि-मण्डल परेशान तो था ही, अब प्रजातन्त्र-कौंसिलके पूँजीवादी मेम्बर भी घबरा उठे। एक दिन, कौंसिलमें प्रश्न छिड़ा, कि सब दल मैत्री-भाव स्थापित करें। नरम दलके साम्यवादी तथा उदार पूँजीवादी नेताओंने लम्बी-लम्बी स्पीचें दीं। स्वयं प्रधान मन्त्री करेन्स्की दो बार बोले और दूसरी बार इतने करुण स्वरसे बोले, कि सुननेवाले तो मज़ाक उड़ाते रहे, लेकिन स्वयं करेन्स्कीका देश-प्रेमके कारण गला भर आया और आँखोंसे आँसू बह निकले। लेकिन इतना

सब कुछ होनेपर भी उग्र साम्यवादियोंने समझौता नहीं किया; बल्कि उन्होंने और-और बोल्शेविकोंका दृष्टान्त सुनाकर कहा, कि—

"पूँजीवादी मेम्बरो! तुम क्रान्तिके प्रभावको नष्ट करके, मित्र-राष्ट्रोंका कहा मानकर सत्यानाशी युद्ध जारी रखना चाहते हो, और नरम साम्यवादी मेम्बरो! तुम अमीरोंका साथ देकर देशकी प्राणस्वरूप श्रमजीवी जनताको धोखा देना चाहते हो। हमलोग तुम्हारी इस कुटिल नीतिको अब अधिक दिन नहीं देखेंगे!"

स्थिति यह थी, कि यद्यपि बोल्शेविक मेम्बर प्रजातन्त्र-कौन्सिलसे इस्तीफे देकर निकल आये थे, लेकिन उनकी जगह स्वतन्त्र मेन्शेविकी दल तथा उग्र साम्यवादी-क्रान्तिकारी दलके मेम्बर चिनगारियाँ लगाया करते थे!

केन्द्र-सभा

२४
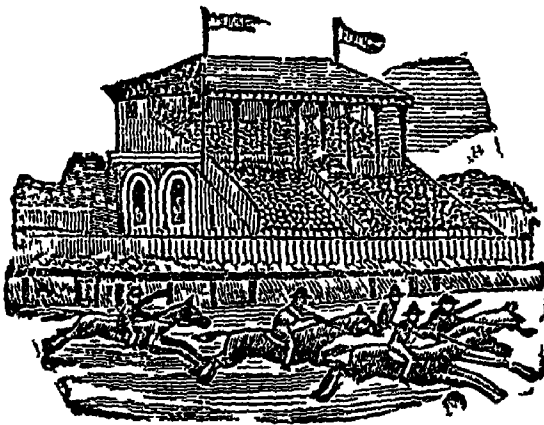
पेट्रोग्राडके पश्चिमी किनारेपर, नीवा नदीके तटपर, स्मोलनी इन्स्टीच्यूट नामक, ज़ारीना द्वारा स्थापित रईसोंकी लड़कियोंके लिये एक बड़ा भारी विद्यालय था। तीन खण्डकी विशाल इमारतमें किसी समय रूसी जमींदारों और सरकारी अफसरोंकी कन्याएं शिक्षा प्राप्त करती थीं। इस इमारतमें सैकड़ों कमरे थे। मार्चकी क्रान्तिके बादसे ही, मज़दूरों और सैनिकोंकी सोवियटने इसपर क़ब्ज़ा कर लिया था। जिन कमरोंमें, लड़कियोंके क्लास बैठते थे, अब उन्हीं कमरोंमें, "पेट्रोग्राड सोवियट कार्यकारिणी सभा", "अखिल रूसी सोवियट केन्द्र-सभा", "अन्तर्राष्ट्रीय समाचार-कार्यालय" "साम्यवादी सैनिक-मण्डल" आदि सभाओंके दफ्तर थे। इन्हीं कमरोंमें बोल्शेविक केन्द्र-सभाका दफ्तर था और उसीके क़ब्ज़ेमें, एक बड़ा भारी हाल था, जो पहले कन्या विद्यालयके वार्षिकोत्सवके समय खूब सजाया जाता था। उसकी दीवारोंपर अच्छी सजावट थी, बीचमें एक सुनहला फ्रेम भी लटक रहा था, लेकिन उसके बीचकी तसवीर जो शायद ज़ारीनाकी होगी, फाड़कर अलग फेंक दी गयी थी।

आजकल इस इमारतमें बड़ी चहल-पहल हो गयी थी; क्योंकि बोलशेविक-दलका प्रचार-कार्य बड़े ज़ोरोंपर चल रहा था। पेट्रोग्राडमें नित्य चार-पाँच सभाएँ होती थीं और लाखों विज्ञापन और सूचनाएँ छपकर बाहरी प्रान्तोंमें भेजी जा रही थीं। रण-क्षेत्रोंके लौटे हुए सैनिक तथा मज़दूर—सैनिक-सोवियटके स्वयंसेवक हरवक्त इधर-से-उधर दौड़ते-घूपते नज़र आ रहे थे। इमारतकी दीवारोंपर, जगह-जगह मोटे-मोटे अक्षरोंमें पोस्टर चिपके हुए थे, कि "सहयोगियो, स्वास्थ्य-रक्षाकी दृष्टिसे स्वच्छतापर ध्यान दो" नीचेके खण्डमें, एक भोजनालय था। ऊपरके खण्डमें एक जलपान और चाय पिलानेकी दूकान थी। इस दूकानमें दिन-रात चाय पिलायी जाती थी।

इसके बड़े हालके सामने ही, सोवियट-कांग्रेसके प्रतिनिधि-पत्र बाँटनेका प्रबन्ध किया गया था। ३० अक्टूबरसे ही प्रतिनिधि आने लगे थे; पर नरम साम्यवादियोंके विरोधके कारण, यह सोच कर, कि दूसरी नवम्बर तक पूरे प्रतिनिधि न आ सकेंगे, बोल्शेविक-केन्द्र सभाने कांग्रेसकी तिथि बदल कर ७ नवम्बर कर दी!

आये हुए प्रतिनिधियोंको भड़कानेके लिये भी मेन्शेविकी-दलने बहुत हाथ-पैर मारे। लेकिन बोल्शेविक अख़बार नित्य इन चालोंकी पोल खोल देते थे और प्रतिनिधियोंको मज़बूत बनाते जाते थे। बोल्शेविकोंकी इस तैयारीको देखकर नरम साम्य-वादियोंने, जो अभी तक सिर्फ विरोध करनेपरही कमर कसे हुए थे, अपने दलमें प्रतिनिधियोंको भी बुलानेके लिये कोशिश की; लेकिन

यह प्रयत्न भी निष्फल हुआ; क्योंकि देश-भरकी सोवियटोंमें बोल्शेविकोंका बहुमत स्थापित हो चुका था। अतः कांग्रेसके लिये बाल्शेविक मतके हो प्रतिनिधि निर्वाचित होकर आ रहे थे। देश भरमें सोवियट-कांग्रेसकी चर्चा फैल रही थी। बड़ी धूम थी, बड़ा उत्साह था। इस सरगर्मीको देखकर शहरमें यह अफवाह फैल रही थी, कि कांग्रेसके एक दिन पहले बोल्शेविकोंका हथियार-बन्द जुलूस निकलेगा। पूँजीवादियों और नरम साम्यवादियोंके अखबार गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहे थे, कि बोल्शेविक दल पेट्रोग्राडपर क़ब्ज़ा कर लेगा, इसलिये सरकार इस कांग्रेसको न होने दे और पेट्रोग्राडकी नगर-सोवियटको गिरफ़्तार कर ले; और एक अखबारने तो यहाँतक लिख मारा, कि "सब बोल्शेविकोंको क़त्ल कर देना चाहिये!" "संयुक्त लोकसत्तावादी-दल" के नेता गोरकीने अपने अखबार द्वारा बोल्शेविकोंका समर्थन कर शुरू करना दिया था। स्वयं गोरकीने एक लेख लिख-कर बतलाया, कि :—

"लोकसत्ता-वादियोंके समस्त दल एक हो जायें; क्योंकि विरोधियोंके ज़बर्दस्त अखाड़ेका सामना करनेके लिये लोकसत्तावादियों-को एक संयुक्तदल बनाना चाहिये और तब आक्रमणनीतिका प्रस्ताव पास करना चाहिये। लेकिन यह तभी करना होगा, जब विरोधी-दल (पूँजीवादी और नरम साम्यवादी) सैनिक सहायता लेकर कांग्रेस तोड़नेका प्रयत्न करें। उस हालतमें, फौरन बोल्शेविकोंको हथियारोंके बलसे शासनपर क़ब्ज़ा कर लेना चाहिये।"

२३ अक्तूबरकी रातको, बोल्शेविकोंकी एक गुप्त-सभा हुई थी। अज्ञात-वाससे निकलकर मोशिये लेनिन भी इस सभामें सम्मिलित हुए। शहरकी अफ़वाहोंपर विचार करके, सरकारी विरोधकी तैयारी सुनकर लेनिनने प्रस्ताव पेश किया, कि सोवियट-कांग्रेसके एक दिन पहले ही हथियार-बन्द जुलूस निकाला जाये, और शासनपर कब्ज़ा कर लिया जाये, यह प्रस्ताव हर्ष-ध्वनिके बीचमें पास हुआ।

इस प्रस्तावके पास करनेका कारण यह था, कि करेन्स्कीने कई सेनापतियोंको तार देकर सेना सहित पेट्रोग्राड चले आनेका हुक्म भेज दिया था। सैनिक-प्रतिनिधियोंने गुप्त-सभामें प्रमाण देकर सरकारको इस फ़ौजी तैयारीकी पोल खोल दी। बस, यही कारण था, कि जिसने बोल्शेविकोंको आक्रमण-नीति निश्चित करने और सरकारी इमारतोंपर क़ब्ज़ा कर लेनेके लिये इस गुप्त सभामें प्रस्ताव पास करनेके लिये मजबूर कर दिया।

करेन्स्कीने सचमुच, कोसक-सैनिकों, जंगली सेनाओं और भयंकर-सैनिकोंको बुला भेजा था। इधर पेट्रोग्राडमें रहनेवाली मोटर-सेनाओंके एक भागको बुलाकर मन्त्रि-मण्डलके कार्यालय अर्थात् ज़ारके विण्टर-पैलेस (शरद-महल) के द्वारपर नियुक्त कर दिया था।

सरकारकी यह खुली तैयारी देख कर ट्राट्स्कीने मज़दूरों और सैनिकोंको हथियार-बन्द कर रखा था। सेस्ट्रोरेचकी बन्दूक-फैक्टरीने प्रसन्नता-पूर्वक बोल्शेविकोंको कई हज़ार बन्दूकें मय

कातूसोंके दे दी थीं। शहराती सेनाकी एक सभामें यह प्रस्ताव भी पास हो चुका था कि, सोवियटको शासनका पूर्ण अधिकार दिया जाये।

अभी लेनिनके उस प्रस्तावकी खबर किसी विरोधी-दलको नहीं हो पायी थी। साथ ही ३० अक्तूबरको पेट्रोग्राडकी नगर-सोवियटमें ट्राट्स्कीने जनताको अपनी तरफ मिलानेके लिये यह घोषणा की, कि हथियार-बन्द जुलूसकी अफवाह ग़लत है, अभी तक हमने ऐसा कोई निश्चय नहीं किया है, लेकिन यदि, विरोधी-दल हमारी सोवियट-कांग्रेसको भंग करनेका प्रयत्न करेंगे, तो हम ज़रूर ऐसा करेंगे और पेट्रोग्राड गैरीसन (सेनायें) हमारी मदद करेंगी। अगर सरकार हमपर फ़ौजी हमला करेगी, तो हम बड़ी बेरहमीके साथ उसके टुकड़े-टुकड़े कर देंगे और विरोधियोंका क़त्ल करवा देंगे!"

इसके बाद, एक किसान-प्रतिनिधिने खड़े होकर टेवर प्रान्तका वर्णन करते हुए कहा, कि "करेन्स्कीकी सरकारने किसानों द्वारा स्थापित भूमि-सभाओं Land Committees के मेम्बरोंको गिरफ्तार करवा लिया। यह करेन्स्की ज़मींदारोंकी ढाल बन रहा है। लोग समझते हैं, कि प्रजातन्त्र-कौन्सिल Assembby Constituent के चुनाव होनेके बाद भूमिपर किसानोंका अधिकार हो जायेगा, इसीलिए पूँजी-वादी चुनावको रद्द करनेकी फिक्रमें हैं।"

पूटीलावके एक कारखानेके प्रतिनिधिने खड़े होकर कहा कि,

"हमारे प्रान्तमें मिलोंके मालिक जान-बूझकर कल-कारखाने बन्द कर रहे हैं और बहाना यह कर रहे हैं, कि कच्चा माल भरा पड़ा है। यह चाल चली जा रही है, जिससे मज़दूर भूखों मरने लगें और उत्पात करनेपर उतारू हो जायें।"

सैनिक-प्रतिनिधियोंमेंसे एक सैनिकने अपनी स्थितिका वर्णन करते हुए कहा कि—

"सहयोगियो, मै ऐसे स्थानसे आ रहा हूँ, जहाँ सैनिक खाइयोंको जगह अपनी क़ब्रें खोद रहे हैं। अब अफसरोंपर विश्वास करना मौतको बुलाना है; क्योंकि अफसर जान-बूझ कर हमे कालके गालमें भेज रहे हैं। हमारे प्रचारक गिरफ्तार करके गोलियोंसे मारे जा रहे हैं।"

इस प्रकार बोल्शेविक-आन्दोलनकी सफलताके ये सामान एकत्रित हो रहे थे।

सरकारके अत्याचार

२५

देशकी बढ़ती हुई अशान्तिके समय सरकारको नरम पालिसीसे काम लेना चाहिये; मगर करेन्स्कीकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी थी। उनकी समझमें यह नहीं आया था, कि क्या करना चाहिये। एक समय वह था, कि यही करेन्स्की रूसमें देवताकी तरह पूजे जाते थे। जनताका इनपर पूर्ण विश्वास था। लेकिन आज उनका नाम घृणा और क्रोधके साथ सुना जाने लगा! बिना कारण कुछ नहीं होता। इसका भी कारण था। करेन्स्की पूँजीवादी-दलके हाथोंमें कठपुतलीकी भाँति नाचने लगे थे। विण्टर-पैलेसमें ही उन्होंने रहना शुरू कर दिया था। वही विण्टर-पैलेस, जिसमें ज़ार रहते थे। वही विण्टर-पैलेस, जिसमें रातको दो बार परियोंका नाच होता था। फिर भला करेन्स्कीपर उस विण्टर पैलेसका असर क्यों न पड़ता? ऐसा असर पड़ा, कि सारी प्रतिभा, समस्त प्रभाव और सम्पूर्ण ओज उसी विण्टर-पैलेसमें विलीन हो गया।

खारकावकी कोयलेकी खानोंमें मालिकों और मज़दूरोंमें लड़ाई हो गयी। ३० हज़ार मज़दूरोंने हड़ताल कर दी। मिल-मालिकोंने कोसक-सैनिकोंको बुलाकर मज़दूरोंको पिटवा दिया। झगड़ा

बढ़ गया। दूसरी ओर कालुगा ज़िलेकी सोवियटने हड़तालो मज़दूरोंको क़ैदखानेसे छुड़वा दिया। बस, मिल-मालिक आग-बबूला हो उठे। कालुगाकी म्युनिसिपल-कमेटीने कोसकोंको बुलाकर सोवियटकी इमारतपर गोले चलवा दिये। बोल्शेविक इमारत छोड़कर ज्योंही बाहर निकले, त्योंही कोसकने फिर आक्रमण किया और चिल्लाकर कहा,—"इसी प्रकार पेट्रोग्राड और मास्कोकी सोवियटोंपर भी हम गोले चलायेंगे!" इन घटनाओंसे, रूस-भरमें सनसनी फैल गयी।

उन्हीं दिनोंमें पेट्रोग्राडमें उत्तरी रूसकी प्रान्तिक सोवियट-कान्फरेन्स क्रिलेंकोकी अध्यक्षतामें हो रही थी। इन अत्याचारों-का समाचार पाकर कान्फरेन्सने स्पष्ट शब्दोंमें यह प्रस्ताव पास किया :—

"रूसी शासनका पूर्ण अधिकार सोवियट-कांग्रेसको अपने हाथोंमें ले लेना चाहिये।"

दूसरा प्रस्ताव यह पास हुआ :—

"जेलमें लड़े हुए बोलशेविक-भाइयोंको बधाई! शीघ्र ही उनकी मुक्तिके दिन आ रहे हैं।"

फैक्टरी शाप-कान्फरेन्सने भी निम्नलिखित प्रस्ताव पास कर बोल्शेविकोंका समर्थन किया :—

"ज़ारके अत्याचारी शासनसे छुटकारा पानेके बाद श्रमजीवी-समुदाय लोकसत्तात्मक शासन चाहता है, जिसके अन्दर देशकी उपजपर मज़दूरोंका अधिकार क़ायम हो। यह तभी हो सकता

है, जब कि शासनका समस्त अधिकार सोवियटके हाथोंमें चला जाये। यह कान्फरेन्स सोवियटके हाथोंमें राज-काज देनेका ज़ोरदार समर्थन करती है।"

इन कान्फरेन्सोंके प्रस्तावोंके कारण मन्त्रि-मण्डलके होश उड़े जा रहे थे। जेनरल वरखोवस्कीको सेना-संगठनका कार्य सौंपा गया था; लेकिन संगठनके स्थानपर रण-क्षेत्रोंमें भगदड़ मच रही थी। पर-राष्ट्र-मंत्री मो० टेरशेन्को अपना इस्तीफा लिये घूम रहे थे। रेलवे-कर्मचारियोंने सभा करके मंत्रि-मण्डलसे अनुरोध किया, कि रेलवे-मार्गके मन्त्री लिवरोवस्की बर्खास्त कर दिये जायें।

४ नवम्बरको रविवार था। पेट्रोग्राडकी नगर-सोवियटने शहरके कई स्थानोंपर सभाएँ करनेकी सूचना निकाली थी। इन सभाओंका मुख्य तात्पर्य यह था, कि बोल्शेविक अपने प्रभावको देखना चाहते थे। साथ-ही-साथ अपने दलके अख़बारोंकी सहायताके लिये धन भी एकत्र करते जाते थे। एकाएक यह समाचार भी फैला, कि इसी दिन कोसक-सैनिक अपना जलूस निकालेंगे; क्योंकि इसी दिन मास्कोसे रूसी सैनिकोंने नेपोलियनकी सेनाओंको मार भगाया था। अब रङ्ग बदल गया। पेट्रोग्राड-भरमें सनसनी फैल गयी, कि बोल्शेविकों और कोसकोंमें तलवार चल जायेगी! मगर, शाबास, ट्राट्स्की! एक घण्टेके अन्दर उन्होंने नगर-सोवियटके सभापतिकी हैसियतसे यह अपील प्रकाशित की:—

"कोसक भाइयो!

"कोसक भाइयो! हम मजदूरों और सैनिकोंके खिलाफ उक-

साये जा रहे है। यह चाल, हमारे शत्रु, पूँजीवादियों, सेनापतियों, बैंकरों, ज़मींदारों, अफसरों और ज़ारके पक्षपातियों द्वारा चली जा रही है, जिससे हमारी-आपकी छिड़ जाये। आप जानते हैं, कि इस संकटके समय अमीर लोग राज-परिवारके लोग, सेनापति और कासक-अफसर भी हमसे शत्रुता मान रहे हैं। वे चाहते हैं, कि पेट्रोग्राड सोवियट नष्ट हो जाये और क्रान्तिका उद्देश्य विफल हो जाये। ....हमने सुना है, कि कल ४ नवम्बरको कोसक-जलूस निकालनेकी चेष्टा की जा रही है। यह आपलोगोंके सोचनेकी बात है, कि आप ऐसा जलूस निकालें अथवा न निकालें। हम लोग आपकी इच्छाका विरोध नहीं करना चाहते और न आपके जलूसमें रुकावट डालना ही चाहते हैं। हम आपसे केवल इतनी ही अपील करते हैं, कि आप स्वयं देखें, कि आपको कौन भड़का रहा है और वह किस ग़रज़से उत्तेजित कर रहा है!"

इस अपीलके प्रकाशित होते ही, कोसकोंका चित्त फिर गया। जलूसका निकालना रोक दिया गया। पूँजीवादी, जो बोल्शेविकोंका नाश चाहते थे, दाँतों-तले उँगली दाबकर रह गये! सरकारकी चाल-सी खाली गयी।

बोल्शेविक निर्भय होकर बारिकों तथा मिलोंमें और सड़कोंपर व्याख्यान देते फिरते थे, कि शासनका कुल अधिकार सोवियटके हाथमें आ जाना चाहिये। अब लेनिन भी खुले तौरसे सिंहनाद कर रहे थे, कि "सोवियटको शासनपर अधिकार दिलाओ, अब देर करनेका मौक़ा नहीं है!"

सरकारकी शक्ति नित्यप्रति क्षीण होती जा रही थी। म्युनिसिपैलिटीका प्रबन्ध भी कमज़ोर होता जा रहा था। शहरमें लूट-मार, खून-ख़राबी और तरह-तरहकी दुर्घटनाएँ हो रही थीं। रातके समय हथियारबन्द बोल्शेविक मज़दूर सड़कोंपर पहरा देते थे और अमीरोंके हथियार छीनकर अन्य मज़दूरोंको सशस्त्र बनाते जा रहे थे।

शहरमें गड़बड़ी बढ़ती देखकर नगर-रक्षक-सेनाके कमाण्डर, कर्नल पोलकोवीकावने निम्नलिखित घोषणा निकाली :—

"देशके इस संकट-समयका ज्ञान होते हुए भी शहरमें हथियारबन्द जलूस निकालने और दंगा-फसाद करनेकी अफवाहें फैल रही हैं। नित्यप्रति लूट-मार और गड़बड़ी बढ़ रही है।

"इस स्थितिसे शहरका सार्वजनिक जीवन खतरेमें पड़ता जा रहा है और राज-व्यवस्था तथा म्युनिसिपल प्रबन्धमें गड़बड़ी होती जा रही है।

"अतः अपने कर्त्तव्यकी पुकार और देशके प्रति अपने दायित्वके नाते, मैं आज्ञा देता हूँ, कि—

(१) हरएक सेना तथा सैनिक-समुदाय, म्यूनिसिपैलिटीकी सहायता करे और सरकारी इमारतोंकी रक्षा करनेवाले पहरेदारोंको मदद पहुँचाये।

(२) पहरेदारीके सैनिको, नगर-रक्षक सैनिको तथा नगर-सेनाके प्रतिनिधिगण! चोरों, डाकुओं और शहर छोड़नेवाले सैनिकोंको गिरफ्तार करो।

(३) जो लोग फ़ौजी बारिकोंमें जाकर सैनिकोंको हथियार-बन्द जलूस निकालनेका उपदेश देते हैं और खून-खराबीके लिये उत्तजित करते हैं, उन सबको गिरफ्तार करके सेकण्ड कमाण्डरके पास पहुँचाओ।

(४) अगर कोई हथियारबन्द जलूस निकले या दंगा उठ खड़ा हो, तो उसे फौरन अपनी सैनिक शक्ति द्वारा दबा दो।

(५) बिना वारण्टकी तलाशियों और गिरफ्तारियोंके समय अफसरोंकी पूरी सहायता करो।

(६) शहरकी हरएक घटनाकी रिपोर्ट ठीक समयपर सदर दफ्तरमें देते रहो।

इन्हीं दिनोंमें, प्रजातन्त्र-कौंसिलमें करेन्सकीने इज़हार किया, कि "बोल्शेविकोंकी तैयारीका हमें पूरा पता है और हमारे पास उनके उत्पात रोकनेकी पूरी शक्ति मौजूद है। उग्र साम्यवादियोंके अखबार भी बोल्शेविकोंका समर्थन कर रहे हैं। लेकिन अख-बारोंको स्वाधीनता देकर आप लोगोंनेही सरकारके हाथ बाँध दिये हैं। इस समय मैं एक अभागा मनुष्य हूँ। मुझे इसकी परवाह नहीं, कि मुझपर क्या बीतेगी।.........!"

सैनिक कमेटी

२५
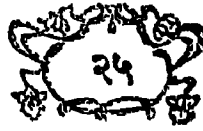
खतरेको बढ़ता देखकर मन्त्रि-मण्डलने पेट्रोग्राडमें रहने-वाली सेनाके लिये आज्ञा निकाली, कि वह रणक्षेत्र भेजी जायेगी। इस सेनामें लगभग ६० हज़ार सैनिक थे। सरकार अच्छी तरह जानती थी, कि ये सैनिक बोल्शेविक-दलके प्रभाव-में आ गये हैं और मौक़ा आनेपर उन्हींका साथ देकर सरकारको उलट देंगे। अतः करेन्सकीने यह चाल चली, कि अभीसे इस बला-को राजधानीके बाहर कर दिया जाये। यह वही सेना थी, जिसने मार्चमें ज़ारकी आज्ञा न मान कर क्रान्तिकारियोंका साथ दिया था और जनरल कार्नीलाफको पेट्रोग्राडके बाहर परास्त किया था। अभी अक्टूबरमें ही, जब कि सरकार जर्मन-आक्रमणके डरसे मास्को भाग जाना चाहती थी, तब इसी सेनाके प्रतिनिधियोंने सैनिक-सोवियटमें ललकार कर कहा था, कि "अगर सरकार राजधानीकी रक्षा नहीं कर सकती, तो सन्धि क्यों नहीं कर लेती? अगर सन्धि भी नहीं कर सकती, तो सरकार जगह खाली करे, ताकि जनताकी सरकार (सोवियट-सत्ता) राजधानीकी रक्षा करे और लोक-सत्तात्मक सन्धि भी करे !"

कुछ अंशोंमें यह बात भी ठीक थी, कि पेट्रोग्राडकी यह सेना

आठ महीनोंसे आरामकी रोटियाँ तोड़ रही थी और रणक्षेत्रोंपर सैनिक जूझ रहे थे—प्राणोंपर खेल रहे थे। मुनासिब यह था, कि पेट्रोग्राडकी सेना भी रणक्षेत्रोंपर भेजी जाती और वहाँके सैनिकोंको कुछ आराम और फुर्सत दी जाती; लेकिन सरकारकी असली मन्शा यह थी, कि बोल्शेविक आन्दोलनको बेकार करनेके लिये पेट्रोग्राडकी सेना हटा दी जाये। रणक्षेत्रोंपरसे आये हुए सैनिक प्रतिनिधि भी यह नहीं चाहते थे, कि बोल्शेविकोंका आन्दोलन नष्ट हो जाये। इसीलिये उन्होंने पेट्रोग्राडकी सड़कोंपर बड़ी-बड़ी सभाओंमें और सोवियटकी बैठकोंमे साफ शब्दोंमें कह दिया, कि "यह सही है, कि रणक्षेत्रोंपर, लड़ते हमें बहुत दिन हो गये और अब फुर्सत मिलनी चाहिये; लेकिन इससे अधिक महत्त्वकी बात यह है, कि क्रान्तिका काम न बिगड़ने पाये और पेट्रोग्राडकी रक्षा होती रहे। इसलिये तुम राजधानीमे ही रहो, हम रणक्षेत्रोंमें रहेंगे।"

जब मन्त्रि-मण्डलने यह आज्ञा निकाली, कि पेट्रोग्राडमें रहनेवाली सेना रणक्षेत्रोंको भेजी जायेगी, तब सैनिकोंमें घोर असन्तोष फैल गया। बोल्शेविकोंने पहुँचकर उन्हें जानेसे मना किया और समझाया, कि तुम्हारे जाते ही सरकार सोवियटको तोड़ देगी और क्रान्तिका काम नष्ट हो जायेगा।

२१ अक्तूबरको ट्राट्स्कीने नगर-सोवियटकी खुली बैठकमें प्रस्ताव किया, कि अब समय आ गया है, जब हमारे सैनिकोंको अपनी "क्रान्तिकारी सैनिक-कमेटी" सङ्गठित करनी चाहिये;

क्योंकि सरकार बिना सैनिकोंकी राय लिये हुए ही ऊट-पटाँग आज्ञाएँ निकाल रही है और सैनिकोंके मताधिकारकी अवहेलना करने लगी है। सोवियटके सैनिक मेम्बरोंने तुरन्त प्रस्ताव स्वीकार करके "क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटी" संगठित कर ली। इस कमेटीमें पेट्रोग्राडमें रहनेवाली सेनाके प्रतिनिधि रखे गये और कुछ बोल्शेविक नेता भी रखे गये, जो समय-समयपर स्थिति बतलाते रहे।

३० अक्तूबरको, पेट्रोग्राडकी सेनाके समस्त प्रतिनिधियोंने एक सभा करके सरकारको चेतावनी देते हुए यह प्रस्ताव पास किया, कि "आजसे पेट्रोग्राडकी सेना करेन्सकीकी सरकारकी सत्ता स्वीकार नहीं करती। अब हम नगर-सोवियट तथा अपनी क्रान्तिकारी सैनिक-कमेटीकी आज्ञा माना करेंगे।" दूसरे प्रस्ताव द्वारा यह तय किया, कि "पेट्रोग्राडके समस्त सैनिक सरकारी आज्ञाओंको न मान कर क्रान्तिकारी सैनिक-कमेटीकी आज्ञाएँ माना करें।"

३ नवम्बरको फिर सैनिकोंकी एक विराट-सभामें निश्चित हुआ, कि "यह सभा बड़े आदरके साथ क्रान्तिकारी सैनिक-सभाका अभिवादन करती है और पेट्रोग्राडकी सेनाकी ओरसे विश्वास दिलाती है, कि समस्त सैनिक उक्त कमेटीकी आज्ञाओंका पालन करेंगे और रणक्षेत्रों तथा स्थानीय फौजोंकी एकता स्थापित रखेंगे। साथ ही यह सभा घोषित करती है, कि यदि पूँजीवादी उत्तेजित करनेका षड्यन्त्र रचेंगे, तो हम सैनिक बड़ी निर्दयता-पूर्वक उनका सामना करेंगे।"

पेट्रोग्राडकी सेनाओंकी ऐसी श्रद्धा देखकर लेनिनका चित्त

बहुत प्रसन्न हुआ। उन्होंने "क्रान्तिकारी सैनिक-कमेटी" को राय दी, कि अब स्थानीय सेनाके अफसरोंके नाम हुक्म निकालो, कि तुम भी हमारी सत्ता स्वीकार करो। साथ ही शहर-भरके प्रेसोंके नाम यह हुक्म ज़ारी कर दो, कि बिना हमारी आज्ञा प्राप्त किये, विरोधी दलकी कोई सूचना या अपील मत छापो! इन आज्ञाओं-को जारी करके "क्रान्तिकारी सैनिक-कमेटी" के हुक्मसे सैनिकोंने सरकारी मेगज़ीनके कारखानेपर क़ब्ज़ा कर लिया और हथियारों तथा गोली-बारूदके बड़े भारी संग्रहपर अधिकार जमा लिया।

इस घटनासे, करेंस्कीके होश उड़ गये। उन्होंने समझौता करना चाहा; मगर "क्रान्तिकारी सैनिक-कमेटीने इनकार कर दिया। करेन्स्कीने कमेटीसे फिर दरख्वास्त की, कि सैनिक-शासनमें उसके प्रतिनिधि लिये जा सकते हैं; मगर बादको न जाने क्या सोचकर अपनी दरख्वास्त वापस मँगवा ली!

३ नवम्बरको ही बोल्शेविकोंकी फिर एक गुप्त सभा हुई। लेनिनने अपने भाषणमें कहा, कि ६ नवम्बरको आक्रमण करना अनुचित शीघ्रता होगी। हमें देश-भरके प्रतिनिधियोंके आ लेनेतक रुकना चाहिये। ६ नवम्बरतक पूरे प्रतिनिधि न आ सकेंगे और ८ नवम्बरतक रुकना भी मूर्खता होगी; क्योंकि उस समय सोवियट-कांग्रेस संगठित रूपमें स्थापित होगी। उसमें आक्रमणका प्रस्ताव पास करा लेना कठिन होगा। अतः ता० ७ को ही हमें आक्रमण करना चाहिये। उसी दिन कांग्रेसमें हम कह सकेंगे, कि आपकी सत्ता कायम हो गयी, अब इसका उचित उपयोग कीजिये!"

जिस समय यह सभा हो रही थी, ठीक उसी समय स्मोलनी इमारतके ऊपरी खण्डके एक कमरेमें आण्टोनाव पेट्रोग्राडपर आक्रमण करनेका नक़्शा तैयार कर रहा था; यह आण्टोनाव ज़ारके ज़मानेमें एक राजभक्त सैनिक अफसर था, बादको साम्य-बादी क्रान्तिकारी-दलमें आ मिला। इसके बाद उसे देश-निकालेका दण्ड दिया गया। मगर अब यह बोल्शेविक दलका विश्वास-पात्र कार्य-कर्त्ता था। जिस समय बोल्शेविकोंकी ये सभाएँ होती थीं, उस समय स्मोलनी इमारतके फाटकोंपर हथियारबन्द सैनिकोंका कड़ा पहरा जगह-जगह बैठ जाता था। बिना टिकट दिखलाये कोई अन्दर जाने नहीं पाता था।

सरकार भी अपनी रक्षाकी तैयारी कर रही थी। जब उसने देखा, कि ६० हज़ार पेट्रोग्राड सेना बोल्शविकोंसे मिल गयी, तब उसने अपनी अत्यन्त विश्वास-पात्र सेनाओंको फ़ौरन तार देकर पेट्रोग्राड आनेका हुक्म भेजा। मन्त्रि-मण्डलके स्थान (शरद्-महल) विण्टर पैलेसके चारों तरफ़ मेशीन-गनोंका पहरा बैठा दिया गया। शहरके नाक़ोंपर कोसक-सिपाही तैनात कर दिये गये। साथही "पेट्रोग्राडके घेरे" (State of Sieze) की घोषणा कर दी।

शिक्षा-विभागके मन्त्री मोशिये किशकिन पेट्रोग्राडके स्पेशल रक्षक नियुक्त किये गये। मन्त्रि-मण्डलकी आज्ञासे बोल्शेविक अखबारोंकी इमारतोंपर क़ब्ज़ा करके ताले जड़ दिये गये।

सरकारके विश्वासी सैनिक (यंकर-सेना) पेट्रोग्राडमें इधरसे

उधर मार्च करते फिर रहे थे। दो-एक बार तोपखाना भी निकाला गया। नगर-रक्षिणी-सेनाके कुछ अफसर घोड़ोंपर चढ़े हुए इधर-उधर घूमते-फिरते थे। एक मेशीन-गन लगी हुई मोटर भी इधर-उधर घुमायी जा रही थी। बस, सरकारके पास इतनी ही विभूति थी। उधर बोल्शेविकोंके पास ६० हज़ार सैनिक बारिकोंमें पड़े हुए "क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटी" के हुक्मके साथ प्राण देकर भी अपना कर्तव्य-पालन करनेकी राह देख रहे थे।

ता० ५ को स्मोलनी-इमारतमें फिर क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीकी बैठक हुई। खबरें आ रही थीं, कि सरकारकी बुलायी हुई सेनाएँ पेट्रोग्राडके निकट आ पहुँची हैं। इधरके प्रतिनिधि और गुप्तचर आनेवाली सेनाओंसे मिल रहे थे और बोलशेविकोंके पक्षमें आ जानेका उपदेश दे रहे थे। पेट्रोग्राडको सेनाके केन्द्र—पीटर पालके क़िले—पर क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीने अपना क़ब्ज़ा कर लिया था। इसी समय, गचीनामें ठहरी हुई साइकिल-सेनाने अपने प्रतिनिधि भेजे और पूछा, कि "सरकारने हमें क्यों बुलाया है? तुम्हारी क्या आज्ञा है?" क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीने फ़ौरन खबर भेजी, कि सरकारी हुक्म माननेकी ज़रूरत नहीं। जबतक हम दूसरी सूचना न भेजें, गचीनामें ही पड़ाव डाले रहो!

करेन्स्कीने स्मोलनी-इमारतसे सम्बन्ध रखनेवाले टेलिफ़ोनके तार कटवा दिये थे, जिससे बोलशेविकोंके कार्यमें बाधा पड़े; परन्तु पेट्रोग्राड सेनाके टेलिफोन-इञ्जिनियरोंने बारिकों और मज़दूरोंके क्वार्टरोंसे फिर टेलिफोनके तार जोड़ दिये! मोटर साइकिलोंके

सवार तथा बीसियों वालण्टियर बोल्शेविकोंके पत्र इधरसे-उधर लेकर दौड़ रहे थे।

इसी समय प्रजातंत्र-कौंसिलसे खबर आयी, कि "लेफ्ट साम्यवादी" "क्रान्तिकारीदल" ने करेन्स्कीके पक्षपातियोंको कौंसिलमें खूब फटकारा और कहा कि, अब सरकार बोल्शेविकोंको सेनाके बलसे नहीं दबा सकती। फिर खबर आयी, कि उक्त दलने "क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटी"की सत्ता स्वीकार करके अपने प्रतिनिधि भी शामिल करनेका निश्चय कर लिया है। करेन्स्कीकी सरकारका एक भाग इस प्रकार बोल्शेविकोंसे आ मिला। स्मोलनी-इमारत बोल्शेविक-सभाओंका केन्द्र बन रही थी। दिन-रात किसी-न-किसी प्रकारकी सभाएँ हुआ ही करती थीं। फैक्टरी-शाप-कमेटी, जिसके हाथमें समस्त सरकारी और गैर-सरकारी कारखानोंके कर्मचारी थे, रोज़ अपनी आज्ञाएँ निकाल-निकाल कर, सरकारी कारखानोंसे हथियार मँगा रही थी। पेट्रोग्राडकी सब मिलों और कारखानोंके मज़दूर हथियारबन्द कर दिये गये थे। इस प्रकार इस समय बोल्शेविकोंके हाथमें एक लाखसे अधिक हथियारबन्द सैनिक और मज़दूर थे। यही कारण था, कि बोल्शेविक निर्भयतापूर्वक अपनी तैयारी पूरी कर रहे थे।

रातके तीन बजे बोल्शेविक सिपाहियोंने धावा करके बोल्शेविक प्रेसोंके सरकारी ताले तोड़ डाले और सरकार-पक्षके अखबारोंके दफ्तरोंपर छापा मारा।

महाक्रान्तिका उदय

७ नवम्बरका प्रातःकाल बड़ी शान्तिसे आरम्भ हुआ; लेकिन उसकी आनेवाली सन्ध्या भयावनी प्रतीत हो रही थी। शहर भरकी दीवारें पोस्टरों और नोटिसोंसे पटी हुई थीं। रात-भरमें इतने नोटिस किसने चिपकाये, यह आश्चर्यकी बात जान पड़ती थी।

प्रातःकालके अखबारोंमें यह ख़बर बड़े-बड़े शब्दोंमें छपी हुई थी, कि सरकारने बोल्शेविक अखबारोंको बन्द कर दिया है और नगर-सोवियट तथा क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीके मेम्बरोंकी गिरफ्तारीका हुक्म निकाल दिया है। लकिन इस बातकी ख़बर किसीको नहीं थी, कि ये गिरफ्तारियाँ सम्भव भी हैं या नहीं; क्योंकि बोल्शेविकोंके समस्त नेता "स्मोलनी-इमारत" में दिन-रात काम कर रहे थे और उनकी रक्षाके लिये एक लाख हथियार-बन्द सैनिक और मज़दूर पेट्रोग्राडमें ही चुप बैठे हुए आक्रमणकी राह देख रहे थे! लेनिन, ट्राटस्की, जिनोवीव, केमनाव, आव्ट-नाव, पोवस्की, क्रिलेन्को, डिवेन्को आदि समस्त बोल्शेविक नेता स्मोलनी-इमारतके अन्दर होनेवाली अखिल रूसी सोवियट-कांग्रेस-का आयोजन कर रहे थे।

प्रात:कालके समय 'विण्टर-पैलेस'से थोड़ी दूरपर 'मैरिन्सकी पैलेसमें प्रजा-तन्त्र कौंसिलकी बैठक थी। कौन जानता था, कि आज बैठकर यह कल न बैठेगी। कौंसिलके सामने प्रधान मंत्री करेन्स्की अपना अन्तिम भाषण दे रहे थे। मन्त्रि-मण्डलकी उन आज्ञाओंके बारेमें, जो कि रातको प्रकाशित की गयी थीं, करेन्सकी-ने कहा,—कि "बोल्शेविक अख़बारोंके बन्द करने और उत्पात मचानेवाली संस्थाओंके सदस्योंकी गिरफ़्तारी जारी करनेका कारण आपपर प्रकट कर देना मेरा कर्त्तव्य है। आप देख रहे हैं, कि बोल्शेविक आन्दोलनकारियोंने शहर-भरमें अशान्ति मचा रखी है। खुले तौरपर सरकारके साथ युद्ध छेड़नेकी अपीलें प्रकाशित हो रही हैं। लगातार उत्तेजना देनेवाली सभाएँ की जा रही हैं। ख़ास करके, नगर-सोवियटके सभापति ट्राट्स्कीकी कारगुज़ारियाँ आप लोग देख ही रहे हैं। इसके साथ-साथ आप "नवय रूस", "रोबूची पुट" तथा "सोल्डैट" नामक अख़बारोंके उन भयानक लेखोंको भी पढ़ चुके होंगे, जिनमें सशस्त्र आक्रमण-की बातें निकलती रही हैं। "रोबूची पुट" में राज्य-अभियुक्त लेनिनके कितने भयंकर लेख निकले हैं, उन्हे भी आप देख चुके हैं। इस प्रकार जनतामें अशान्ति और अवज्ञाके भाव दिन-पर-दिन फैलाये जा रहे हैं। ये लोग रूसमें एक नाशकारी आन्दोलन उठाये हुए हैं, इन्हें इसकी परवाह नहीं है, कि इसका परिणाम क्या होगा? जो कुछ हो, इसकी इन्हें कोई चिन्ता नहीं। इस प्रकारका यदि कोई भी उत्पात खड़ा होगा, तो पेट्रोग्राडकी

जनता मुफ़्तमें मारी जायेगी, निरपराध लोगोंको हत्या होगी और फल यह होगा, कि संसारके सम्मुख स्वाधीन रूसको लज्जित होना पड़ेगा। इसी कौंसिलमें लेफ्ट साम्यवादी-क्रान्तिकारी दलके मेम्बर बैठे हुए हैं, जिनके सम्बन्धमें लेनिनने लिखा है, कि उक्त दल हमारे पक्षमें आ गया है। ......इसलिये, मैं आपके सामने प्रस्ताव रखता हूँ, कि ऐसे उपद्रवियोंको फौरन गिरफ्तार करना चाहिये। (लेफ्ट साम्यवादी-क्रान्तिकारी मेम्बरोंने चिल्लाना शुरू कर दिया, तब करेन्सकीने बड़े ज़ोरसे डाँट कर फिर कहना आरम्भ किया) मेरी बात सुनो! ऐसे मौक़े पर, जब कि, देशका शासन खतरेमें है, मैं मर जाना अच्छा समझता हूँ, लेकिन देशकी इज्ज़त और आज़ादीको अपने सामने मिटते देखना हर्गिज़ पसन्द नहीं कर सकता।"

इसी समय, बोल्शेविकोंकी ओरसे निकाली गयी एक सूचना करेन्सकीके हाथमें दी गयी। करेन्सकीने पढ़ना शुरू किया,—"अभी-अभी मुझे यह सूचना मिली है। इसे उन्हीं बोल्शेविकोंने प्रकाशित किया है। यह सरकारी सेनाओंके नाम है। इसमें लिखा है,—

"पेट्रोग्राडकी नगर-सोवियट खतरेमें है। हम पेट्रोग्राड-सेनाको हुक्म देते हैं, कि वह युद्धके लिये तैयार रहे और हमारी सूचनाकी राह देखे। इस आज्ञाके प्रति अवज्ञा करना, क्रान्तिके साथ विश्वासघात करनेके बराबर होगा।

सभापति—पवोस्की।	निवेदक,
मंत्री—अएटनाव।	क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटी।"

"इस लिये मैं आपके सामने प्रकट करता हूँ, कि जो सरकार नवीन रूसकी लोक-सत्ता तथा स्वाधीनताकी रक्षा करती चली आ रही है और जिसने दल-बन्दीके प्रभावसे कभी जनताके स्वत्वों-का अपहरण नहीं किया है, अब जनताके स्वाधीन विचारोंको कुचलनेवाले आन्दोलनकारियोंको सदाके लिये नष्ट कर देनेका निश्चय कर चुकी है। पेट्रोग्राडकी जनताको इस निश्चयका साथ देना चाहिये और उन लोगोंको भी साथ देना चाहिये, जिनके हृदयमें सद्भावना और आत्म-प्रतिष्ठाके भाव जीवित हैं,—मरे नहीं हैं!"

करेन्स्कीने अपनी सारी शक्ति लगा कर बड़े ओज और बड़े ज़ोरोंके साथ यह स्पीच दी थी। सम्पूर्ण हाल गूँज उठा था। स्पीच सुनकर कौंसिलके कुछ मेम्बरोंने बड़े ज़ोरसे तालियाँ बजा कर प्रधान मंत्रीकी बातोंका समर्थन किया। लेकिन अब वह ज़माना नहीं था, जब करेन्सकीकी स्पीच सुनकर लोग मुग्ध हो जाते थे। कौंसिलके भीतर ही, लेफ्ट साम्यवादी-क्रान्तिकारी कुढ़े हुए बैठे थे, रूठे हुए मेन्शेविकी बैठे थे और विष-बाण छोड़ने-वाले स्वतंत्र-लोक-सत्तावादी भी बैठे थे।

यह पहला ही अवसर था, कि साम्यवादी-क्रान्तिकारी दलके नेता करेन्सकीके परम मित्र मोशिये गोज़ (Gotz) ने भी उठ कर सरकारकी नीतिका इस प्रकार विरोध किया :—

"यह सही है, कि बोल्शेविकोंकी नीति उत्पात-पूर्ण और ख़ून-ख़राबीको लानेवाली है। जनताके असन्तोषका वे दुरुपयोग कर

रहे हैं। लेकिन साथ ही जनताकी भी कुछ ऐसी सार्वजनिक माँगें हैं, जिनकी तरफ सरकारने अबतक कुछ ध्यान नहीं दिया है और इन माँगोंमें सन्धिका प्रश्न, ज़मीनके बँटवारेकी समस्या और सैनिकोंकी व्यक्तिगत स्वाधीनताकी बात विशेष ध्यान देने योग्य है। सरकारको ऐसे ढंगसे इन बातोंपर विचार करना चाहिये था, कि लोगोंको विश्वास हो सकता, कि सरकार सहानुभूतिके साथ सार्वजनिक माँगोंपर ध्यान दे रही है।......"

इन स्पीचोंके बाद लेफ्ट साम्यवादी-क्रान्तिकारियोंने इस आशयका एक प्रस्ताव पेश किया, कि ज़मीनपर भूमि-कमेटियोंका अधिकार कर दिया जाये, मित्र-राष्ट्रोंको लिखा जाये, कि वे सन्धिकी शर्तें प्रकट करके शीघ्र सन्धि स्थापित करनेका प्रयत्न करें। पेट्रोग्राड की रक्षाके लिये एक "नगर-रक्षक-सभा" क़ायम की जाये, जिसमें समस्त दलोंके प्रतिनिधि शामिल किये जायें और दलबन्दीके कारण होने वाली खून-खराबी रोकनेके लिये बाहरसे जो सेनाएँ बुलायी गयी हैं, वे न बुलायी जायें; क्योंकि उनके आनेसे निश्चय लड़ाई खड़ी हो जायेगी।

एक प्रकारसे ऐसा प्रस्ताव सरकारी नीतिके बिलकुल खिलाफ़ था; मगर अनहोनी बात यह हुई, कि मेन्शेविकी और नरम साम्यवादियोंने भी इसका समर्थन किया। इस प्रस्तावके पास हो जानेके बाद मन्त्रि-मण्डलको इस्तीफ़ा दे देना चाहिये था; मगर नरम साम्यवादी नेताओंने करेन्स्कीको इस्तीफ़ा नहीं देने दिया और २४ घण्टेतक ग़ैर-क़ानूनी मन्त्रि-मण्डल क़ायम रखा।

अभी दोपहर नहीं हो पायी थी, कि बोल्शेविकोंका पत्र "रोबूची-ई-सोल्डैट", जो कि सरकार द्वारा बन्द कर दिया गया था, लेकिन रातको बोल्शेविक फ़ौजों द्वारा फिर प्रेसकी इमारत ताले तोड़कर खोल दी गयी और अखबार कुछ देर करके ११ बजे दिनको बड़ी-बड़ी मोटी हेडिङ्गोंके साथ निकला, जिसके पहले ही पेजपर "क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटी" की यह घोषणा छपी हुई थी :—

"सैनिको ! मज़दूरो ! नागरिको !

जनताके शत्रुओंने (अर्थात् करेन्सकीके मंत्रि-मण्डलने) कल रातको दमन करनेका निश्चय किया है। बाहरसे सेनाएँ बुलायी गयीं हैं, लेकिन आज यंकर-सैनिकोंने और जारस्को-सेलो वालण्टियरोंने भी सरकारी आज्ञा माननेसे इनकार कर दिया है। तब भी सरकार नगर-सोवियटके विरुद्ध षड़यन्त्र रच रही है। सोवियट-कांग्रेसको, जो कि कल ता० ७ को आरम्भ होगी, तोड़नेकी कोशिशें हो रही हैं। इसलिये क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटी रक्षाके लिये नीचे लिखी आज्ञाएँ प्रकाशित करती है :—

(१) आज रातको समस्त सैनिक-कमेटियों, जहाज़-कमेटियों और सोवियट-सैनिकोंकी एक बैठक होगी।

(२) आज रातको कोई भी सैनिक अपने स्थानके बाहर न जाये।

(३) हर एक यूनिटसे दो सैनिक प्रतिनिधि और हर एक वार्ड-सोवियटसे पाँच प्रतिनिधि आज रातको स्मोलनी इमारतकी सभामें भेजे जायें।

(४) नगर-सोवियटके समस्त मेम्बरों तथा कांग्रेससे आये हुए प्रतिनिधियोंकी एक प्राइवेट सभा होगी। ठीक वक्तपर सब लोग उपस्थित हो जायें।

शत्रुओंने हथियार उठानेका निश्चय कर लिया है, सैनिकों और मज़दूरोंकी विजय और आशापर बड़ा भारी संकट उपस्थित होने-वाला है। लेकिन हमारी शक्तियाँ कई गुनी अधिक हैं। विरोधियों-का मुँह तोड़ दिया जायेगा। जनताकी भावनाओंका संचालन करनेवाली शक्तियाँ प्रबल है। इसमे कोई सन्देह करनेकी बात नहीं रही है।

क्रान्ति चिरंजीवी हो!

निवेदक—क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटी।"
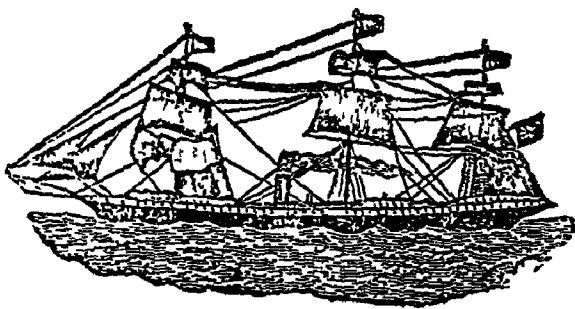
आखिरी रात

६ नवम्बरकी रात भी बलाकी रात थी। रात-भर स्मोलनी-इमारतमें सभाएँ होती रहीं। वक्ता और श्रोता वहीं फर्शपर सो रहते थे और फिर जगते, तो देखते, कि सभा हो रही है। उस दिन ट्रॉटस्की, केमिनीव, वोलोडरस्की आदिको छः-छः, आठ-आठ घंटे व्याख्यान देने पड़े।

एक स्थानपर हम लिख आये हैं, कि पेट्रोग्राडमे एक तो नगर-सोवियट थी, जिसके सभापति ट्राटस्की थे और एक अखिल रूसी सोवियट-कार्य-कारिणी-कमेटी थी। इसमें नरम साम्य-वादियोंकी संख्या अधिक थी। बोल्शेविक इसी कमेटीका छमाही कराना चाहते थे, ताकि इस बार उसमें भी बोल्शेविक अधिक संख्यामें पहुँच कर क़ब्ज़ा जमा लें। लेकिन पुराने मेम्बर चाहते थे, कि सोवियट-कांग्रेस ही न होने पाये, जिससे कार्य-कारिणी-कमेटीका चुनाव न हो सके और नरम-साम्यवादी ही अधिक संख्यामें बने रहें। लेकिन जब उस कमेटीने देखा, कि अब तो कानफरेन्स निश्चय हो जायेगी, तब झक मार कर उस कमेटीके

मेम्बर भी कानफरेन्समें भाग लेनेके लिये आये। रातको उन्होंने प्रतिनिधियोंको भड़कानेके लिये स्मोलनी-इमारतमें ही अपनी कार्य-कारिणी-समितिकी बैठक की। गोज़, डान, आदि नरम साम्यवादियोंने मीठी-मीठी बातें कह कर प्रतिनिधियोंको फुसलाना चाहा; मगर ट्राटस्की और मारटावने सब बातोंका मुँहतोड़ उत्तर दिया।

इस सभाके बाद, पेट्रोग्राड-सेनाके प्रतिनिधियोंकी सभा गुप्त कमरेमें हुई और रातमें आक्रमण करने तथा सबेरे ४ बजेतक मंत्रि-मण्डलको गिरफ्तार करनेकी आज्ञा दे दी गयी। इसके अतिरिक्त लेनिनने अपने प्राइवेट कमरेमें हरएक पल्टनके प्रतिनिधियोंको बुलाकर अलग-अलग काम सौंप दिया। नीवा-नदीके पुलकी किसीको याद नहीं थी, कि यदि खोल दिया गया, तो शहरके भीतर कैसे पहुँच हो सकेगी। लेनिनने रातको १ बजेसे ही कई हज़ार सैनिक पुलकी रक्षाके लिये भेज दिये।

जिस समय सितम्बरमे लेनिन गुप्तवास कर रहे थे; उस समय फिनलैंडके निकट क्रान्सटाडके नाविक-सैनिकोंको बोल्शेविक-दलकी दीक्षा दे रहे थे। उन नाविक-सैनिकोंको संख्या २५००० थी। इन्हीं सैनिकोंने लेनिनके आदेशासे कई सरकारी जहाज़ अपने क़ब्ज़ेमें कर लिये थे; अतः ये जहाज़ बोल्शेविक जहाज़ कहलाते थे। ६ नवम्बरकी रातको ये समस्त सैनिक पेट्रोग्राडके चारो तरफ पड़ाव डाले पड़े थे। इनके आनेकी खबर करेन्स्कीके प्रधान मंत्रीको भी नहीं थी; लेकिन बोल्शेविकोंकी मददके लिये विश्वास-पात्र सैनिक ठीक वक्तपर आ पहुँचे।

इस प्रकार ६ नवम्बरकी रातको बोल्शेविकोंकी सहायताके लिये इतने सैनिक तैयार थे :—६०००० पेट्रोग्राड-सेनाके सैनिक, २५००० नाविक-सैनिक, ५०००० पेट्रोग्राड रेड-गार्ड (मज़दूर)

इनके अतिरिक्त मोटर-साइकिल वालोंकी कम्पनी तथा मेशीन-गनकी कई मोटरें भी बोल्शेविकोंके पक्षमें थीं। सरकारी मैगजीन-का सब सामान धीरे-धीरे क्रान्तिकारी सैनिक-कमेटीने मँगवा ही लिया था। सरकारके हाथोंमें सिर्फ यंकर-सैनिक, कुछ कोसक-सैनिक और बाक़ी नगर-रक्षिणी-सेनाके सिपाही रह गये थे। बुलायी गयी सेनाएँ सरकारी आज्ञाको न मानकर पेट्रोग्राडसे १० मीलकी दूरीपर पड़ाव डाले पड़ी थीं। उनसे मदद्का मिलना असम्भव था।

६ नवम्बरकी रातको करेन्सकी किसी उपायसे बाज़ न आया, लेकिन उसकी एक न चली। अफसर तो कहनेमें थे; मगर सैनिक-गण आज्ञाओंका पालन नहीं करते थे। रूसका वह प्रधान मन्त्री, जिसकी उंगली उठते ही सेना और जनता दोनों अपने सिर कटानेके लिये तैयार हो जाती थी, आज बोल्शेविक आक्रमणको रोकने और 'विण्टर-पैलेसको रक्षा कर सकनेमें असहाय हो रहा था। सवेरे ९ बजेके समय एक मोटरपर चढ़कर करेन्सकी पेट्रोग्राड छोड़कर रफूचक्कर हो गये। अन्य मंत्रियोंको सिर्फ इतनी सूचना दे गये, कि मैं रणक्षेत्रोंकी ओर जा रहा हूँ।

रातको चार बजे सुबह होनेके पहले ही मन्त्रि-मण्डलके मन्त्री गिरफ्तार होकर स्मोलनीमें आने लगे। पहले न्याय-विभागके

सहायक मन्त्री आये; फिर धर्म-विभागके मंत्री आये और नीचे-के तहख़ानोंमें क़ैद कर दिये गये। एक सेना टेलीफोनके दफ्तर-पर क़ब्ज़ा करनेके लिये भेज दी गयी, दूसरी तार-घरपर अधिकार करनेके लिये भेजी गयी, तीसरी सरकारी बैंकपर पहरा बिठ-लानेके लिये गयी, चौथी नदीके पुलोंपर क़ब्ज़ा करनेके लिये भेजी गयी; पाँचवीं 'विण्टर-पैलेस'की तरफ़ गयी। छठी मैरेन्स्की महलकी ओर गयी और सातवीं नेवस्की सड़कपर गयी।......

आठवीं पल्टनने बढ़कर बाल्टिक-स्टेशनपर क़ब्ज़ा कर लिया। स्मोलनो-इमारतमें चुपचाप बैठे हुए लेनिन क्षण-क्षणकी ख़बरोंपर ग़ौर कर रहे थे। ट्राटस्की दूसरी तरफ़ कांग्रेसके प्रतिनिधियोंको समझा रहे थे, कि सोवियटके अधिकारमें राजधानी आ गयी है।

टेलीफोनसे पूछा गया,—"करेन्सकीको क्यों भाग जाने दिया?"

उत्तर—"उसे किसी तरह मालूम हो गया था, कि गिरफ्तार करनेवाली सेना आ रही है।"

फिर प्रश्न,—"मैरेन्सकी-महलपर क़ब्ज़ा होनेमें कितनी देर है?"

उत्तर—"महलके अन्दर स्त्रियोंको एक फ़ौज दिखलाई पड़ी थी; इसलिये अभी गोली चलानेका हुक्म नहीं दिया गया है।"

बहुत दूरपर बन्दूकोंके फायरोंकी हल्कीसी गूँजती हुई आवाज़ें सुनाई पड़ रही थीं। धीरे-धीरे ७ नवम्बरका प्रातःकाल सूर्यकी सुनहली किरणें फैलाता हुआ आ गया।

———

राजधानीपर क़ब्ज़ा

रातमें ही क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीने करेन्सकीकी विश्वास-पात्र सेनाओंके यङ्कर तथा कोसक जातिके सैनिकोंको अपने पक्षमें कर लिया था। अतः करेन्सकी रात-भर जो आज्ञाएँ निकालते रहे; उनका पालन नहीं हुआ। "रोबूची पुट" (बोल्शेविक-पत्र) के सम्पादककी गिरफ्तारीके लिये कुछ यङ्कर-सैनिक भेजे गये थे। उन्होंने जाकर जब देखा, कि प्रेस लाल सिपाहियोंके पहरेमें है, तब यङ्कर-सैनिकोंने सम्पादकको गिरफ्तार करनेकी जगह आत्म-समर्पण करके खुद अपनी गिरफ्तारी करवायी।

७ नवम्बरको ६ बजे प्रातःकाल अपनी सारी शक्तियोंको क्षीण देखकर करेन्सकी एक मोटरपर सवार होकर रणक्षेत्रोंकी ओर भाग गये।

पेट्रोग्राडको नगर-रक्षिणी-सेना सरकारी आज्ञाओंका पालन कर रही थी; लेकिन उसकी संख्या ही कितनी थी? उसने टेली-फोन तथा डाक-घरपर क़ब्ज़ा करना चाहा; पर बादमें उस सेना-ने भी कहला भेजा, कि अब हम सोवियटके विरुद्ध संग्राम नहीं

करेंगे। मन्त्रि-मंडलने, बुरी हालत देखकर निम्न-लिखित अपील जनताके नाम प्रकाशित की :—

"नागरिको ! पेट्रोग्राड सोवियटने घोषित किया है, कि प्रजा-तन्त्र सरकार उलट दी गयी और अब वह शासनाधिकार अपने हाथोंमें लेना चाहती है। विण्टर-पैलेसपर पीटर-पालके क़िलेसे तोपें दागी जा रही हैं, नीवा-नदीमें खड़ा हुआ बोल्शेविक स्टीमर "अवरोरा" शहरपर अग्नि बरसानेकी धमकी दे रहा है। लेकिन सरकार अपनी सत्ता सिर्फ जनताकी चुनी हुई प्रतिनिधि-सभाको ही सौंप सकती है। इसलिये सरकारने इस आक्रमणका मुक़ाबिला करना तय किया है। अतः सरकार आप लोगोंसे और सैनिकोंसे सहायता चाहती है। नयी सेना बुलानेके लिये स्टवकाको तार दिया गया था। उत्तर आया है, कि एक बड़ी भारी सेना रवानः कर दी गयी।

इसलिये नागरिको और सैनिको ! उपद्रवियोंका कहना मत मानो। बोल्शेविकोंका साथ छोड़कर राजधानीकी रक्षा करो।

उपप्रधान मंत्री कोनोलावने भी एक ऐसी ही अपील निकाली; लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। जनता सिर्फ दर्शकों-की भाँति इधर-उधर घूम-फिर कर सारा तमाशा देख रही थी। केवल दो लाल-सिपाहियोंने जाकर अफसरोंके हेड-क्वार्टरपर क़ब्ज़ा कर लिया। उन्होंने अफसरोंसे कहा, कि अगर गिरफ्तार होनेसे इनकार करोगे, तो पीटर-पाल क़िलेसे अभी गोले बरसने लगेंगे। लाचार होकर अफसर गिरफ्तार हो गये और एक मोटर-

लारीपर बिठाकर बोल्शेविकोंको क़ैदमें भेज दिये गये। सैनिक होटलपर (जिसमें सेनाके लिये बहुतसी खाद्य-सामग्री भरी पड़ी थी) अधिकार होनेमें बहुत थोड़ी देर लगी। पहरेपरके सिपाही, लाल सिपाहियोंको देखते ही बड़ी ख़ुशीके साथ आ मिले।

विण्टर-पैलेस और मैरेन्सकी पैलेसके बीचमें बोल्शेविक सिपाहियोंकी पल्टनें खड़ी-खड़ी यङ्कर-सैनिकोंकी राह देख रही थीं ; क्योंकि यङ्करोंकी कुछ पल्टनें अभीतक सरकारका साथ दे रही थीं।

जिस समय मंत्रि-मण्डलके स्थान अर्थात् विण्टर-पैलेसके चारों तरफ़ बोल्शेविक फ़ौजोंने घेरा डाला, उस समय मन्त्रि-मण्डलको प्राइवेट बैठक किसी कमरेमें हो रही थी। करेन्सकी तो रणक्षेत्रोंकी तरफ चले गये थे ; मगर बाकी कई मन्त्रिगण स्थितिपर विचार कर रहे थे।

७ बजे शामसे पहरेदारों और बोल्शेविक लाल सिपाहियोंमें गोली चलती रही। १० बजे रातको बोल्शेविकोंने महलके तीन ओर तोपें लाकर खड़ी कर दीं। खाली फायर दागे गये। सिर्फ़ कुछ गोले भरकर दागे गये, जिससे यङ्कर-सिपाही डरकर महल खाली कर दें। महलके पिछले भागमें स्त्रियोंकी सेना थी, जो सिर्फ इसी ग़रज़से रख छोड़ी गयी थी, कि बोल्शेविक सैनिक गोलेबारी न कर सकें ; क्योंकि बोल्शेविकोंको इस बातका पूरा ध्यान था, कि किसी स्त्रीका एक बालतक बाँका न होने पाये। अन्तमें रातके समय मन्त्रियोंने विण्टर-पैलेस (शरद-महल) खाली कर दिया। स्त्रियोंकी सेना भाग गयी थी, लेकिन कुछ नौजवान

लड़कियाँ रह गयी थीं। सम्भवतः यह स्त्री-सेना ज़ारीनाके समयसे महलकी रक्षाके लिये तैनात थी। करेन्सकीने भी न जाने क्या समझ कर इसे क़ायम रखा। इसका रहस्य आगे चलकर मालूम होगा; क्योंकि स्वयं ट्राटस्की इस क्रान्तिका इतिहास लिख रहे हैं; सम्भवतः वे इसके बारेमें कुछ प्रकाश डालें।

लेकिन जिस समय विण्टर-पैलेसपर बोल्शेविकोंका क़ब्ज़ा हुआ, उस समय शहरके बहुतेरे तमाशाई भी घुस आये थे। रात-को महलमें कुछ लूट भी हुई। सजावटके सामान, क़ालीन, गिलास, फ़ानूस, अलबम आदि-आदि उठ गये। ये सब चीज़ें क़ीमती थीं ज़रूर; मगर जैसा कि दूसरे दिन विरोधियोंने ज़ाहिर किया, कि लाखों रुपयेका सामान लुट गया, ठीक नहीं। साथही बोल्शेविक सेनापर यह भी अभियोग लगाया गया, कि उन्होंने स्त्री-सेनाकी कई लड़कियोंको महलके ऊपरसे ज़मीनपर फेंक दिया तथा बहुतेरी लड़कियोंके साथ व्यभिचार किया गया। इसी कारण बहुतेरी लड़कियोंने आत्म-हत्या कर ली। लेकिन इन अफ़वाहोंकी जाँच करानेके लिये क्रान्तिकारी सैनिक-कमेटीने तुरन्त एक जाँच-कमेटी बिठलायी; जिसने रिपोर्ट प्रकाशित की, कि खास स्त्री-सेनाकी अध्यक्षा श्रीमती टिरकोवाने यह बयान दिया है :—

"महलपर क़ब्ज़ा करनेके बाद स्त्री-सेनाकी सब लड़कियाँ पहले पेट्रोग्राड-छावनीमें लायी गयीं। इनमेंसे कुछ तो पहलेसे ही भागकर शहरमें इधर-उधर छिप रही थीं। कोई लड़की खिड़कीसे नहीं फेंकी गयी।"

एक दूसरे डाक्टरने बतलाया, कि सिर्फ तीन लड़कियोंके साथ व्यभिचार किया गया, जिनमेंसे एक इतनी शर्मिन्दा की गयी, कि उसने बादमें आत्म-हत्या कर ली और एक कागज़पर अपनी आत्म-हत्याका कारण लिखकर छोड़ गयी।

महलका बहुत क़ीमती सामान मास्कोके अजायबघरमें सितम्बर महीनेमें ही भेज दिया गया था; लेकिन ७ नवम्बरको जो लूट हुई, उसमें भी क़रीब ५०००० का माल उठ गया था। इसपर बाल्शेविकोंने एक अपील प्रकाशित की और एक हफ्तेके भीतर एक तिहाई माल वापस मिल गया। कुछ सामान सैनिकोंके पास भी निकला; जो कि उन्होंने प्रसन्नता-पूर्वक वापस कर दिया।

महलपर कब्ज़ा हो जानेके बाद भी हथियार-बन्द मोटर-लारियाँ शहरमें इधर-उधर दौड़ रही थीं। लेकिन शहरके सब काम सुचारु-रूपसे हो रहे थे। थियेटर, बाइसकोप आदि खुले हुए थे। जनताको अपने लिये किसी खतरेका अन्देशा नहीं था।

शहरकी समस्त सरकारी इमारतोंपर क़ब्ज़ा होनेके बाद सोवियट तथा क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीने निम्नलिखित घोषणा प्रकाशित की :—

"रूसके नागरिको!

अस्थायी सरकारका तख्त उलट दिया गया। शासनकी सत्ता पेट्रोग्राड-सोवियट तथा क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीके हाथमें आ गयी है, जो कि पेट्रोग्राडकी सेनाओं तथा श्रमजीवियोंकी प्रतिनिधि रूपमें विद्यमान है।

जिस उद्देश्यके लिये जनताने संग्रामकी घोषणा की थी, वह प्राप्त हो गया। शीघ्र ही लोक-सत्तात्मक सन्धि की जायेगी। ज़मीनपरसे ज़मींदारोंका अधिकार दूर किया जायेगा। मिलोंकी उपजपर मज़दूरोंका अधिकार रहेगा।

मज़दूरों, सैनिकों और किसानोंकी क्रान्ति चिरंजीवी हो!

निवेदक—क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटी,

पेट्रोग्राड-नगर-सोवियट।"
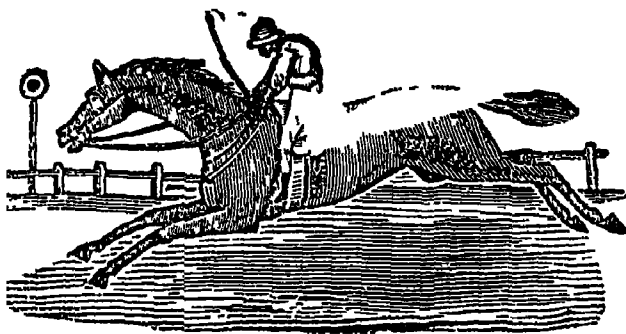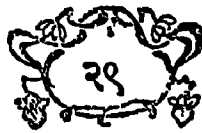
सात नवम्बरकी रातको पहले नगर-सोवियटकी एक बैठक हुई। इसमें लगभग समस्त बोल्शेविक नेता सम्मिलित थे। इस बैठकमें बड़े उत्साहके साथ बोल्शेविकोंने ट्राटस्कीका लिखा हुआ यह प्रस्ताव पास किया :—

"पेट्रोग्राड-सोवियट बड़े आदरके साथ क्रान्तिकी विजय और सफलताका अभिवादन करती है और साथ ही सैनिकों, मज़दूरों, किसानों तथा जनताकी एकतापर उन्हें बधाई देती है, कि नाममात्रके रक्त-पातके पश्चात् ही जनताके भावोंको विजय हुई।

"सोवियट अपना दृढ़ विश्वास प्रकट करती है, कि श्रमजीवियों और किसानोंकी सरकार, जो कि इस क्रान्तिके द्वारा संगठित होगी, वह ग़रीब जनता और ग़रीब किसानोंकी प्रतिनिधि-सत्ता होगी और दृढ़ता-पूर्वक साम्यवादकी ओर बढ़ेगी तथा देशकी दरिद्रता एवं अशान्तिको दूर करेगी।

"नयी सरकार सब देशोंके साथ लोकसत्तात्मक सन्धि स्थापित

करेगी, देशकी उपजपर श्रमजीवियोंका अधिकार स्थापित करेगी और बैंकोंपर सार्वजनिक सत्ता स्थापित करेगी।

"अतः पेट्रोग्राड-सोवियट देशके समस्त मज़दूरों, किसानों तथा सैनिकोंसे अपील करती है, कि वे अपनी पूरी शक्तिके साथ श्रमजीवियोंकी इस क्रान्तिकी रक्षा करें। साथ ही सोवियट यह भी आशा प्रकट करती है, कि यूरोपके अन्य देशोंकी श्रमजीवी-प्रतिनिधि-संस्थाएँ हमारी सहायता करेंगी, जिससे हम साम्यवाद-की विजयको स्थायी बनानेमें समर्थ हो सकें।"

प्रस्ताव पास करने समय सभापति ट्राटस्कीने उच्च स्वरसे कहा कि, "पूँजीवादियोंकी सरकार सिर्फ जनताको धोखा देती रही; लेकिन 'सोवियट-सरकार' एक ऐसी सरकार होगी, जो कि इति-हासमें अद्वितीय कहलायेगी। आज हमने एक ऐसी शक्तिको स्थापित किया है, जो श्रमजीवियों, सैनिकों तथा किसानोंकी अभि-लाषा पूर्ण करनेका ही सच्चा ध्येय रखेगी।"

इस सभामें लेनिन भी आये। जिस समय वे पधारे, उस समय किसान मेम्बरोंने तालियाँ पीटकर उनका अभिवादन किया। तीव्र प्रकाशके समान चमकती हुई आँखें, उन्होंने समस्त बैठे हुए मेम्बरोंपर घुमायीं और गम्भीर मुस्कराहटके साथ सिर हिला-कर सबके आदरका उत्तर दिया। उन्होंने अपनी स्पीचमें कहा कि, "अब समय आ गया है, जब संसार-भरमें साम्यवादी क्रान्तियाँ होंगी। हर्षकी बात है, कि रूसने सबसे पहले इस सच्चे ध्येयके लिये अपना संग्राम उठाया है।"

लेनिनके परम मित्र जिनोवीवने बड़े तपाकसे उठकर गरजते हुए कहा, कि—"आज हमने श्रमजीवियोंका ऋण अदा कर दिया और यूरोपके महायुद्धके उद्देशपर बड़ी ज़बर्दस्त ठोकर मार दी। साम्राज्यवादियोंके मुँह मोड़ दिये और खास करके हत्यारे कैसरका अभिमान चूर कर दिया!......"

* * * * *

इस बैठकके बाद बड़े हालमें अखिल रूसी सोवियट-कांग्रेसका अधिवेशन आरम्भ हुआ। चाहिये यह था, कि इस अधिवेशनमें सोवियट-कार्य-कारिणीके सब मेम्बर उपस्थित होते, जो अभी-तक रूसकी बागडोर हाथोंमें लिये हुए बड़ी-बड़ी डींगे हाँका करते थे। लेकिन मन्त्रि-मण्डलके पतनके कारण हवा पलट गयी थी। करेन्सकी रणक्षेत्रोंकी तरफ़ भाग चुके थे। शीज़े (Tcheidze) बीमारीके कारण अपनी पहाड़ी जन्मभूमिमे निवास करनेके लिये चले गये थे। ज़ेरटेली ज़बर्दस्त वक्ता भी पेट्रोग्राडके पतनके कारण कहीं उदास पड़े हुए होंगे। वे भी कांग्रेसमे मुँह दिखलाने-तक नहीं आये। हाँ, गोज़, डान, लीबर, बोगानाव, व्रोइडो तथा फिलिपुवस्की उपस्थित थे। ये लोग कार्य-कारिणीके ऊँचे मञ्च-पर बिछी हुई कुर्सियोंपर बैठे हुए थे। नीचे देश-भरके प्रतिनिधि अपने-अपने स्थानोंपर आ चुके थे।

१० बजकर ४० मिनटपर रात्रिके समय कांग्रेसका अधिवेशन आरम्भ हुआ।

सबसे पहले नयी कार्य कारिणी-सभा रूसी (भाषामें Tsay-

ee-kah) का चुनाव सामने आया। अवनेसावने खड़े होकर घोषित किया, कि समस्त दलोंको रायसे यह तय हुआ है, कि दलों की प्रतिनिधि-संख्याके अनुसार इन्हे कार्य-कारिणीमें स्थान दिया जाये। वह इस प्रकार होगा :—

बोल्शेविकी १४, साम्यवादी-क्रान्तिकारी ७,
मेन्शेविक ३, स्वतंत्र लोक-सत्तावादी १

इस घोषणाके बाद ही मेन्शेविकी-दलके लोग बिगड़ खड़े हुए, लेकिन पहले चुनावमें वे स्वयं बेईमानीसे काम ले चुके थे। अतः एक सैनिकने डपटकर कहा, कि—"अपने पापोंका परिणाम भोगनेसे क्यों डरते हो? तुमने भी तो बोल्शेविकोंके साथ यथेष्ट अन्याय किया था!"

साम्यवादी-क्रान्तिकारी नेताओंने इस संख्याका विरोध किया, स्वतंत्र मेन्शेविक भी उठ खड़े हुए। मतलब यह कि पुरानी कार्य-कारिणीके समस्त नरम साम्यवादी यह प्रत्यक्ष देखकर, कि उनका बहुमत कार्य-कारिणीमें रह नहीं सकता, उठ-उठकर कांग्रेससे चलते बने। उक्रेन प्रान्तके प्रतिनिधियोंने कहा, कि हमें कार्य-कारिणीमें एक प्रतिनिधित्व दिया जाये। उनकी माँग तुरत स्वीकार कर ली गयी।

इसके बाद बहु-सम्मतिसे कार्य-कारिणी-सभाका चुनाव हुआ। जिन ऊँची कुर्सियोंपर अभीतक मेन्शेविकी मेम्बर बैठे हुए थे, उन्हींपर अब ट्राटस्की, केमनीव, लूनेशारस्की, श्रीमती कोलन्टाय, नोगिन, जिनोवीव आदि सुशोभित हुए।

—

सभापतिके आसनपर केमनीव बिठलाये गये। उन्होंने अपने भाषणमें सत्ता-संगठन, युद्ध और सन्धि तथा अखिल रूसी प्रतिनिधि-सभाकी स्थापनाका वर्णन किया।

इसी समय, ११ बजे रातको विण्टर-पैलेसपर तोपोंके दागे जानेकी भयङ्कर आवाज़ सुन पड़ी। प्रतिनिधिगण चौकन्ने होकर इधर-उधर देखने लगे। नरम दलके बचे हुए नेताओं और वक्ताओंने उठकर बड़े ज़ोरोंसे अपील की, कि—"बाहर सड़कोंपर हमारे भाई मारे जा रहे हैं, विण्टर-पैलेसपर तोपें आग बरसा रही हैं। इस तलवारका बल रखनेवाली कांग्रेसमें हम भाग नहीं लेना चाहते। समस्त प्रतिनिधियोंको ऐसी कांग्रेस छोड़कर नगरकी रक्षा करनी चाहिये।"

मगर दूसरी तरफ़से आवाज़ आयी,—"तुम क्रान्तिके विनाशक हो, प्रतिनिधियोंको भड़काना चाहते हो! तुम कायर हो!! पाखण्डी हो!!!"

इसके बाद कुछ सैनिक अफ़सरोंने, जो कि सैनिक-प्रतिनिधि बनकर आये थे, कांग्रेसके अधिवेशनका विरोध किया; मगर उसी सेनाके एक सैनिकने उन्हें मुँह-तोड़ जवाब दिया और कांग्रेसके सामने खिल्ली उड़ाकर कहा, कि—"ये हज़रत अफ़सरोंके प्रतिनिधि हैं, हमारी सैनिक-कमेटी सितम्बरमें ही पास कर चुकी है, कि सोवियटके हाथमें शासन-सत्ता चली जानी चाहिये।"

इस प्रकार लगभग सब विरोधी-दलके रँगे हुए प्रतिनिधि उठकर चलते बने। बोल्शेविकोंके लिये मैदान साफ़ हो गया।

ट्राटस्कीने उठ कर बड़ी ओजस्विनी भाषामें बतलाया, कि—"ये जितने सज्जन उठकर गये हैं, उन दलोंके हैं, जिन्होंने पूँजीवादियों-से समझौता करके जनताके अधिकारोंको कुचला था।......"

इस समय, प्रतिनिधियोंको सन्तुष्ट करनेके लिये क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीने कहला भेजा कि "नगर म्युनिसिपेलिटीकी दरख्वास्त-पर हमने अपने प्रतिनिधियोंको विण्टर-पैलेसमें सैनिकोंके साथ समझौता करनेके लिये भेजा है, जिससे नागरिकोंकी जान-मालको खतरा न पहुँचने पाये।"

इसके बाद कांग्रेसका कार्य शान्तिपूर्वक आरम्भ हुआ।

सबसे पहिले सोवियटके हाथमें शासनाधिकारोंका दिया जाना निश्चित हुआ। तत्पश्चात्, अन्य दलोंके प्रतिनिधियोंके उठ जानेकी परवाह न करनेकी बात तय हुई।

इसी समय, सारस्को सेलोकी सेनाका एक सैनिक दौड़ता हुआ आया और उसने कांग्रेसके सम्मुख बयान किया, कि सारस्को सेलोकी सेना पेट्रोग्राडके फाटकपर तैनात हो गयी है, बाहरी हमलेसे वह शहरकी रक्षा करेगी। साइकिल-सेनाके सैनिक भी, जो कि रणक्षेत्रोंसे बुलाये गये थे, हमसे मिल गये हैं। साइ-किल-सेना नम्बर पाँचकी सूचना आयी है, कि वह पूरी तरहसे हमारा साथ देगी। बटालियन नम्बर तीनके प्रतिनिधियोंने भी सोवियटकी सत्ता स्वीकार कर ली है।

इसके बाद, कांग्रेसने बड़े उत्साहके साथ निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया :—

"अखिल रूसी सोवियट-कांग्रेसकी इस बैठकमें, जिसमें देश-भरके सैनिकों, मज़दूरों तथा किसानोंके सोवियट-प्रतिनिधि सम्मिलित हैं, जनताको अभिलाषाके अनुकूल सोवियटके हाथमें शासनका पूरा अधिकार सौंपा जाता है। करेन्सकीको सरकार तोड़ दी गयो है और कई मन्त्री गिरफ्तार कर लिये गये हैं।

"सोवियट फौरन सन्धि स्थापित करेगी, भूमि-कमिटियोंके हाथमें जमीनोंका बँटवारा सौंप देगी, सैनिकोंकी व्यक्तिगत स्वाधीनता क़ायम करेगो और मज़दूरोंके अधिकारमें मिलोंकी उपज दे दी जायेगी। शीघ्रही देश-भरकी प्रतिनिधि-सभा (Constituent Assembly) का चुनाव करेगी। देश-भरके शहरों और गाँवोंमें ठीक वक्तपर खाद्य-पदार्थ भेजा करेगी और समस्त जातियोंको समान स्वाधीनता प्रदान करेगी।

"यह कांग्रेस, प्रान्तिक-कौंसिलोंको आज्ञा देती है, कि वे प्रान्तिक सोवियटोंके हाथमें शासन-सत्ता सौंप दें, जो कि जनताके नामपर प्रान्तिक व्यवस्था क़ायम करेंगी।

"यह कांग्रेस रण-क्षेत्रोंपरके सैनिकोंको चेतावनी देती है, कि जबतक सोवियट-सरकार सन्धि स्थापित करके युद्ध बन्द न कर दे, तब तक वे सावधानीसे रूसी सीमाओंकी रक्षा करें, सोवियट-सरकार सैनिकोंके भोजन तथा कपड़ोंका प्रबन्ध करेगी।

"सावधान! करेन्सकी और कार्नीलोविज़, कैलडोन आदि पेट्रोग्राडपर चढ़ाई करनेवाले हैं। सैनिको! जनताके इन शत्रुओंका साथ मत दो। पेट्रोग्राडके रास्तेपर इनको रोक दो।

"रेलवे-कर्मचारियो! देशके कल्याणके विचारसे और सोवियटकी आज्ञाके लिहाजसे तुम विरोधियोंकी सेनाओंको पेट्रोग्राडकी तरफ़ कदापि न आने दो।

"सैनिको, मज़दूरो और क्लर्को! क्रान्तिकी सफलता तुम्हारे हाथोंमें है; इसे खूब याद रखना।

क्रान्ति चिरंजीवी हो!

निवेदक,

अखिल रूसी-सोवियट कांग्रेस।"

पेट्रोग्राडपर हमला

सात नवम्बरको सबेरे ६ बजे करेन्सकी पेट्रोग्राड छोड़कर रणक्षेत्रोंकी तरफ दौड़ गये थे। मोटरपर वे पहले गचीना पहुँचे। वहाँ उनके लिये स्पेशल ट्रेन खड़ी थी। सन्ध्या समय वे स्काव-प्रान्तके ओस्ट्राव शहर पहुँचे। रात-भर विश्राम किया। पेट्रोग्राडमें क्या हो रहा होगा, इसकी खबर उन्हें पहुँचानेका कोई प्रबन्ध न हो सका; क्योंकि ख़ास सेक्रेटरी तकसे वे यह कह-कर नहीं आये थे, कि किधर जा रहे हैं। सबेरे वहाँकी सोवियटकी सभामें करेन्सकीने सहायताकी अपील की, कोसक-सिपाहियोंको समझाया, कि बोल्शेविकोंका दमन करो, हमारी सहायता करो। कोसक तैयार हो गये; मगर अन्य सैनिकोंने विरोध किया, कुछ लोगोंने भरी सभामें पुकार कर कहा,—"तुम यहाँ क्यों आये ?" करेन्सकीने उत्तर दिया, कि "मैंने कार्नीलाफको परास्त किया है और एक दिन मैं बोल्शेविकोंको भी चूर-चूर कर दूँगा !"

इसपर मेम्बरोंमें और उपस्थित जनतामें कोलाहल मचा। अन्य सैनिकोंने चाहा भी, कि यहीं करेन्सकीको गिरफ़ार कर लिया जाये,

मगर कोसकोंने जान-बूझ कर करेन्सकीको जाने दिया। करेन्सकी फिर मोटरपर रवानः हुए। ८ नवम्बरकी रातको वे लूगा छावनीमें पहुँचे, जहाँ डेथ-बटालियन ("यमराज"की सेना) के सैनिकोंने बड़े आदरसे प्रधान मन्त्रीका स्वागत किया। उन्हें यह नहीं मालूम था, कि प्रधान मन्त्री प्राण लिये भागे फिरते हैं। उन्हें यह भी मालूम नहीं था, कि राजधानी बोल्शेविकोंके हाथोंमें चली गयी है।

इन सेनाओंने मदद करनेका वादा किया। इसके बाद करेन्सकी मोटर छोड़कर फिर रेलपर बैठे। पश्चिम-दक्षिणी सीमापरकी सेनाओंने मदद करनेसे साफ इनकार कर दिया। सैनिकोंको यहाँ तक पता न चलने दिया, कि प्रधान मन्त्री करेन्सकी आये हुए थे! वहाँसे करेन्सकी स्टोवका-छावनीमें पहुँचे। वहाँ उन्होंने कई सेनाओंको राजधानीकी तरफ़ धावा बोलनेका हुक्म दिया। कुछने इनकार कर दिया, कुछ सेना चलकर रास्तेमें ही रुक गयी। कहा जाता है, कि सिर्फ ५ हजार कोसक करेन्सकीकी आज्ञा मानकर चल पड़े।

यहाँ पेट्रोग्राडमें अफ़वाह उड़ रही थी, कि करेन्सकीने रण-क्षेत्रोंकी सेनाओंको एकत्र करके पेट्रोग्राडपर चढ़ाई बोल दी है। शहर-भरमें खूब अफ़वाहें उड़ रही थीं। दूसरे ही दिन, "बोलिया-नरोडा" पत्रमें करेन्सकीकी यह घोषणा निकली :—

सेनाओंके नाम।

"बोल्शेविकोंने उपद्रव मचाकर देशको खतरेमें डाल दिया है। इस संकटके समय इस बातकी ज़रूरत है, कि समस्त सैनिक, एक

इच्छा और एकसा उत्साह रखकर स्वदेश-संकटका निवारण करें। जबतक नयी सरकारके संगठनकी घोषणा हम प्रकाशित न कर दें, तबतक समस्त अफसर और सब सेनाएँ यथास्थानपर अपना-अपना काम करती रहे। याद रहे, यदि सेनामें अव्यवस्था फैली, तो शत्रुके लिये देशका द्वार खुल जायेगा। सैनिको! अपनी आन निबाहते रहो। इस संकटके समय अफसरोंपर विश्वास क़ायम करो और मैं अफसरोंको भी, बहैसियत "प्रधान सेनापति" के आज्ञा देता हूँ, कि वे अपने-अपने ओहदोंपर डटे रहें।"

इसके उत्तरमें, पेट्रोग्राडमें होनेवाली सोवियट-कांग्रेसने यह पोस्टर प्रकाशित करके प्रत्येक बड़े-बड़े शहरोंमें चिपकवा दिया :—

"मन्त्रियोंमेंसे कोनोवालाव, किशकिन, टेरशेन्को, मलिय-एटोविच, निकीटिन आदि-आदि क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटी द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये हैं। प्रधान-मन्त्री करेन्सकी भाग निकले हैं। देश-भरकी सेना-कमेटियोंको हुक्म दिया जाता है, कि जहाँ पाओ, करेन्सकीको गिरफ्तार करके पेट्रोग्राड ले आओ। जो करेन्सकीकी सहायता करेगा, वह राज्यका शत्रु समझा जायेगा और उसे दण्ड भी अवश्य दिया जायेगा।"

इसी आशयकी आज्ञाएँ तमाम रणक्षेत्रोंपरकी सेनाओंके पास रवानः की गयीं।

८ नवम्बरको क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीने कई घोषणाएँ और अपीलें निकालीं। साथही उसने जनरल कार्नीलाफ़ (विद्रोही सेना-पति) को पेट्रोग्राडके क़िलेकी क़ैदमें रखनेके लिये कड़े पहरेमें

मँगवा लिया। करेन्सकोकी सरकारने जिन भूमि-कमेटियोंके मेम्बरोंको जेलमें ठूँस दिया था, वे सब जेलसे मुक्त किये गये। सैनिकोंको प्राण-दण्ड देनेकी प्रथाको तुरन्त बन्द कर दिया और सरकारी दफ्तरोंके नौकरों, क्लर्कों और चपरासियोंका अपने-अपने कामपर आनेका हुक्म दिया गया। अवज्ञा करनेवालोंके लिये कठोर दण्डकी घोषणा की गयी।

अस्थायी तौरसे, मन्त्रि-मण्डलके दफ्तरोंका काम-काज सम्हालते रहनेके लिये निम्नलिखित कमिश्नर तैनात किये गये :—

(१) परराष्ट्र-विभाग—यूरस्की और ट्राट्स्की
(२) देशीय और न्याय विभाग—रायकाफ
(३) श्रमजीवी-विभाग—श्लीनीकाव
(४) अर्थ-विभाग—मेञ्जेन्स्की
(५) सार्वजनिक सेवा-विभाग—श्रीमती कोलण्टाय
(६) व्यापार तथा मार्ग-विभाग—रेज़ानाव
(७) नौसेना-विभाग—कोरबीर
(८) डाक-तार-विभाग—स्पाइरो
(९) थियेटर-विभाग—मूराबियाव
(१०) छापाखाना-विभाग—गरबीशेव
(११) पेट्रोग्राड-रक्षा-विभाग—लेफ्टीनेण्ट नेस्टीराव
(१२) उत्तरी रणक्षेत्र-विभाग—पोजेरन

इसके सिवा, क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीने कोसकोंको बोल्शेविकोंके विरुद्ध पेट्रोग्राडपर चढ़ाई न करनेका उपदेश दिया।

एक दूसरी अपीलमें, रेलवे-कर्मचारियोंसे कहा गया, कि अपने कामको सावधानोसे करते रहो और हर एक शहरको खाद्य-सामग्री पहुँचाते रहो। सेनाओंके लिये रसद भेजनेमें गड़बड़ी न हो, इसका ध्यान रखो। रेलवे-मार्ग-विभागमे उन्हें अपने-अपने प्रतिनिधि भेजनेका भी अधिकार दिया गया।

कोसकोंके नाम जो अपोल प्रकाशित की गयो थी, उसका एक अंश इस प्रकार है:—

"कोसक भाइयो! तुम्हें पेट्रोग्राडपर चढ़ाई करने और राजधानोके श्रमजीवियों और सैनिकोंके विरुद्ध हथियार उठानेकी उत्तेजना दी जा रही है। अतः जनताके शत्रुओं और ज़मींदारीके समर्थकोंकी बातोंपर विश्वास मत करो।"

"अपने कोसक प्रतिनिधियोंको सोवियट कांग्रेसमें भेजो। तुम्हे यह कहकर भड़काया जा रहा है, कि सोवियट-कांग्रेस तुम्हारी ज़मीनें ज़ब्त कर लेगी। यह नितान्त असत्य है। विरोधियोंकी बातोंपर ज़रा भी विश्वास मत करो।

"कोसक-भाइयो! देशके श्रमजीवियों और सैनिकोंके साथ एकता क़ायम करो, अपने प्रतिनिधि भेजकर कांग्रेसमें अपना अधिकार स्थापित करो!"

विरोधका झण्डा

३१

"There must be chaos, that out of chaos may come forth new stars. There must be chaos, that new worlds may be born." —NIETZCHE

सोवियट-कांग्रेससे उठकर चले आनेवाले मेन्शेविकी तथा अन्य नरम साम्यवादी-दलोंके नेताओंके पास अब केवल एक ही संस्था थी, अर्थात् पेट्रोग्राडकी म्युनिसिपैलिटी। उसमें मेन्शेविकियोंका बहुमत था। उसकी इमारत भी अभी तक बोल्शेविकोंके क़ब्जेमें नहीं आयी थी। वहींपर एकत्र होकर 'प्रजातन्त्र-कौंसिल' के सभापति अवसेण्टीव, म्युनि० चेयरमैन श्नोडर और ज़ेरटेलो, डान, गोज़ तथा लीबर आदि मेन्शेविकी नेताओंने एक "देशोद्धारिणी सभा" का संगठन किया।

देशोद्धारिणी-सभा (Committee for Salvation of Country and Revolution) की कोशिशसे म्युनिसिपैलिटीकी सेनाएँ (नगर-रक्षिणी सेना) तथा रेलवे-कर्मचारी-मण्डलने बोल्शेविकोंके विरुद्ध आन्दोलन उठानेकी स्वीकृति दे दी थी। इसके

बाद डाक तथा तार-विभागके कर्मचारी भी आ मिले। इस प्रकार एक विरोधिनी शक्तिका भी संगठन हो चला।

एक प्रतिनिधि-मण्डल करेन्सकीसे परामर्श लेनेके लिये गचीना-की तरफ भेजा गया और कुछ लोग अन्य प्रान्तोंमे बोल्शेविकोंके विरुद्ध आन्दोलन उठानेके लिये रवानः हुए।

अब सोवियट-कांग्रेस और म्युनिसिपैलिटीका संग्राम जारी हुआ। दोनों तरफसे अपीलें और घोषणाएँ प्रकाशित हो रही थीं, देशोद्धारिणी-सभा सेनाओंको बुलाने और पेट्रोग्राडपर आक्रमण करानेकी कोशिश कर रही थी।

जनताको भड़कानेके लिये देशोद्धारिणी-सभाकी ओरसे अफ़-वाहें फैलायी जा रही थीं, कि बोल्शेविकोंने विएटर-पैलेसपर कब्ज़ा करते समय यंकर-सिपाहियोंके हथियार रख देनेपर भी उन्हें क़त्ल करा दिया। स्त्री-सेनाकी लड़कियोंके साथ घोर अत्याचार किया गया। कई मन्त्री गिरफ्तार करनेके बाद गोलीसे मार डाले गये। प्रिन्स-टुमानावके जीते-जी ही, यह अफ़वाह उड़ा दी गयी, कि उनकी लाश नीवा-नदीमें पड़ी मिली है। लेकिन, जब प्रिन्स टुमा-नावके रिश्तेदारोंने सूचना भेजी, कि जीता-जागता आदमी कैसे मर सकता है, तब प्रिन्स टुमानाव भी गिरफ्तार किये गये; पर वे मारे नहीं गये।

पीछे खबर उड़ी, कि वह लाश जेनरल डेमीसावकी है; मगर जेनरल डेमीसावने भी इसका खण्डन किया। देशोद्धारिणी-सभाने अपनी पहली अपीलमें कहा :—

"जनताकी इच्छाके विरुद्ध बोल्शेविकोंने अत्याचार-पूर्वक कुछ मन्त्रियोंको गिरफ्तार कर लिया है और प्रजातन्त्र-कौंसिलको भंग कर दिया है। यह अपराध देशकी शासन-व्यवस्थाको नष्ट करनेवाला अपराध है। यह दुर्घटना ऐसी है, जिससे देशकी वर्त्तमान स्थितिको बड़ा भारी धक्का पहुँचेगा और शान्ति दूर चली जायेगी।

अतः देशोद्धारिणी-सभाने वैध-सत्ताको रक्षा (Preserving legal Governmental Power) के नामपर नये मन्त्रि-मण्डलकी रचना और प्रतिनिधि-सभाके चुनावका काम अपने हाथमें ले लिया है। देश-भरकी लोकसत्ताका हमें पूर्ण भरोसा है।

अतः नागरिको! उपद्रवियोंका कहना मत मानो और इस विद्रोहको शान्त करनेमें हमारी सहायता करो।—देशोद्धारिणी-सभाकी मदद करो।"

इसके बाद, मेन्शेविकी-दलने एक बड़ा भारी पोस्टर निकाला :—

"पेट्रोग्राडमें दुर्भिक्ष फैल जायेगा। जर्मन सेनाएँ चढ़ आयेंगी। हमारी स्वाधीनता नष्ट हो जायेगी। इसलिये नागरिको, सैनिको, श्रमजीवियो! एकता क़ायम करो।

बोल्शेविकोंकी बातोंपर विश्वास मत करो! "सन्धिकी बात" झूठी है। "रोटीका सवाल" दिलासा है। "ज़मीन बाँटनेकी बात" सब्ज़बाग़ है! सावधान!!"

फिर दूसरी अपील इस प्रकार प्रकाशित हुई :—

"सहयोगियो! तुम बुरी तरह धोखा खा गये! बोल्शेविकोंने

पूरा धोखा दिया। बोल्शेविक सिर्फ अपने ही हाथोंमें सत्ता रखना चाहते, दूसरे साम्यवादी दलोंकी परवाह नहीं करते हैं।

ज़मीन बाँटने और स्वाधीनताके अधिकार देनेकी बात अस्थायी है। इसके बाद परिक्रान्ति (Counter Revolution) के समय ऐसी उथल-पुथल उठ खड़ी होगी, कि तुम्हारी ज़मीनें तुम्हारी स्वाधीनता, सब कुछ जाता रहेगा।.........

मेन्शेविकी अख़बारोंका कहना था, कि "यह सोवियट-कांग्रेस नहीं है, यह तो सिर्फ बोल्शेविक-दलकी एक कान्फरेन्स-मात्र है। अतः पुरानी कार्य-कारिणी कमेटीको ही मानना चाहिये। बोल्शेविकोंने अन्य साम्यवादी दलोंको शामिल न करके अपनी नीचता-का स्पष्ट परिचय दिया है!"

इन विरोधी अपीलोंके विरुद्ध बोल्शेविकोंके अख़बारोंमें भी दनादन अपीलें और घोषणाएँ निकल रही थीं। ८ नवम्बरको लेनिनका "प्रवडा" समाचार-पत्र फिर प्रकाशित हुआ। यह पत्र जुलाईमें करेन्सकी द्वारा बन्द कर दिया गया था। इसमें देश-भरके श्रमजीवियों और सैनिकोंसे लेनिनने यह अपील की :—

"मज़दूरो, सैनिको और किसानो! मार्चमें तुमने राज-सत्ता-को चकनाचूर करके अत्याचारियोंका राज्य नष्ट कर दिया था। कल तुमने पूँजीवादियोंका तख्ता उलट दिया। तीन काम अभी तुम्हारे सामने और हैं :—

(१) पेट्रोग्राडकी रक्षा करो।

(२) विरोधियोंके हथियार छीन लो।

(३) अपनी सरकार क़ायम करो !"

थोड़े ही समयके बीचमें बोल्शेविक-दल कई काम पूरा करना चाहता था। उसपर इस समय जिम्मेदारियोंके पहाड़ टूट पड़े थे। उन्हें करेन्सकीके आक्रमणको रोकना था। उन्हें म्युनिसिपैलिटीपर क़ब्ज़ा करना था। उन्हें नरम साम्यवादियोंको परास्त करना था। उन्हें कांग्रेसके अन्दर नयी सरकारकी स्थापना करनी थी। उन्हें समस्त प्रान्तोंकी सोवियटोंको अपनी-अपनी सत्ता क़ायम करके प्रान्तिक शासनपर अधिकार कर लेनेकी आज्ञा भेजनी थी। उन्हें सैनिकोंकी गतिपर निगाह रखनी थी। उन्हें पेट्रोग्राडके अन्दर शान्ति स्थापित रखना लाजिमी था।

लेनिनका अभिभाषण

आठ नवम्बर, सोवियट-कांग्रेसका दूसरा दिन था, लेकिन ऐक बजेके बजाय कांग्रेस ८ बजे शामको आरम्भ हुई। इस दर्म्यानमें अखिल रूसो-सोवियेट-कमेटी (कार्यकारिणी सभा) की बैठक होती रही। विवाद यह था, कि क्या अकेला बोल्शेविक-दल ही सरकारी सत्ताको सम्हालनेमें कृतकार्य हो सकेगा। लेफ्ट साम्यवादी-क्रान्तिकारी-दलके नेताओंका कहना था, कि देशके साम्यवादी-दलोंको मिलाकर मन्त्रिमण्डल स्थापित किया जाये। लेकिन, ट्राटस्की तथा लेनिनने इस बातपर ज़ोर दिया, कि जब नरम साम्यवादी तथा मेन्शेविकी-दलके मेम्बर कांग्रेसको वैध-कांग्रेस ही नहीं मानते, तब वे सहयोग ही क्यों करने लगे? दूसरी बात यह, कि जबतक वे सच्चे साम्यवादी सिद्धान्तोंके अनुसार काम करनेका निश्चय नहीं कर लेते, तबतक हम उन्हें "साम्यवादी" कहकर क्यों पुकारें? कैमिनीव (सभापति) तथा रियाज़ानाव आदि बोल्शेविक नेता भी लेनिनसे सहमत नहीं थे। लेकिन लेनिन अपने हठपर कायम रहे। उन्होंने कहा,—

"समझौता चाहनेवाले हमारी नीतिको स्वीकार करें, तो आयें ! हम उनका स्वागत करेंगे। वरना, हम तिल-भर भी जगह न खाली करेंगे। अगर हमारे बीचमें, ऐसे साथी भी हैं, जो हमारी तरह इच्छा और साहस नहीं रखते, तो वे भी उन्हीं कायरोंकी भाँति उठकर चले जायें, हम मजदूरों और सैनिकोंके भरोसे आगे बढ़ेंगे!" इसी समय लेफ्ट साम्यवादियोंका पैग़ाम आया, कि "हम साथ देंगे"; लेकिन कहा "देखो, वे हमारी नीतिका अनुसरण कर रहे हैं !"

आठ बजकर चालीस मिनटपर, कार्यकारिणीके मेम्बर कांग्रेस-हालमें पधारे। आज उनके बीचमें लेनिन भी थे। कलकी कांग्रेसमें वे नहीं आये थे। कांग्रेसने उनके दर्शन आज ही किये। उनको देखते ही करतल-ध्वनिसे हाल गूँज उठा। बड़ी देरतक हर्ष-ध्वनि होती रही। लेनिन बड़ी सादगी और गम्भीरताके साथ अपने स्थानपर जा बैठे।

कार्रवाई आरम्भ करनेके पहले सभापति केमीनावने क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीकी २४ घण्टेकी रिपोर्टको पढ़कर इस प्रकार उपस्थित जनताको सुनाया :—

"सैनिकोंको अभीतक प्राण-दण्डको जो सज़ा दी जाती थी, वह बिल्कुल बन्द कर दी गयी। (करतल-ध्वनि) हरएक दलका अपने-अपने सिद्धान्तोंके प्रचारकी पूर्ण स्वाधीनता दे दी जाती है। (करतल-ध्वनि) वे सब अफ़सर और सैनिक जेलसे मुक्त किये गये, जो राजनीतिक अपराधोंके कारण करेन्सकीकी सरकारके

द्वारा जेलोंमें ठूँस दिये गये थे, (करतल-ध्वनि) करेन्सकीको जहाँ पाओ, गिरफ्तार करके पेट्रोग्राड भेज दो, (करतल-ध्वनि) अमीरों द्वारा छिपाये हुए अन्न-भण्डारोंपर क़ब्ज़ा कर लो। (करतल-ध्वनि)"

इसी बीचमें, सीमान्तसे तत्क्षण आये हुए प्रतिनिधियोंने सोवियटकी सफलतापर कांग्रेसको बधाई दी।

हर्ष-ध्वनिके बीचमें महापुरुष लेनिन उठे। सबसे पहिला प्रस्ताव उन्हींका था। भाषण-मञ्चपर खड़े होतेही फिर चिरस्थायी हर्ष-ध्वनि हुई, जिसका अभिवादन करनेके लिये, लेनिन मुस्कुराते हुए थोड़ी देरतक खड़े रहे। उनकी चमकती हुई छोटी-छोटी आँखें विशाल-प्रतिनिधि-समूहपर एक विचित्र प्रभाव डाल रही थीं। बैठे हुए प्रतिनिधि भी समझ रहे थे, कि कोई महाशक्ति उनके सामने खड़ी हुई है।

लेनिनने आरम्भ करते हुए कहा,—"अब हम साम्यवादी सत्ता-की स्थापना करेंगे! (विराट् करतल-ध्वनि) सबसे पहले हम सब-को ऐसे उपाय काममें लाने चाहिये, जिनके द्वारा देशवासियोंके हृदयोंमें शान्तिका वास्तविक प्रादुर्भाव हो। ख़याल रहे, हम किसी देशकी सरकारसे 'सन्धिकी अपील नहीं करेंगे; लेकिन हमारी अपील उन देशोंकी जनताके प्रति होगी। हमारी सन्धि सोवि-यटकी बतलाई हुई शर्त्तों पर होगी। (करतल-ध्वनि) वे कौनसी शर्त्तें हैं? कोई देश किसी दूसरे देशपर कब्ज़ा न रख सके। कोई देश किसी दूसरे देशसे हर्ज़ानेकी रक़म न ले सके। और प्रत्येक प्रदेशकी जनताको आत्म-निर्णयका अधिकार दिया जाये।

हम ठीक उसी समय, अपने वादेके अनुसार, समस्त गुप्त-सन्धियोंको प्रकाशित कर देंगे, जो कि अभीतक अन्य देशोंने रूसके साथ की हैं ! (करतल-ध्वनि) सहयोगियों ! युद्ध और सन्धिका सवाल इतना व्यापक हो रहा है, कि उसके सम्बन्धमें भूमिका बाँधनेकी ज़रूरत नहीं है। इसलिये मैं अपना वह प्रस्ताव, जो कि सोवियट-सरकारकी घोषणाका रूप रखता है, आपको पढ़कर सुनाता हूँ :—

६ और ७ नवम्बरकी क्रान्तिके पश्चात् मज़दूरों, सैनिकों और किसानोंकी सोवियट द्वारा स्थापित की हुई, यह सरकार, समस्त युद्ध-लिप्त राष्ट्रोंकी जनता तथा उनकी सरकारोंके सम्मुख प्रस्तावना करती है, कि वे शीघ्रही एक उचित और लोक-सत्तात्मक सन्धिकी स्थापना करें।

सोवियट-सरकार ऐसी सन्धि चाहती है, जो उचित हो और लोकसत्ताके सिद्धान्तोंके अनुसार निश्चित की जाये। हमारे देशके श्रमजीवी, जो कि ज़ारकी सत्ता भंग करनेके बादसे बराबर सच्ची संधिकी कामना करते आ रहे हैं, ऐसी सन्धि चाहते हैं, जिसके अनुसार कोई देश किसी पराये भूखण्डपर अधिकार न रख सके और किसी देशसे हर्ज़ानेकी रक़म वसूल न कर सके। यह सन्धि शीघ्र-से-शीघ्र हरएक देशकी जनताके सच्चे लोक-मतके अनुसार की जाये। हमारी सोवियट-सरकार इसी अभिप्रायसे समस्त देशोंकी जनता तथा उनकी सरकारोंसे प्रार्थना करती है, कि वे निश्चयात्मक रूपसे ऐसी सन्धिका उपाय करें।

'किसी देशपर अधिकार करने'का अर्थ यह है, कि इस सन्धिके साथ-साथ किसी देशको यह अधिकार न रहे, कि वह दूसरे देश-के किसी भागपर अपना अधिकार रख सके और सैनिक बलकी प्रधानताके कारण कमज़ोर राष्ट्रोंके लोकमतको दबाकर अपनी सत्ता स्थापित कर सके। यह शर्त्त यूरोप और यूरोपके बाहर प्रत्येक देशके लिये लागू समझी जाये। इस सन्धिके अनुसार जीते हुए प्रदेशोंसे प्रत्येक देश अपनी-अपनी सेनायें वापस बुला ले और तब उन देशों या प्रदेशोंकी जनताको स्वाधीनता पूर्वक अपने सम्बन्धमें निश्चय करनेका अवसर दिया जाये। यदि ऐसा न किया जायेगा, तो यह सैन्य-बलका अत्याचार कहलायेगा।

पूँजीवादी देशों और समुदायोंकी स्वार्थ-पूर्तिके लिये इस संग्रामको जारी रखना, सोवियट-सरकारके विचारसे मनुष्य-जाति पर घोर अत्याचार करनेके बराबर है, बड़ा भारी जुर्म है।

सोवियट-सरकार गुप्त-सन्धियोंकी नीतिको घृणित समझती है और सम्पूर्ण देशके सामने यह स्पष्ट घोषित करती है, कि वह इस सन्धिको सूर्य-प्रकाशमें, खुले शब्दोंमें स्थापित करेगी और उन पुरानी गुप्त-सन्धियोंको प्रकाशित कर देगी, जो कि ज़ारके ज़माने-से लेकर ७ नवम्बर तक रूसी सरकार द्वारा की जा चुकी हैं।

इन गुप्त-सन्धियोंकी वे सभी शर्तें, जो कि पूँजी-वादियोंके लाभकी दृष्टिसे रखी गयी थीं, सोवियट-सरकारकी दृष्टिमें पाप-मय हैं, उन सब शर्तोंको सोवियट-सरकार रद्द करती है।

इस सन्धिकी स्थापनाके पहिले तीन मासके लिये "क्षणिक-

सन्धि" अर्थात् समस्त रणक्षेत्रोंमें युद्ध बन्द कर देनेका प्रस्ताव करती है और इन तीन महीनोंके अन्दर यथेष्ठ समय है, जिसके दर्म्यान उचित विचार और परामर्श द्वारा सच्ची लोक-सत्तात्मक सन्धि प्रतिपादित की जा सकती है।

इस सन्धिकी प्रस्तावना करते समय, रूसके श्रमजीवियोंकी यह सरकार संसारके तीन प्रधान देशों, इङ्गलैण्ड, फ्रान्स एवं जर्मनीके श्रमजीवियोंसे,—जो कि मनुष्यजातिकी सेवाका परम-ध्येय रखते हैं—अपील करती है, कि वे अपने साम्यवादी संग्रामके ध्येयको सम्मुख रखकर अपने कर्त्तव्यके प्रति—वह कर्त्तव्य जो उन्हें मनुष्य-जातिके उद्धारके लिये आवाहित करता है—ध्यान दें, और सताई हुई मनुष्यताको युद्धके भयानक पंजेसे मुक्त करें एवं स्वार्थियों द्वारा लूटे हुए तथा वञ्चित किये हुए श्रमजीवियोंके स्वत्वोंकी रक्षा करनेमें हमारी सहायता करें।"

संसारके पूँजीवादी-राष्ट्रोंको कँपानेवाले इस इतिहास-प्रसिद्ध प्रस्तावको पढ़कर लेनिन कुछ देर शान्ति-पूर्वक खड़े रहे। करतल-ध्वनिके साथ प्रस्तावका आदर हुआ। तत्पश्चात् लेनिनने अपना वक्तव्य आरम्भ किया :—

सहयोगियों, मैं प्रस्ताव करता हूँ, कि यह घोषणा कांग्रेसकी ओरसे प्रत्येक देशकी जनताके नाम भेजी जाये, सम्भव है, कि सरकारोंके पास न भेजनेसे सन्धि होनेमें देर लगे; परन्तु हम साम्य-वादी उपायोंका अवलम्बन इसी समयसे करना चाहते हैं। क्षणिक-सन्धिके समय जो कुछ शर्तें तयकी जायेंगी, उनका निश्चय 'अखिल-

रूसी-प्रतिनिधि सभा' में किया जायगा। हमने तीन महीनेकी काफी मियाद देदी है। हम खूब जानते हैं, कि साम्राज्यवादी देशोंकी सरकारें इस प्रस्तावका घोर विरोध करेंगी, लेकिन हमें पूर्ण आशा है, कि शीघ्रही उन देशोंमें श्रमजीवियोंकी क्रान्तियाँ जन्म लेंगी, और इसी लिये हमने इस प्रस्तावमें सीधी अपील उन देशों—इंगलैंड, फ्रान्स तथा जर्मनी—के श्रमजीवियोंके नामकी है। ६ तथा ७ नवम्बरकी क्रान्तिने साम्यवादके युगको जन्म दे दिया है।

इतना कहकर मोशिये लेनिन करतल-ध्वनिके बीचमें, अपनी जगहपर जा बैठे।

प्रस्तावके सम्बन्धमें हरएक दलके लोगोंको पन्द्रह-पन्द्रह मिनट बोलनेकी आज्ञा दी गयी।

सबसे पहिले लेफ्ट साम्यवादी-क्रान्तिकारी-दलके वक्ता केटलिन बोले,—"यद्यपि हमारे दलको कोई सुधार करनेका अधिकार प्राप्त नहीं है, दूसरे यह घोषणा बोल्शेविक दलकी घोषणा है, तथापि हम इसका समर्थन करते हैं; क्योंकि इस प्रस्तावके उद्देश्य हमारे सिद्धान्तोंसे एकता रखते हैं।

स्वतन्त्र लोक-सत्तावादी-दलके मुखिया क्रेमारावने उठकर कहा,—"यह प्रस्ताव अत्यन्त महत्वका है, लेकिन उसी हालतमें, जब कि समस्त साम्यवादी दलके प्रतिनिधि मिलकर इसे तैयार करते। अगर साम्यवादी दलोंका समझौता क़ायम किया जाय, तो हम इसका समर्थन करेंगे। रह गया घोषणाके सम्बन्धमें, हमारा दल इसके भावोंका समर्थन करता है।

इन मत-भेद रखनेवाले दलोंने अपना पार्थक्य प्रकट करते हुए भी प्रस्तावका समर्थन किया। इसके बाद उक्रेन प्रान्तके साम्य-वादियोंने समर्थन किया। फिर लिथूनियाके प्रतिनिधियोंने समर्थन किया। तत्पश्चात्, सार्वजनिक दलने, पोलैण्डके साम्यवादियोंने, लेटलैंडके साम्यवादियोंने और तदनन्तर अन्य प्रान्तोंके प्रतिनिधि-योंने समर्थन किया।

लेनिनका प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे पास हुआ। केवल एक प्रति-नधिने विरोधमें हाथ उठाया था, लेकिन पास वालोंकी घुड़कियों-से उसने खिलखिलाते हुए हाथ नीचा कर लिया। उसने मज़ाकके तौरपर ही विरोध किया था!
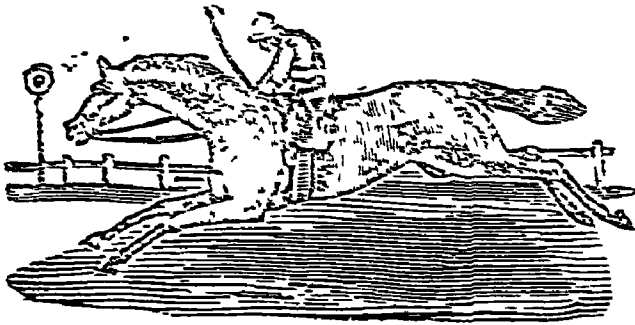
दो महत्वपूर्ण प्रस्ताव

काँग्रेसकी बैठक जारी रही। लेनिनने ही ज़मींदारोंकी ज़मीनोंको किसानोंके हाथ सौंप देनेका दूसरा प्रस्ताव इस प्रकार पेश किया :—

(१) व्यक्तिगत अधिकारोंसे ज़मीन मुक्त की जाती है।

(२) उन सब ज़मीनो और अन्न-भाण्डारोंपर, जिनपर आज तक ज़मींदारों, राज-परिवारके लोगों, गिरजाघरों तथा पादड़ियोंका अधिकार था, किसानोंकी स्थानिक-भूमि-कमेटियों तथा ज़िला-सोवियटोंका क़ब्ज़ा क़ायम किया जाता है। "प्रतिनिधि-सभा" के सामने बँटवारा निश्चित किया जायेगा।

(३) यदि इन ज़ब्त-शुदा ज़मीनों, अन्न-भाण्डारों और इमारतोंको कोई नुकसान पहुँचायेगा, तो वह क्रान्तिवादी-पंचायतों द्वारा दण्डित किया जायेगा। प्रतिनिधि-सभाके निश्चय तक इन खेतों, औज़ारों, पशुओं, मकानों और अन्य सामानोंकी हिफाजत सोवियटके पदाधिकारी करेंगे ; क्योंकि ज़ब्त हो जानेके बादसे यह सम्पत्ति जनताकी कहलायेगी।

(४) किसानों और सेनामें नौकरी करनेवाले कोसकोंकी ज़मीनें ज़ब्त नहीं की जायेंगी।

इस छोटेसे व्याख्यानके बाद फिर लेनिन हर्ष-ध्वनिके बीचमें अपनी जगहपर जा बैठे। उनके बैठनेके बाद, किसान-सोवियट-कार्य-कारिणी-कमेटीके सदस्य पियानीखने बड़ी उत्तेजनाके साथ कहा कि,—"किसान-सोवियटकी कार्यकारिणी-कमेटी अपने साम्यवादी मन्त्री सालज़कीन तथा मेज़लावकी गिरफ्तारीका विरोध करती है। उनको फ़ौरन छोड़ दिया जाये! एक क्षणकी भी देर न की जाये!"

इस अनधिकार चेष्टाका विरोध करते हुए एक सैनिकने फट-कार बतलाते हुए कहा कि,—"हज़रत, ज़रा चुपचाप बैठ जाइये। किसानोंको ज़मीनपर कब्ज़ा दिलाया जा रहा है, उसमें बाधा न डालिये। अगर इस मौक़ेपर आप ऐसी बहकी हुई बातें कीजि-येगा, तो किसान-प्रतिनिधि समझेंगे, कि आप भी अपने साथियों की तरह किसानोंके हक़ोंपर कुल्हाड़ा चलानेवाले निकले! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, कि आपके मन्त्रियोंपर मार नहीं पड़ेगी। उनका एक बाल भी बाँका न होने पायेगा!"

इसके बाद, गड़बड़ीको शान्त करनेके लिये, घोषित किया गया, कि—"कल रातकोही क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीने साम्यवादी मन्त्रियोंका छोड़ देनेका निश्चय कर लिया है। शीघ्रही मेज़लाव, सालज़कीन, गोज़डोव और मलियस्टाविच छोड़ दिये जायेंगे; लेकिन उनके घरोंपर तबतक पहरा बिठला दिया जायेगा, जबतक कि उनके अपराधोंकी हम पूरी जाँच न कर लेंगे।"

पियानीखने तानेके साथ पूछा,—"ऐसा तो किसी भी क्रान्तिके इतिहासमें उदाहरण नहीं मिलता !"

तुरन्त ट्राटस्कीने उत्तर दिया,—"दूर जानेकी ज़रूरत नहीं है। पिछले जुलाई मासमेंही आपके इष्टदेव करेन्सकीने हमारे सैकड़ों साथियोंको जेलमें ठूँस दिया था। यहाँतक, कि स्त्रियोंको भी—श्रीमती कोलनटाय जेलमें बीमार तक पड़ी रहीं, मगर जबतक डाक्टरने सिफारिश नहीं की, तबतक आपकी पार्टीके मंत्रि-मण्डल-ने एक महिलाको भी छोड़ देनेकी उदारता नहीं दिखलाई। फिर श्रीमती कोलनटायके दरवाज़ेपर ख़ुफिया पुलिसके दो सिपाही तैनात कर दिये गये थे ! जवाब दीजिये, यह क्या कुछ था ?"

थोड़ी देर विश्राम लेनेके बाद फिर कांग्रेस शुरू हुई। कई दलोंके नेताओंने थोड़ा-थोड़ा विरोध रखते हुए भी, प्रस्तावका समर्थन किया।

वोट लेनेपर सिर्फ एक वोट ख़िलाफ़ आया, बाक़ी सबने हाथ उठाकर प्रस्तावको पास किया। किसान-प्रतिनिधि बड़ी खुशीसे तालियाँ पीटने लगे !

इसके बाद देशभरकी सोवियटोंके नाम एक "आज्ञा-पत्र" का भेजा जाना पास हुआ। इस आज्ञा-पत्रमें "विरोधियोंको दबाने, शान्ति स्थापित करने और पेट्रोग्राडकी तरह श्रमजीवियों और सैनिकोंको सोवियटके साथ मिलकर काम करनेकी आज्ञा दी गयी थी। यह आज्ञा-पत्र लाखोंकी संख्यामे छापकर रवाना किया जानेवाला था। इसीलिये पास होतेही इसकी नकल प्रेसमें

छुपनेके लिये, उसी वक्त लाल-सिपाहियोंके पहरेमें रवाना, कर दी गयी !

इसके बाद सभापति केमिनावने घोषित किया, कि मन्त्रि-मण्डलका काम कमीशनोंकी कौंसिलको सौंपा जायेगा। इन कमीशनोंके सभापति कमिश्नर कहलायेंगे। कमीशनों और श्रमजीवियों, कृर्कों, सैनिकों, किसानों तथा स्त्री-मजदूरोंके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया जायेगा। इन पीपुल्स कमिश्नरोंपर सोवियट-कांग्रेस तथा कार्यकारिणी-कमेटीकी सत्ता रहेगी। मंत्रि-मण्डलका संचालन करनेवाले कमिश्नरोंकी सूची इस प्रकार है :—

१—कौंसिलके सभापति—ब्लडीमीर यूलियनाव लेनिन।
२—देशीय-विभाग— मोशिये रायकाफ।
३—कृषि-विभाग— „ मिल्यूटीन।
४—श्रमजीवी-विभाग— „ शिलयटनीकाव।
५—सेना तथा नौ सेना— „ अवसेन्को, क्रिलेन्को और डाइबेन्को।
६—औद्योगिक-विभाग— „ नोगिन।
७—शिक्षा-विभाग— „ लूनाशेरस्की।
८—अर्थ-विभाग— „ स्कवोटेसाव।
९—परराष्ट्र-विभाग— „ ट्राटस्की।
१०—न्याय-विभाग— „ ओपोकाव।
११—कमसरियट-विभाग— „ टियोडरोविच।
१२—डाक-तार-विभाग— „ अवियलाव।

१३—प्रतिनिधि-व्यवस्था—जोगसविली।

१४—रेलवे मार्ग-विभाग—(पीछे नियुक्ति की जायेगी।)

१५—म्युनिसिपल-विभाग—

१६—राष्ट्रीकरण-विभाग—

इस सूचीके प्रत्येक नामपर करतल-ध्वनि हुई, इसका कारण यह था, कि यह सभी व्यक्ति जनताके प्रियपात्र तथा सच्चे उत्साही कार्य-कर्त्ता थे।

नरम साम्यवादी-दलोंके कुछ प्रतिनिधियोंने फिर विवाद उठाया, कि देशभरके समस्त साम्यवादी-दलोंका समझौता होकर सरकार-का संगठन किया जाये, मगर फिर ट्राटस्कीने मुँह-तोड़ जवाव दिया, कि कांग्रेसको ग़ैर-क़ानूनी पुकारनेवाले और ग़रीब श्रम-जीवियोंके शत्रुओंसे मिलकर पेट्रोग्राडपर चढ़ाई करानेवाले साम्य-वादी नहीं कहे जा सकते। साम्यवादी वे हैं, जो इस संकटके समय भी इस कांग्रेसका साथ दे रहे है।

कुछ विवादके बाद मन्त्रि-मण्डलके संगठनपर वोट लिये गये, और बहुत बड़ी संख्याके हाथ उठानेपर प्रस्ताव पास किया गया।

नौ नवम्बर भी एक महत्वपूर्ण तिथि थी। यह सुनकर, कि पेट्रोग्राडपर बोल्शेविकोंने कब्ज़ा कर लिया है, डान प्रान्तके कोसक-नेता कैलिडीनने अपनेको डानका शासक घोषित कर दिया। उसकी घोषणा इस प्रकार प्रकाशित हुई :—

"यह देखते हुए, कि पेट्रोग्राडमें क्रान्ति मचाकर बोल्शेविकोंने अस्थायी सरकारको तोड़ दिया है, कोसक-सरकार बोल्शेविकोंके इस कार्यको राजनैतिक जुर्म क़रार देती है। फलतः कोसक-जाति अस्थायी सरकारकी पुनः स्थापनामें पूरी मदद देगी और जबतक अस्थायी सरकारके हाथमें सत्ता न आ जाये, तबतक मैं अपने ऊपर डान प्रान्तकी समस्त ज़िम्मेदारियाँ ७ नवम्बरसे लेता हूँ।"

हस्ताक्षर—आटामन कैलिडीन,

सभापति—कोसक—सैनिक—गवर्नमेण्ट।

इसी तारीखको करेन्स्कीकी निम्नलिखित घोषणा भी समाचार-पत्रोंमें प्रकाशित हुई :—

"मैं अस्थायी सरकारका प्रधान मन्त्री तथा प्रधान सेनापति,

यह घोषित करता हूँ, कि सीमान्तपरकी आज्ञाकारिणी सेनाओंका मैं संचालन कर रहा हूँ।

"मैं पेट्रोग्राडकी समस्त सेनाओंको जिन्होंने ग़लतीसे या मूर्खता-वश देशके विश्वास-घातियोंका साथ दिया है, हुक्म देता हूँ, कि वे सब फ़ौरन अपने कर्त्तव्यपर आरूढ़ हों और यह हुक्म सब फौजोंके सम्मुख पढ़कर सुनाया जाये।"

"हस्ताक्षर—प्रधान मन्त्री तथा प्रधान सेनापति,

"करेन्सकी।"

उसी दिन करेन्सकोने उत्तरी रूसकी सेनाओंको निम्नलिखित तार भेजा :—

"गचीना शहर राज-भक्त सेनाओंने बिना एक बूँद खून बहाये ले लिया है। विरोधी सेनाओंने बिना सामना किये, हथियार रख दिये और सरकार-पक्षमें आ मिलीं।

"मैं हुक्म देता हूँ, कि समस्त सेनायें शीघ्र-से-शीघ्र पेट्रोग्राडकी तरफ भेज दो।"

पीछेसे मालूम हुआ, कि करेन्सकीकी बात सही नहीं थी। गचीनामें पड़ी हुई बोल्शेविक सेनाओंको पता भी नहीं था, कि कोसक आ पहुँचे हैं, अतः सैनिकगण लापरवाहीसे इधर-उधर घूम रहे थे। जब एकाएक कोसकोंने आकर घेर लिया, तब उन्होंने हथियार तो दे दिये, लेकिन सरकार-पक्षमें मिल जानेसे इनकार कर दिया।

अभीतक तार-विभाग बोल्शेविकोंका काम नहीं करता था ;

दूसरे, तार-घरपर क़ब्ज़ा कर लेना भी व्यर्थ था ; क्योंकि कर्मचारी हड़तालपर कमर कसे थे। अतः जबतक वे स्वयं सोवियट-सत्ताको स्वीकार न कर लें, उन्हें छोड़कर बोल्शेविकोंने दो हवाई जहाजों-पर घोषणायें लाद कर रणक्षेत्रोंकी तरफ रवाना कीं। प्रान्तिक सरकारोंके पास बेतार-के-तारसे वार्तालाप किया ; लेकिन बोल्शे-विकोंकी विजयका समाचार रूसभरमें अपने आप फैल चुका था। धीरे-धीरे समाचार आने लगे। हेलसिंडफोर्ससे ख़बर आई, कि सोवियटने अधिकार कर लिया। कीवमें सोवियटने सरकारी तार-घर तथा मेग़ज़ीनपर क़ब्ज़ा कर लिया। कज़ानकी सोवियटने सरकारी अफसरोंको क़ैद करके काम शुरू कर दिया। साइबेरिया के क्रासनोयार्स्कसे ख़बर मिली, कि सोवियटने शहरपर क़ब्ज़ा कर लिया है। मास्कोकी सोवियटने पेट्रोग्राडका अनुसरण करना निश्चित कर लिया था! सर्वत्र सैनिकों और मज़दूरोंने सोवियटका साथ दिया। सैनिक अफसरोंको गिरफ्तार करके अपने अफ़सर तैनात कर लिये और सोवियटकी आज्ञा मान कर करेन्सकी-सर-कारके हाकिमोंको मार भगाया।

९ ता० की रातको क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीने सरकारी प्रेस-पर धावा बोलकर म्युनिसिपलिटीके विद्रोही परचे ज़ब्त कर लिये और "म्युनिसिपल-ग़ज़ट" बन्द कर दिया। साथही सरकारी अपीलोंको भी नष्ट करवा दिया। विदेशी देशोंके राजदूत अपना-अपना बोरिया-बसना सम्भाल कर चलते बने।

लेनिनने अपने हस्ताक्षरों सहित सबसे पहिली सूचना यह

प्रकाशित की, कि "१२ दिसम्बरको ही 'राष्ट्रीय प्रतिनिधि-सभा' का चुनाव हो जाना चाहिये। समस्त देश-निवासी अपने-अपने वोट जाँच कर ठीक समयपर दें।

पेट्रोग्राडकी देशोद्धारिणी-सभा क्या कर रही थी? असलमें करेन्सकी-सरकारकी प्रजातन्त्र कौंसिलके मेम्बरोंने इसे संगठित किया था। शहरमें झूठी खबरें फैलाकर और बाहरी प्रान्तोंको बोल्शेविकोंके विरुद्ध भड़का कर करेन्सकीकी मदद करना इसका मुख्य उद्देश्य था। तार-घर और म्युनिसिपलिटी इसके पक्षमें थी। साथही पुराने मन्त्रियोंके दफ्तरोंके क्लर्क भी इसके पक्षमें थे। लेकिन इतनी थोड़ी शक्ति रखते हुए भी इसने पेट्रोग्राडमें सनसनी फैला रखी थी। इसीलिये लेनिनने विरोधी-अखबारोंको दबानेके लिये सोवियट-कार्यकारिणी-कमेटीमें यह प्रस्ताव पास कराया :—

"इस कठिन समयपर स्थितिको सम्भालनेके लिये यह जरूरी है, कि विरोधी-दलके अखबारोंके सम्बन्धमें कठोर नियमोंसे काम लिया जाये।

"यद्यपि जनतामें यह अफवाह फैलायी जा रही है, कि सोवियट-सरकार, जो कि सार्वजनिक स्वाधीनताकी पक्षपातिनी है, वही अन्य दलोंकी विचार-प्रकाशनकी स्वतन्त्रता अपहरण कर रही है। लेकिन साथही ऐसे कठिन समयपर इस उदारताकी आड़से पूँजी-वादी शिकार खेलना चाहते हैं और सार्वजनिक सत्ताको नष्ट करनेका खेल खेलने लग गये हैं। वे जनताके विचारोंको विषमय बनाकर अशान्ति उत्पन्न करना चाहते हैं।

"अतः पूँजीवादियोंके अखबारोंको शान्ति-स्थापनाके इस कठिन समयपर स्वतन्त्र छोड़ देना, स्वयं अपने प्रयत्नोंको नष्ट कर देनेके बराबर है। इसी कारणसे कुछ दिनोंके लिये ये नियम लागू करके दुष्ट अखबारोंका प्रकाशन बन्द किया जाता है। जैसेही शासन-कार्य चालू हो जायेगा, वैसेही ये नियम उठा लिये जायेंगे। इन नियमोंका बन्धन उन्हीं अखबारोंपर रखा जायेगा, जो कि सोवियट-सरकारके विरुद्ध दंगा करनेका उपदेश देंगे, अथवा झूठी खबरें छाप कर जनतामें अशान्ति खड़ी करेंगे, अथवा नागरिकोंके विरुद्ध जुर्म करने और मार-पीट करनेकी बात लिखेंगे। ऐसा हरएक अखबार अलग-अलग प्रस्ताव पास करके प्रकाशित होनेसे बन्द किया जायेगा और शान्ति स्थापित हो जानेके बाद उसपरसे यह बन्धन उठा लिया जायेगा।

हस्ताक्षर—"यूलियनाव लेनिन",
(सभापति—कमिश्नर्स कौंसिल।)

देशोद्धारिणी-सभाके आन्दोलनको रोकनेके लियेही यह प्रस्ताव पास हुआ था और इसके पास होनेके बाद समस्त पूँजीवादी तथा नरम-साम्यवादी अखबार बन्द कर दिये गये; क्योंकि उनके कारण शहरमें नित्य नई सनसनी उत्पन्न हो रही थी!

करेन्सकीका पतन

पेट्रोग्राडपर बोल्शेविकोंका कब्ज़ा होते हुए भी अभी यह आशङ्का बाक़ी थी, कि करेन्सकी अपने साथ कोसक-सवारोंकी पल्टन, मय तोपख़ानेके लिये हुए पेट्रोग्राडकी तरफ बढ़े आ रहे हैं। इस आक्रमणको रोकनेके लिये पेट्रोग्राडकी फैली हुई असङ्गठित सेनाओं और मजदूरोंकी लाल पल्टनोंको फौरन तैयार करनेकी ज़िम्मेदारी आ पड़ी। दूसरी तरफ मास्कोसे समाचार आया, कि वहाँकी लाल पल्टनोंने आत्म-समर्पण कर दिया है और करेन्सकीके पक्षवालोंने यङ्कर-सैनिकोंको बुलाकर शहरपर क़ब्ज़ा कर लिया है। पेट्रोग्राडकी क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीके ऊपर इस प्रकार अनेक ज़िम्मेदारीके काम थे। रेलवे-कर्मचारी पहले ही निष्पक्ष रहनेकी घोषणा कर चुके थे। अतः मास्कोके लिये रेल-गाड़ियाँ नहीं मिल रही थीं।

इन सब विपत्तियोंका सामना करनेवाले महापुरुष लेनिन, स्मोलनी-इमारतमें, एक कमरेमें बैठे हुए, कमिश्नरोंको सलाह दे रहे थे। उनकी सलाहसे सैनिकोंका संगठन किया जा रहा था। तीन दिनके अन्दर पेट्रोग्राडके मज़दूरोंने पेट्रोग्राडसे ५ मीलपर सारस्को-

सेलो गाँवके आगे खाइयाँ खोदकर मोर्चे लगा दिये। जो बोल्शेविक लाल-पल्टनें बिना अफसरोंके इधर-उधर भटक रही थीं, एक साथ मोर्चोंपर जा डटीं। पेट्रोग्राडकी सेनाओंने अपने अफसर स्वयं चुनकर करेन्सकीका मुक़ाबिला करनेके लिये सारस्को सेलोमें मेशीन-गनें लगा दीं। कई तोपदार-मोटरें भी पहुँच गयीं। बड़ी मुश्किलसे कुछ ड्राइवरों और ब्रेकमैनोंको बटोर कर, पाँच हज़ार सैनिक मास्कोपर क़ब्ज़ा करनेके लिये भेज दिये गये। लेनिनने अपने विश्वासपात्र जहाजी सैनिकोंको हुक्म दिया, कि नीवा नदीके किनारोंपर तीनों लड़ाकू स्टीमर—ओलेग, अवरोरा, रिस्पब्लिका—तोपोंको चढ़ाये हुए, करेन्सकीकी सेनाओंका मुँह मोड़नेके लिये तैयार रखो! म्युनिसिपल-अफसरों और देशोद्धारिणी-सभाके प्रयत्नसे मन्त्रि-मण्डलके दफ्तर-क्लर्कों और बैंकोंके कर्मचारियोंको भड़काकर हड़ताल करा दी गयी थी। यह बड़ी भारी समस्या आ पड़ी। लेनिनने फौरन हुक्म निकाला, कि स्टेट-बैंककी बाहरी दीवारें बारूदसे उड़ा दी जायें और अर्थ-मन्त्री बैंकपर क़ब्ज़ा कर लें। दूसरे बैंकोंके लिये हुक्म निकाला, कि कल दस बजेतक अगर बैंक न खुल जायेंगे, तो लाल-पल्टनें दरवाज़े तोड़ कर उनपर क़ब्ज़ा कर लेंगी।

जो विपत्ति या रुकावट आती थी, महापुरुष लेनिन फौरन उसका उपाय काममें लाते थे। यही कारण था, कि नगरके बाहर और भीतर, दोनों तरफ़ शत्रुओंके होते हुए भी, बोल्शेविक दलवाले विजयी हुए।

* * * * *

१० नवम्बरको करेन्सकीने पेट्रोग्राडसे ३० कोसकी दूरीपर एक गाँवपर क़ब्ज़ा कर लिया था। ११ ता०को वे ख़ुद एक बढ़िया सफ़ेद घोड़ेपर सवार होकर समस्त राज-भक्त कोसक-सवारों और पीछे-पीछे तोपखाना लिये हुए, ज़ारस्को-सेलो (बोल्शेविक मोर्चे) के सामने आये। पहले तो उन्होंने बोल्शेविक-सेनाओंको हुक्म भेजा, कि हथियार रख दो, मगर इन्कार करनेपर करेन्सकीने तोपें चलानेका हुक्म दे दिया। लड़ाई शुरू हो गयी। इधर पेट्रोग्राडमें देशोद्धारिणी-सभाकी कृपासे यङ्कर-सैनिकोंने, जो कि सदा बोल्शेविकोंके विरुद्ध लड़ते रहे, तार-घरपर क़ब्ज़ा कर लिया। मगर फ़ौरन लाल-पल्टनोंने पहुँच कर यङ्कर-सैनिकोंपर भीषण अग्नि-वर्षा करके तार-घर और टेलीफोनका दफ्तर फिर अपने क़ब्ज़ेमें कर लिया। इसके बाद यङ्करोंने इञ्जीनियरिङ्ग-स्कूलकी विशाल इमारत-पर कब्ज़ा करके बोल्शेविक फौज़ोंपर गोलियाँ चलानी शुरू कीं, मगर युद्ध-मन्त्री क्रिलेन्कोंने नई सेनाएँ भेजकर इमारतपर अपना क़ब्ज़ा कर लिया और यङ्कर-सिपाहियोंको सदाके लिये नष्ट करके पेट्रोग्राडमें शान्ति स्थापित की।

क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीके सभापति पोवस्की बड़ी सरगर्मीसे सेनाओंके नाम आज्ञाएँ निकाल कर चारों तरफ रवाना कर रहे थे। लेनिन सबके ऊपर निगाह रखते हुए, बोल्शेविकोंकी निश्चित विजयका आवाहन कर रहे थे।

* * * * *

१२ ता० को ज़ारस्को-सेलोमें करेन्सकीके कोसक-सवारों और

बोल्शेविक सेनाओंमें घोर संग्राम हुआ। पेट्रोग्राडसे असंख्य सैनिक पहुँच रहे थे। मेशीनगनोंसे लदी हुई मोटरें दौड़ी जा रहीं थीं। लाल-पल्टनोंके सिपाहियोंने कोसक-घुड़सवारोंके छक्के छुड़ा दिये। तोपोंके मुँहके सामने बड़े उत्साहसे प्राणोंको निछावर करके रातको ११ बजे बोल्शेविक-सैनिकोंने कोसकोंको मार भगाया! कोसक-सेना अपनी तोपें छोड़ कर भाग गयी। उसी रातको कोसकोंने निश्चित किया, कि अब वे करेन्सकीका साथ न देंगे।

अफसरोंके समझानेपर भी कोसक नहीं माने। दूसरेही दिन करेन्सकीका साथ छोड़कर कोसक-सैनिक अपने अपने गाँवोंकी ओर रवाना हो गये।

रातभर करेन्सकी गचीनाके उत्तरी पड़ावमें पड़े रहे। उसी रातको डिबेन्कोने गुप्त रूपसे आकर बचे हुये कोसकोंको बोल्शेविकोंकी तरफ मिला लिया। यहाँतक कि अफसर और जनरल क्रान्सनावने भी आत्म-समर्पण कर दिया।

१४ नवम्बरकी रातको ३ बजे करेन्सकीने इस गुप्त आत्म-समर्पणको सुनकर, जनरल क्रान्सनावको तलब किया। बड़े उत्तेजित स्वरसे करेन्सकीने कहा,—"जनरल! तुमने हमारे साथ विश्वास-घात किया है।" तुम्हारे सिपाही स्पष्ट-रूपसे कहते फिर रहे हैं, कि वे मुझे गिरफ्तार कर लेंगे?"

जनरल क्रान्सनाव,—"आपका कहना ठीक है। सब सैनिकोंमें ऐसीही चर्चा फैल रही है। अब आपसे सहानुभूति रखनेवाला कोई भी नहीं रहा।"

करेन्सकी,—"लेकिन अफ़सर भी मेरे विरुद्ध हो रहे हैं।"

जनरल,—"ठीक है, वे भी आपसे नाराज़ हो गये हैं।"

करे०,—"तो फिर मैं क्या करूँ? क्या आत्म-हत्या कर लूँ?"

जनरल,—"नहीं। यदि आपमें कुछ भी आत्म-सम्मान है, तो सफेद झण्डेके साथ पेट्रोग्राड जाइये और क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीके सम्मुख आत्म-समर्पण कर दीजिये। इसके बाद प्रधान-मन्त्रीकी हैसियतसे सन्धि स्थापित कीजिये।"

करेन्सकी,—"अच्छी बात है, ऐसा ही करूँगा।"

जनरल,—"मैं आपको शरीर-रक्षक दूँगा। वल्कि नाविक-सैनिकोंको साथ ले जाइये।"

करेन्सकी,—"नहीं नहीं, नाविक-सैनिक नहीं।"

इसके बाद जनरल शरीर-रक्षक भेजनेके लिये अपनी छावनी-की तरफ चला गया। इधर करेन्सकी गुप्त-रूपसे अपने कैम्पसे निकल भागे और आगे जाकर एक मल्लाहकी वर्दी पहिनकर न जाने किधर चले गये। थोड़ी देरमे जनरल क्रासनावको सूचना मिली, कि प्रधान सेनापति करेन्सकी कैम्पमे नहीं हैं। फौरन दूत भेजकर गचीनाके इधर-उधर खोज की गयी; मगर कुछ भी पता नहीं चला।

करेन्सकी एक ब्रिटिश जहाज़पर चढ़कर इंगलैंड भाग गये थे।

मास्कोमें क्रान्ति

३१

पिछले अध्यायोंमें बतालाया जा चुका है, कि मास्कोकी सोवियट भी पेट्रोग्राडका अनुसरण कर रही थी, लेकिन सरकारी मेगजीन (शस्त्रागार) पर क़ब्ज़ा हो जानेके बाद, फिर विरोधी-सेना (यंकर-सैनिकों) ने सोवियटकी लाल-पल्टनपर आक्रमण करके शस्त्रागारकी इमारतपर क़ब्ज़ा कर लिया और इसी प्रकार क्रेमलिन इमारत पर उनका अधिकार हो गया। सोवियटके पास सेना नहीं थी, सिर्फ कुछ मज़दूर-सेना थी, जिसके पास काफ़ी बन्दूकें और गोली-बारूद नहीं थी। ११ ता०को पेट्रोग्राडसे कई हज़ार सैनिक रवाना किये गये, मगर रेलवालोंने ट्रेनें देनेसे इनकार कर दिया। बड़ी मुश्किलसे १४ ता०को मास्कोमें बोल्शेविक सेनायें पहुँच पाईं।

करेन्सकीकी हारका समाचार देश भरमें तार द्वारा भेजा गया और साथही क्रान्तिकारी सैनिक-कमेटीने कोसकोंके आत्म-समर्पण-की घोषणा भी प्रकाशित कर दी। इस समाचारके पातेही अन्य-प्रान्तोंका विद्रोह भी कम हो गया।

समस्त सेनाओंके नाम, सैनिक-मंत्री डिबेन्कोने यह घोषणा प्रकाशित की :—

"कोसकों, यंकरों तथा सैनिकों और श्रमजीवियोंकी एकता-द्वारा यह निश्चित हुआ है, कि करेन्सकी अपनेको प्रजाकी न्याय-पंचायतके सामने उपस्थित कर दें। मैं आज्ञा देता हूँ, कि जहाँ पाओ करेन्सकीको गिरफ्तार करके पेट्रोग्राड भेज दो; अथवा स्वयं करेन्सकी आकर हाज़िर हो जायें।"

हस्ता०—डिबेन्को (कमिश्नर)

करेन्सकीके पतनसे बोल्शेविक-विजय निश्चित रूपसे स्थापित हो चुकी थी। अतः देश-भरकी सेनाओंने बधाईके तार और प्रतिनिधि-मण्डल भेजकर सोवियट-सरकारकी सत्ता स्वीकार की।

मास्कोमें, पेट्रोग्राडसे भी अधिक, ६ दिनतक मार-काट हुई। रूसकी अति प्राचीन राजधानी मास्को अब भी एक विशाल नगरी थी। पेट्रोग्राडसे पहुँचने वाली बोल्शेविक सेनाओंने जाते ही क्रेमलिन इमारतको घेर लिया। इस इमारतमें कई हज़ार यङ्कर-सैनिक पड़ाव डाले पड़े थे। दोनों तरफ़से अग्नि वर्षा हुई।

इसके अतिरिक्त उसपेन्स्की-महलमें भी विरोधी-सेनाओंने क़ब्ज़ा जमा लिया था, अतः उसपर भी कुछ गोले चलाये गये। कई गिरजाघरोंपर भी कुछ गोले टकरा गये थे, जिनसे थोड़ी बहुत हानि हुई। स्पास्कया-फाटकपरकी बड़ी घड़ी एक गोलेसे टकरा कर चकनाचूर हो गयी। शाही महलपर एक भी गोला नहीं फेंका गया और ज़ारके सब क़ीमती जवाहरात उसमें हिफ़ाजतसे रखे मिले। लूट-पाट बिल्कुल नहीं हुई।

चार-पाँच घण्टेकी लड़ाईके बाद, यङ्कर-सेनाने हथियार छोड़

दिये और बोल्शेविक फौजोंने शहरपर क़ब्ज़ा कर लिया। इसके बाद, अस्त्रागारपर भी क़ब्ज़ा हो गया। गोला-बारी बन्द की गयी और यङ्कर-सैनिकोंको सही-सलामत शहरसे चला जाने दिया गया।

मगर आश्चर्यकी बात यह थी, कि भयङ्कर गोला-बारीसे रुष्ट होकर मास्कोके प्रसिद्ध बोल्शेविक-नेता नोगिनर, व्यापारिक-विभागके (कमिश्नर) तथा रायकाफ़* (अन्तर्देशीय-विभागके कमिश्नर) तथा प्रसिद्ध लेफ्ट क्रान्तिकारी-साम्यवादी नेता बुखारिन पेट्रोग्राड चले गये। शिक्षा-विभागके कमिश्नर लूनाशेरस्कीने मास्कोके गिरजा-घरोंपर गोले चलानेके कारण बोल्शेविक मंत्रि-मण्डलसे इस्तीफ़ा दे दिया; मगर नोगिन और रायकाफ़को समझा-बुझाकर लेनिनने मास्कोकी स्थिति सम्भालनेके लिये फिर भेज दिया।

इधर अकेले बुखारिनने मास्कोकी स्थितिको सम्भाला और प्रस्ताव पास कराया, कि स्थितिके अनुसार मास्कोमें जो गोला-बारी हुई थी, वह अत्यन्त उचित थी। यङ्कर-सेनाने जानबूझ कर ऐसी इमारतोंपर क़ब्ज़ा कर रखा था, जिनपर बिना गोला-बारी किये कब्ज़ा मिलना असम्भव था, तिसपर बोल्शेविक-सेनाने बहुत थोड़ी गोला-बारीकी और जानबूझ कर किसी भी धार्मिक इमारत या स्थान पर गोले नहीं चलाये।

---

* लेनिनकी मृत्युके पश्चात् यही रायकाफ़, कमिश्नर्स-कौंसिलके सभापति चुने गये हैं।—(फ़रवरी १९२४)

इस गोला-बारी और युद्धमें ५०० बोल्शेविक सैनिक मारे गये थे। यङ्करोंके मुर्दोंकी संख्या इससे भी अधिक थी। दूसरे दिन सब मुर्दोंकी रथियाँ एक साथ निकाली गयीं। यह भी क्रांतिका एक दृश्य था, कि अलग-अलग उद्देश्योंको लेकर शत्रुवत् लड़नेवाले, मरनेके बाद एक ही साथ, एकही स्थानपर दफनाये गये!

लेकिन पादड़ियोंने हड़ताल करदी थी। एक भी पादरी कब्र-स्तानकी क्रियामें सम्मिलित नहीं हुआ। आरथोडाक्स गिरजा घरमें नित्य रोशनी हुआ करती थी; लेकिन आजसे पादड़ियोंने रोशनी करना भी बन्द कर दिया था!

लाल झण्डियोंके साथ बोल्शेविकोंके वीरगति-प्राप्त सिपाही गम्भीरता-पूर्वक दफ़ना दिये गये। उन्हें स्वर्गके लिये पादड़ियोंकी सिफ़ारिश नहीं चाहिये थी, वे स्वयं इस पृथ्वीपर स्वर्गसे भी उज्ज्वल और पवित्र राज्यकी स्थापनाके संग्राममें मरे थे। वे धन्य थे; क्योंकि उन्होंने जनताके हितके लिये अपने प्राण दिये थे और मरनेके बाद वे जनताकी गोदमें चढ़कर स्वर्गकी ओर सिधार गये!

लेनिनकी कठिनाइयाँ

विजयके साथ-साथ बोल्शेविकोंकी कठिनाइयाँ भी बढ़ रही थीं। शासन-संगठनका कभी काम न कर चुकनेपर भी बोल्शेविकोंने अपूर्व साहसके साथ इन कठिनाइयोंका सामना किया।

अन्तर्देशीय-विभागने रूसमें बसी हुई समस्त जातियों, स्लाव, यहूदी, ईसाई तथा मुसलमान आदि सबको समान अधिकार देते हुए निम्नलिखित घोषणा प्रकाशित की :—

"(१) रूसमें बसनेवाली सभी जातियाँ समान अधिकारों और एकसी स्वाधीनताकी अधिकारिणी समझी जायेंगी।

(२) रूसकी जनताको आत्म-निर्णयका अधिकार दिया जाता है। अपनी-अपनी स्वतन्त्र प्रादेशिक रियासतें बना सकनेका भी उसे अधिकार है।

(३) अभीतक जो जातीय या धार्मिक बाधाएँ थीं, वे सब दूर की जाती हैं।

(४) छोटी-छोटी जातियोंके स्वाधीन रूपसे होनेवाले विकास-की व्यवस्था स्वीकार की जाती है।

शीघ्रही इस सम्बन्धमें एक जाँच-कमीशन नियुक्त करके पूरी व्यवस्था घोषित की जायेगी।"

हस्ताक्षर—'यूलियनाव लेनिन।'

इस घोषणाके प्रकाशित होतेही रूसी प्रान्तोंमें खलबली मच गयी। सभी प्रान्त स्वाधीन हो जानेकी घोषणा करने लगे। यद्यपि जर्मनोकी सन्धितक सबको एक होकर रहना चाहिये था; मगर किसीने भी धैर्य नहीं रखा। सबसे पहिले उक्रेन-प्रान्तने स्वाधीनताकी घोषणा की। इसके बाद धीरे-धीरे फिनलैण्ड, साइबेरिया, काकेशस, पोलैण्ड आदि-आदिने स्वतन्त्र रियासतोंकी स्थापनाकी घोषणा कर दी।

लेकिन यह आत्म-निर्णय जनताके बहुमतके आधारपर स्थापित नहीं था। पूँजी-वादियोंकी सत्ताने लोभी सेनाओंके बलसे ऐसा किया था।

दूसरी कठिनाई यह हुई, कि १५ नवम्बरसे समस्त पादड़ियोंने गिरजा-घरोंमें स्तोत्र-पाठ बन्द कर दिया!

तीसरी कठिनाई यह आ पड़ी, कि सरकारी दफ्तरोंके समस्त क्लर्कोंने हड़ताल मचा रखी थी। मन्त्रि-मण्डलसे लेकर बैंक, तार-घर, डाकघर, अस्पताल, रेलवे-स्टेशन आदि-आदि सभी विभागोंके क्लर्क अपने-अपने घरोंमें बैठ रहे थे।

जब ट्राटस्की पहले-पहल परराष्ट्र-विभागके दफ्तरमें गये, तो क्लर्कोंने भीतरसे किवाड़ बन्द कर लिये। सहकारी परराष्ट्र-सचिव नेराटाव, समस्त गुप्त सन्धियोंके क़ाग़ज़ात लेकर, न जाने किस ओर

चम्पत हो गया था। इसी तरह अन्य कमिश्नरों (मन्त्रियों) के सिर भी मुसीबतें आ पड़ीं। बैंकके रजिस्टर उड़ गये थे, पताही नहीं चलता था, कि विदेशोंके साथ क्या लेना-देना है।

श्रीमती कोलटाय सार्वजनिक-सेवा-विभागका चार्ज लेने गयीं, तो मालूम हुआ, कि भूतपूर्व मन्त्रिणी काउण्टेस पनीना सारी जमा-पूँजी लेकर चलती बनी हैं! कठिनता यह थी, कि लिखा-पढ़ा स्टाफ़ फौरन कहाँसे भरती किया जा सकता था?

सरकारी टकसाल बोल्शेविकोंको तो कौड़ी देनेपर राज़ी नहीं थी, मगर गुप्त रूपसे म्युनिसिपलिटी और देशोद्धारिणी-सभाको बड़ी-बड़ी रक़में भेज रही थी। बड़ी मुश्किलसे बोल्शेविकोंने टकसाल और बैंकपर क़ब्ज़ा किया।

उधर रेलवाले हड़ताल कर देनेकी धमकी दे रहे थे और उनकी माँग यह थी, कि मेन्शेविकियोंको भी मन्त्रि-मण्डलमें स्थान दो!

स्वयं बोल्शेविक-दलमें यह मत-भेद उठ खड़ा हुआ था, कि समस्त साम्यवादी-दलोंका गंगा-जमुनी मन्त्रि-मण्डल क़ायम किया जाये; मगर लेनिन और ट्राटस्की एक अंग रहे, कि जिस दलका बहुमत होता है, उसी दलके लोग अपना मन्त्रि-मण्डल स्थापित कर सकते है।

दूसरा मत-भेद यह था, कि नरम-साम्यवादियों और पूँजी-वादियोंके अख़बारोंको विचार-स्वाधीनता दी जाये। मगर लेनिन-ने स्वयं उठकर विरोध किया, कि शत्रुको अपने घरमें स्थान देना क्या अर्थ रखता है? वोट लेनेपर फिर लेनिनकी विजय हुई।

इसपर चिढ़कर लेफ्ट साम्यवादी-क्रान्तिकारी-दलके नोगिन, रायकाफ, मिलियरटीन, टियडोरोविच और शियापनिकावने मन्त्रि-मण्डलसे इस्तीफ़ा दे दिया! कुछने क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीसे भी इस्तीफ़ा दे दिया। कैमीनाव, रायकाफ़, ज़िनोवीवने गुस्सेमें आकर बोल्शेविक-पार्टीसे भी इस्तीफा दे दिया; लेकिन दूसरे दिन कुछ समझ-बूझ कर शिलयपनिकाव तथा टियडोरोविचने अपने-अपने इस्तीफे वापस कर लिये। सोवियट-कार्य-कारिणीके सभापति केमीनावके स्थानपर स्वेरडलावका चुनाव हो गया। दूसरे दिन लेनिनने अपने "प्रवडा" अख़बारमें इन भगोड़ोंको खूब खरी-खोटी सुनाई। यहाँतक लिख मारा, कि—

"उन साथियोंको शरम आनी चाहिये, जिनमें आत्म-विश्वास की इतनी कमी है, कि पूँजी-वादियोंकी टीका-टिप्पणीसे डर कर इतने कायर हो गये हैं!"

इन समस्त कठिनाइयोंके सुलझानेकी कुँजी लेनिनके हाथमें थी, इसीलिये वे बड़ी गम्भीर मुस्कराहटके साथ सबकी सुनते जाते थे और अपने फंदे फेंकते जाते थे। सबसे बड़ी कठिनाई रेलवे-कर्मचारियोको राजी करनेकी थी। धीरे-धीरे रेलवे-विभागके श्रमजीवी-कर्मचारियोंको समझानेके लिये प्रचारक रवाना किये गये। असलमें स्टेशन-मास्टर और ट्रेन-ड्राइवर पूँजी-वादियोंकी ताल-पट्टीमें थे; लेकिन जब लेनिनने कुलियों, ब्रेकमैनों और फायर-मैनोंको क़ब्ज़ेमें कर लिया, तब रेलवे-मण्डल क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीमें भी शामिल हो गया और अपने एक प्रतिनिधिको चुनकर

मन्त्रि-मण्डलमें भी स्थान देनेकी प्रार्थना की। लेनिन सबकी नसें पहिचानते थे। छोटे-छोटे श्रमजीवियोंको क़ब्ज़ेमें करके वह बड़े-बड़े काम कर डालते थे। यही उनमें आश्चर्य-जनक शक्ति थी।

रेलोंपर क़ब्ज़ा होतेही लेनिनने समस्त प्रान्तों और शहरोंमें धड़ाधड़ स्पेशल ट्रेनों द्वारा अनाज तथा अन्य खाद्य-सामग्री पहुँचाना शुरू कर दिया। पूँजीवादियोंने जहाँ-तहाँ अनाज छिपा डाला था। बोल्शेविक-मन्त्रियोंने पता लगा कर, सबपर राष्ट्रीय सरकारका क़ब्ज़ा क़ायम कर लिया। कोसकोंके "राजा" केलीडीनके हाथमें कोयलेकी खानें थीं। अतः नौ सेना-विभागका रिज़र्व कोयला मंगाकर लेनिनने मिलवालोंको दे दिया। शराबकी बन्दी घोषित करके अमीरोंके कलवार-खाने तुड़वा दिये और सब शराब फेंकवा दी गयी। हर तरहका सट्टा-फाटका बन्द कर दिया गया। अदालतें तोड़कर जनताकी राष्ट्रीय पंचायतें क़ायम कर दी गयीं।

पेट्रोग्राडके पूँजीवादियोंने एक षड्यन्त्र रचा था, कि कोसक-नेता केलीडीनको चुपचाप पेट्रोग्राडमें बुलाकर राजधानीपर क़ब्ज़ा कर लिया जाय, पर अमीरोंके कुछ नौकरोंने इस गुप्त-भेदको सुनकर फौरन क्रान्तिकारी-सैनिक-कमेटीको सूचना दी और अपने मालिकोंको गिरफ्तार करा दिया।

हड़ताली-क्लर्कोंके लिये सूचना निकाली गयी, कि अगर तीन दिनके अन्दर कामपर न आ जायेंगे, तो जेलमें भेज दिये जायेंगे। धीरे-धीरे सब क्लर्क कामपर आ गये। पेट्रोग्राडकी म्युनिसिपलिटी-

का फिरसे चुनाव हुआ और इस बार बोल्शेविकोंका बहुमत स्थापित हुआ। देशोद्धारिणी-सभा तोड़ दी गयी। उसके अगुआ तथा सोवियटके विरोधी गिरफ्तार करके जेलोंमें भर दिये गये। पूँजी-वादियों और अमीरोंकी इमारतें, गाड़ी, घोड़े, अन्न-भण्डार तथा अन्य बेशकीमती ज़ायदादें छीनकर सरकारी खजानेमें लिख ली गयीं।
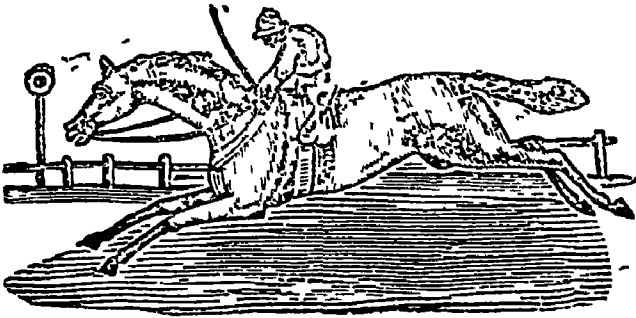
बोल्शेविक क़ानून

क्या बात ऐसी है, जिसके कारण बोल्शेविक-शासन संसारमें इतना भयानक और पृथ्वी उलटनेवाला माना जा रहा है ? पिछले अध्यायोंके पढ़नेवाले इस बातको कुछ-कुछ समझ गये होंगे, कि लेनिनने केवल किसानों, सैनिकों और शारीरिक परिश्रम करनेवाले मज़दूरोंकी एकताके आधारपरही शासन-संगठन किया। इन तीन समुदायोंके सिवा उन्होंने देशके शासन और अधिकारका सत्ताधारी किसी चौथे समुदायको स्वीकार नहीं किया। ज़मीदारों, बैंकरों, रईसों, व्यापारियों और मिल-मालिकोंको उन्होंने "ग़ैर-क़ानूनी" बाशिन्दा क़रार दिया! यही कारण था, कि इन अमीर समुदायवालोंने भरसक कोशिश की, कि बोल्शेविक सत्ताका विनाश हो जाये। उनके इस दुष्प्रयत्नमें मेन्शेविकी तथा क्रान्तिकारी-साम्यवादी, अर्थात् नरम-साम्यवादियों-ने भी मदद पहुँचाई ; मगर ईश्वरकी कृपासे इसे भगवान्की इच्छा ही कहना चाहिये, कि ग़रीब श्रमजीवियों, किसानों और सैनिकोंकी सहायतासे लेनिनकी सत्ता दृढ़ होती चली गयी और समस्त विरोधी शक्तियोंको कुचल कर उन्होंने श्रमजीवियोंका आदर्श राज्य अथवा

सामाजिक समताकी वास्तविक स्थापना करके संसारके स्वार्थी, साम्राज्य-वादी सरकारोंके होश गुम कर दिये।

चाहे फ्रान्स हो या अमेरिका, यूरोप, एशिया ; सभी महा-द्वीपोंमें स्थापित राज्योंके भीतर रुपये-पैसेवालोंकी तूती बोल रही है। सैकड़ा पीछे मुश्किलसे पाँच अमीर आदमी होते हैं, मगर सब देशोंकी हालत देख लीजिये। व्यवस्थापक-कौंसिलोंमें, प्रति-निधि-सभाओंमें, सीनेटोंमें, असेम्बलियों आदि सभी स्थानोंमें सौमें पछत्तर प्रतिनिधि अमीरों, जमीन्दारों, व्यापारियों, चम्बरों, मिलों, म्युनिसिपलिटियों और जिला-बोर्डोंके पहुँचते हैं और बड़ी मुश्किल से पचीस प्रतिनिधि किसानों, मजदूरों और नीची जातियोंके पहुँच पाते हैं। सैनिकोंको तो क़ानून बनानेका कहीं अधिकार ही नहीं दिया गया है। उनके लिये तो घोर गुलामी—हुक्मके साथ सिर कटानेका पट्टा—लिख दिया गया है।

साम्राज्यवादी देशोंकी इस व्यवस्थासे ठीक उल्टी व्यवस्था लेनिनने रूसमें क़ायम की। ज़मींदारोंसे ज़मीनें छीन लीं। मिल-वालोंसे मिलें छीन लीं। घरवालोंसे घर छीन लिये। खानवालों से खानें छीन लीं। व्यापारियोंसे व्यापार-मण्डल छीन लिये। छापेखानेवालोंसे प्रेस छीन लिये और उन लोगोंमें बाँट दिये, जो कि असलमें उन खेतोंको जोतते-बोते थे, जो मशीनें चलाते थे, जो कोयला खोदते थे, जो माल ढोते थे, जो प्रेसपर छापते थे। मगर पहिले वे ऐसा अमीरोंका घर भरनेके लिये करते थे, अब वे ऐसा अपने लिये, अपने साथियोंके लिये करते हैं। यह सारी

सम्पत्ति राष्ट्रीय-सरकारकी कहलाती है; पर इसका उपभोग हरएक नागरिक कर सकता है, बशर्ते कि वह कमर कसकर, श्रम करके, अपना नाम श्रमजीवी-समुदायमें लिखा ले।

लेनिनने सबसे पहिला कानून इस प्रकार घोषित किया। यह कानून किसानोंके लिये है, जो कि अब ज़मींदारोंको मिटाकर, स्वयं अपनी सोवियट-सरकारसे, अपनी गुज़र-बसरके लायक ज़मीनें ले लेते हैं:—

१—भूमिका राष्ट्रीकरण।

(१) अबसे ज़मीनपर किसीका भी व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं माना जायेगा। सब ज़मीन राष्ट्रीय सरकारकी कहलायेगी। कोई भी व्यक्ति अपनी ज़मीन बेंच नहीं सकेगा, गिरवी नहीं रख सकेगा। वे समस्त ज़मींदारियाँ, जो कि अबतक माफ़ीदारों, राज-परिवारों, राज-मन्त्रियों, गिरजा-घरों, धर्मशालाओं अथवा व्यक्तिगत अधिकारोंमे थीं,—'राष्ट्रीय-सम्पत्ति' मानी जायेंगी और उनपर जनता-का स्वामित्व स्थापित किया जाता है।

(इस धाराके अनुसार जिनकी ज़मींदारियाँ छिन जायेंगी, उनके लिये राष्ट्रीय सरकार कोई-न-कोई सूरत, जो कि श्रमजीवनके अतिरिक्त और कुछ न होगी, निकालेगी; लेकिन जबतक ऐसा न हो सके, तबतक सर्वसाधारणकी सहायतासे वे अपना जीवन-निर्वाह करें।)

(२) ज़मीनकी भीतरी सम्पत्ति, अर्थात् कच्ची धातुएँ, तेल, कोयला, नमक आदिकी खानोंपर भी राष्ट्रीय क़ब्ज़ा स्थापित किया

जाता है। जंगलों और झीलोंपर भी सरकारी क़ब्ज़ा कायम किया जाता है। सिर्फ झीलों और तालाबोंपर, उनसे पानी लेने-वाले गाँवोंके पंचों या शासक-मण्डलोंका प्रबन्ध मात्र स्वीकार किया जाता है।

(३) वे समस्त वैज्ञानिक ज़मीनें, बाग़-बग़ीचे, बीज-उपवन, अथवा ग्रीन-हाउसेज़ या स्वास्थ्य-उपवन आदिपर भी सरकारी अधिकार स्थापित किया जाता है। ये सब आदर्श खेती अथवा आदर्श उपवनके रूपमें कायम रहेंगे।

(४) पशु शालाओं और चिड़िया-घरोंपर भी राष्ट्रीय सरकार-का अधिकार घोषित किया जाता है।

(५) खेती-बारीके ज़ब्त शुदा बैलों, औजारों तथा अन्न-भण्डारोंपर भी राष्ट्रीय कब्ज़ा क़ायम किया जाता है। यह सामान जनतामेंही बाँट दिया जायेगा। छोटे-छोटे किसानोंके बैल या औजार नहीं छीने जायेंगे।

(६) इन ज़ब्त-शुदा खेतोंको गाँवका हरएक बाशिन्दा जोत-बो सकता है, अपने कुटुम्बियोंकी मदद ले सकता है, मगर किरा-येके मज़दूरोंसे काम नहीं करा सकता।

(अगर किसी कारणसे कोई किसान स्वयं जोतने-बोनेसे लाचार हो जाये, तो गाँवके अन्य किसानोंको दो वर्षतक उसे भर-पेट अन्न देना पड़ेगा। लेकिन यदि कोइ किसान बुड्ढा हो जाये और काम करनेसे लाचार हो जाये, तो सरकार उसे पेंशन देगी)

(७) इन खेतोंका किसानोंमें इस प्रकार बँटवारा किया

जायेगा, कि जिस किसानको जितने अन्नकी जरूरत है, वह उतने अन्नको उपजके हिसाबसे उतनीही नापके खेत लेकर जाते।

(८) ज़ब्त-शुदा ज़मीनें सार्वजनिक फण्डकी ही सम्पत्ति हैं और रहेंगी। इनका बँटवारा गाँवोंको प्रतिनिधि-संस्थाओं द्वारा हुआ करेगा और प्रबन्ध सरकारी संस्थाओं द्वारा हुआ करेगा।

अगर किसी गाँवकी बस्ती बढ़ जायेगी, तो ज़मीनोंका फिरसे बँटवारा किया जाया करेगा।

जो लोग खेतीका धन्धा छोड़ना चाहेंगे, उनके खेत फिर सरकारी सम्पत्ति मान लिये जायेंगे और दूसरे किसानोंको ऊपरी शर्तोंपर जोतने-बोनेके लिये दे दिये जायेंगे।

अगर किसी गाँवमें खेतोंकी कमी है और किसान ज़्यादा हैं, तो बाकी किसानोंको दूसरे गाँवोंमें जाकर रहना पड़ेगा। उस हालतमें सरकार ऐसे किसानोंको बैलों और औजारोंसेही मदद पहुँचायेगी।

ये गाँव छोड़नेवाले यदि खेतीका धन्धा छोड़कर शहरोंमें मज़दूरी आदि करना चाहेंगे, तो वे ऐसा कर सकेंगे, मगर इस हालतमें सरकार उनकी मदद न करेगी।

२—मज़दूर-सेना-संगठन।

(१) श्रमजीवी-सैनिक-सोवियटोंको मजदूरोंकी एक सेना संगठित करनी पड़ेगी।

(२) यह मज़दूर-सेना सोवियटोंकी आज्ञाओंका पालन करेगी।

(३) इस मज़दूर-सेनाको हथियार देने और सैनिक-शिक्षा देनेकी ज़िम्मेदारी सेना-विभागपर रहेगी।

३—सामाजिक सहायता।

(१) समस्त श्रमजीवियोंको बिना किसी ऊँचाई-निचाईके आवश्यक अवसरोंपर सरकारी सहायता मिला करेगी।

(२) जो श्रमजीवी बुड्ढे हो गये हैं, शक्तिहीन हो गये हैं, बीमार रहते है, अपङ्ग हो गये हैं, अथवा जो स्त्रियाँ विधवा हो गयी हैं, जो बच्चे अनाथ हो गये हैं, उन सबको सरकारकी तरफसे सामाजिक सहायता दी जायेगी।

(३) जो मज़दूर अपङ्ग या शक्तिहीन होनेके पहिले जिस कारखानेमे काम करता रहा है, उसकी सहायताकी रकम उसी कारखानेसे वसूल की जाया करेगी।

(४) जो वेतनकी रकम उन्हें मज़दूरी करते समय मिलती थी, वही रक़म हाथ-पैर कट जाने या कारखानेसे कामकी कमी कहकर अलग किये जानेपर मिला करेगी।

(५) इस सामाजिक सहायताका पूरा प्रबन्ध श्रमजीवियोंकी कमेटियोंके हाथमे रहेगा।

४—मकानोंका राष्ट्रीकरण।

(१) म्युनिसिपलिटियोंको यह अधिकार दिया जाता है, कि वे समस्त ख़ाली मकानों और इमारतोंपर कब्ज़ा कर लें।

(२) इन ज़ब्त-शुदा मकानोंमें म्युनिसिपल स्थिति और व्यवस्थाके अनुसार वे लोग बसाये जायें, जिनके पास रहनेके लिये मकान नहीं है अथवा जो लोग ग़रीबीके कारण गन्दे तथा तन्दुरुस्ती बिगाड़नेवाले मकानोंमें पड़े हुए है।

(३) म्युनिसिपलिटीको अख्त्यार है, कि वह शहर या क़स्बे-भरके मकानोंमें जाकर जाँच करे और उनका उचित प्रबन्ध करे।

(४) मकानोंके सम्बन्धमें हाउस-कमेटियाँ बनाई जायें और उन्हें प्रबन्ध-सम्बन्ध तथा फैसला देनेके अधिकार दिये जायें।

(५) म्युनिसिपलिटियाँ ऐसी पंचायतें भी क़ायम कर सकती हैं, जिनके द्वारा मकानोंमें लोगोंके बसानेकी व्यवस्था हो सके।

५—शराब-बन्दी।

(१) जबतक कोई दूसरी आज्ञा न निकाली जाये, तबतकके लिये शराब तथा शराबसे बननेवाली अन्य नशीली चीजोंका बनना बन्द किया जाता है।

(२) जिन लोगोंके हाथमें शराबके कारखाने हों, वे २७ नवम्बरतक अपने-अपने पते लिख भेजे और अपने-अपने मालकी तादात या वज़नसे सूचित करे।

(३) इस आज्ञाको न माननेवालोंको सैनिक अदालतमें दण्ड दिया जायेगा।

६—आमदनी-खर्चकी जाँच।

अमीरों और पूँजी वादियोंकी आमदनी तथा ख़र्चकी जाँच करनेके लिये भी एक क़ानून बना था। इस क़ानूनके अनुसार हाउस-कमेटियोंको यह अधिकार दिया गया, कि वे हरएक गृहस्थसे उसकी आमदनीके सीग़े और खर्चकी मदें मालूम कर लें। फार्म इस प्रकारसे है :—

फार्म—आमदनी व खर्च

वार्ड — .. .. नम्बर— ... ... पता —	कुटुम्बका नाम— ... ... ईसाई-नाम— ... ... पेशा —	हाउस-कमेटी का नम्बर ....
स्त्री या पुरुष | उम्र	खर्च	रक़म
मासिक आय ... ... व्यय	भीतरी कपड़े कितने खरीदते हो सूट-कोट पैंट-वेस्टकोट ... ओवरकोट— .. ... जूते— .. .. रबर— .. .. अन्य फुटकर सामान	....
मासिक किराया		
कितने कमरे हैं। | कितने सहन हैं।	मैं स्वीकार करता हूं कि ऊपरकी खाना-पूरी सही है। हस्ता०...	मोहर कमेटी

(अमीरोंको यह फार्म आकर हाउस-कमेटियोंको देना पड़ता था, इसपर विचार होकर अमीरोंके "अधिक कमरे" जो कि विलासिताके कारण उन अमीरोंने अपने क़ब्ज़ेमें कर रखे थे, छीन लिये जाते थे)

७—नागरिकोंके अधिकार।

नवम्बरकी क्रान्तिको श्रमजीवियों और सैनिकोंने सार्वजनिक स्वाधीनताके झण्डेको उठाकर सफल किया है। अतः—

ज़मींदारोंके कठोर दबावसे किसान मुक्त किये जाते हैं; क्योंकि ज़मींदारका ज़मीनपरसे अधिकार हटा दिया गया है।

सैनिकों और नाविकोंपरसे अफ़सरोंकी कठोर सत्ता हटा दी गयी है। अत अबसे जनरल, कर्नल आदि सैनिक-प्रतिनिधि-कमेटियों द्वारा निर्वाचित हुआ करेंगे और उन्हींकी इच्छासे पदच्युत किये जाया करेंगे।

मज़दूरोंके ऊपरसे पूँजीवादी मिल-मालिकोंका प्रभुत्व हटा दिया गया है। अतः अबसे मिलों और फैक्टरियोंपर मज़दूरोंका ही अधिकार क़ायम किया जाता है।

अब केवल रूसकी जनताकी सत्ता बाक़ी रह जाती है। वह जनता, जो अभीतक तरह-तरहके दबावों और अत्याचारी नियमोंके बन्धनोंसे परवश थी, अब सब प्रकारसे स्वाधीन की जाती है और उसे अपनी स्वाधीनताके इस पवित्र क्षेत्रको स्वयं दृढ़ बनाना चाहिये।

ज़ारके ज़मानेमें लोग आपसमें लड़ाये जाते थे, इसका परिणाम सबपर प्रकट था, आपसकी मार-काट तथा परवशता बढ़ती जा रही थी। अब उस दुष्ट नीतिका पुनरावाहन कदापि न होना चाहिये। वरन् रूसी जनताकी सच्ची तथा सहानुभूति-पूर्ण एकताका सुसंगठन आरम्भ किया जाये।

मार्चकी क्रान्तिके बाद, जब कि साम्राज्यवादी पूँजो-पतियोंके हाथमें शासन-सत्ता पहुँची, तब भी कूट-नीति काममें लायी गयी। रूसके अन्दर पारस्परिक अविश्वासको जान-बूझ कर जन्म दिया गया और झूठी स्वाधीनता तथा छल युक्त समानताका ढोंग रचा गया। इसका फल भी सबको मालूम है। जातीय कलह बढ़ी और आपसका विश्वास नष्ट हो गया।

अब इस अविश्वास और द्वेषकी प्रगतिको रोकना रूसी जनताका कर्त्तव्य है। होना यह चाहिये, कि रूसकी जनता आपस में प्रेम-भाव तथा विश्वासको स्थापित करके पूँजी-वादियोंके पाप-मय दुष्प्रयत्नोंका सामना करे और एकता कायम करके रूसको सुखी बनावे।

८—बैंकोंपर क़ब्ज़ा।

राष्ट्रीय हितकी दृष्टिसे पूँजीवादियोंके हितैषी, सट्टे और अन्य प्रकारकी सार्वजनिक लूटके खेल खेलनेवाले बैंकोंपर राष्ट्रीय क़ब्ज़ा क़ायम किया जाता है, जिससे सच्चे नागरिकों—श्रमजीवियों और किसानों—को उनके द्वारा उचित सहायता प्राप्त हो सके।

(१) अबसे समस्त बैंकोंकी सम्पत्ति, राष्ट्रीय सरकारकी सम्पत्ति मानी जायेगी।

(२) समस्त प्राइवेट बैंक और ज्वाइण्ट-स्टाक बैंक, सरकारी बैंकमें मिला लिये जायेंगे।

(३) ऐसे बैंकोंका सब लेना-देना सरकारी बैंक अपने हाथमें लेता है।

(४) प्राइवेट बैंकोंमें रुपये लगानेवालोंका हिसाब-किताब एक व्यवस्था द्वारा निश्चित किया जायेगा।

(५) इन बैंकोंकी पूरी देख-भाल फिलहाल सरकारी बैंकके निरीक्षकों द्वारा होगी।

(६) बैंकोंमें जमा करनेवाले छोटी छोटी रक़मोंके डिपोज़ीटरोंकी रक़में वापस कर दी जायेंगी।

९—सेनाओंमें समानता।

(१) सेनाओंमें सिपाहीसे लेकर जनरल तककी ऊँचाई-निचाई दूर की जाती है। अबसे सब लोग समान स्वत्त्वोंके अधिकारी माने जायेंगे।

(२) ऊँचे सैनिक अफसरोंके समस्त विशेष अधिकार ज़ब्त किये जाते हैं।

(३) सम्बोधन करनेके समस्त आदर-बोधक शब्द हटाये जाते हैं।

(४) पोशाकों और अफसरोंके खास-खास गले और हाथमें लगनेवाले चिह्न या निशान ज़ब्त किये जाते हैं।

(५) चूँकि अफसर-पदही तोड़ दिये गये हैं, अतः अबसे अफसरोंकी कमेटियाँ भी न बनने पायेंगी।

१०—उपाधियों और टाइटिलोंकी ज़ब्ती।

(१) सब प्रकारके जातीय संस्था-गत अथवा रईसो और व्यापारिक टाइटिल रद्द किये जाते हैं।

(२) जातीय उपाधियाँ, जैसे रईस, व्यापारी, बैंकर आदि रद्द की जाती हैं, साथही राजा, काउण्ट, ड्यूक आदि टाइटिल भी ज़ब्त किये जाते हैं। प्रिवी कौंसिलर, मुंसिफ, जज आदिके ओहदे भी रद्द किये जाते हैं। सिर्फ "रूसी नागरिक" शब्दसे परस्परमें सम्बोधन करना चाहिये।

(३) रईसों और ताल्लुकेदारोंकी सम्पत्ति ज़िला-बोर्डोंके हाथमें सौंप दी जाये।

(४) व्यापारियों तथा मकान-मालिकोंकी सम्पत्ति म्युनिसिपलिटियोंके अधिकारमें दे दी जाये।

(५) इसी प्रकार अन्य सभी प्रकारकी ऐसी जायदादें और रियासतें बोर्डों और म्युनिसिपलिटियोंके क़ब्ज़ेमें आ जायेंगी।

११ – कर्मचारियोंका वेतन।

कई क़ानून बनाकर सोवियट-सरकारने उच्च सरकारी कर्मचारियोंकी तनख्वाहें कम कर दीं। इस प्रकार मन्त्री-मण्डलके कमिश्नरोंको भी सिर्फ ५०० रूबल प्रति मास दिये जाने लगे। (एक रूबल १॥) रु०) इससे बड़ी तनख्वाह किसीको भी नहीं दी गयी।

बोल्शेविक समाज-संगठन
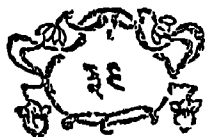
" At this moment we are not only trying to solve the Land questoin, but the question of Social Revolution—not only here in Russia, but all over the world. "

—*Lenin.*

किसानोंकी कांग्रेसमें भाषण देते हुए लेनिनने उपर्युक्त वाक्य कहा था। आगे चलकर वह सच्चा हुआ। लेनिनका जीवन एक निरन्तर होनेवाले अनुभवोंका जोवन था। स्वीट्ज़रलैण्डमें रहकर उन्होंने फ्रेञ्च, जर्मन, आस्ट्रियन तथा अन्यान्य देशोंके साम्यवादियोंसे साम्यवादके सम्बन्धमें खूब बहस की थी। कर्ल मार्क्स तथा रूसोके साम्यवाद तथा समष्टि-वादको कई दृष्टिसे अध्ययन करनेके बाद भी लेनिनकी समझमें यही आता था, कि सम्यवादका व्यावहारिक रूप किसो भी प्रकारकी सरकार द्वारा काममें नहीं लाया जा सकता। सत्ताका अभिमानही विषमताका उत्पादक है। किसी भो प्रकारकी सत्ताकी स्थापना आरम्भमें चाहे जितनी साफ-सुथरी हो, लेकिन धोरे-धीरे वह एक विशेष पक्ष या दलके हाथमे चली जा सकती है। उक्त विशेष दल अपने

सिद्धान्तोंको आगे बढ़ानेके लिये अवश्य कोशिश करेगा। अतः "लोक-सत्तात्मक साम्यवाद" की हत्या हो जायेगी।

मार्क्सने इस विषयपर कुछ दूरीतक अच्छा विचार किया था। लेनिनने मार्क्सके बताये हुए मार्गको और दूरीतक पहुँचाया। अपनी समझमें लेनिनने एक ऐसी हद्तक पहुँचाया ; जिसके आगे मनुष्यकी विचार-शक्ति और व्यवहार-शक्ति नहीं जा सकती थी।

रूसकी शासन-सत्तापर अधिकार पानेके बाद, लेनिनने अपने विचारोंको कार्य-रूपमें परिणत करनेका प्रयत्न किया। बोल्शेविज़्म का अन्तिम विकास बतलाता है, कि किसी भी देशमें अपने परिश्रमकी रोटी खानेवाले श्रमजीवीही नागरिकताके स्वत्व भोग सकते हैं। रूसमें केवल श्रमजीवियोंका सम्प्रदाय स्थापित करनेके लियेही ऐसे-ऐसे कानून बनाये गये और काममें लाये गये, जिनके प्रखर प्रभावसे ज़मींदार, बैंकर, रईस, व्यापारी, मिल-मालिक और धनी-सम्प्रदायका नाम-निशानतक मिट गया। पिछले अध्याय—"बोल्शेविक क़ानून"—में, इसीलिये हमने उन समस्त बोल्शेविक क़ानूनोंका अनुवाद दे दिया है, जिससे पाठकगण बोल्शेविक सम्प्रदायकी रचनाको समझ सकनेमें समर्थ हो सकें।

बोल्शेविक मतके अनुसार देशके भीतर केवल श्रम करनेवाले नागरिक ही रह सकते हैं। अपङ्ग और बुड्ढोंके लिये अनाथालय अथवा सार्वजनिक सहायताके फण्ड स्थापित हैं, उनके द्वारा मदद दी जाती है। हरएक शहर और गाँवमें, सोवियटें क़ायम हैं। उनके ऊपर बड़ी भारी ज़िम्मेदारियाँ हैं। ग्रामीण सोवियटके पदा-

धिकारी खेतोंका बँटवारा करके खेती-बारीकी देखभाल करते हैं। मान लीजिये, जान्सन नामक किसानके घरमें तीन स्त्रियाँ, एक वृद्ध तथा दो बच्चे हैं। अतः पाँच बीघे ज़मीन उसे दे दी जायेगी। वह खुद उस ज़मीनसे अनाज पैदा करे और अपने कुटुम्बका पालन करे। उक्त वृद्ध पुरुषके लिये सोवियट कुछ मासिक पेंशन भेजती रहेगी। लेकिन यदि जान्सनके खेतोंमें ज़रूरतसे ज़्यादा अनाज उत्पन्न हुआ, तो वह अनाज राष्ट्रीय सम्पत्ति होगा और सोवियटके कब्ज़ेमें चला जायेगा। इसी प्रकार शहरोंकी सोवियटोंके अधिकारमें मिलें कर दी गयी हैं। मिलोंमें काम करनेवाले मज़दूरोंकी प्रतिनिधि-कमेटी ही मिलका प्रबन्ध करती है। मिलकी आमदनीसे ही मिलका सब खर्च पूरा किया जाता है। मुनाफेमेंसे एक भाग मजदूरों तथा क्लर्कोंमें बँट जाता है, बाक़ी राष्ट्रीय खज़ानेमें चला जाता है।

दूकानों और घरोंका भी प्रबन्ध दूकान-कमेटियों तथा हाउस-कमेटियोंके हाथमें है। कोई व्यक्ति अपनी निजकी दूकान नहीं रख सकता। एक प्रकारसे प्रत्येक दूकानदार राष्ट्रीय-सरकारका नौकर मात्र है। उसे सब चीजोंका पूरा हिसाब रखना पड़ता है। हर सप्ताह मुनाफा दिखलाना पड़ता है। एक बँधी हुई रक़म वेतन-के रूपमें उसे दी जाती है। बाकी दूकान-कमेटीके पास चली जाती है; उसी रक़मसे बिक्रीका माल मँगाया जाता है और शहर-भरकी दूकानोंपर भेज दिया जाता है। घरोंपर सरकारी क़ब्ज़ा है। चाहे अमीर हो, चाहे ग़रीब (अब अमीर तो रहे ही नहीं), सबको

कुटुम्बकी छुटाई-बड़ाईके अनुसार कमरे बाँट दिये गये हैं। पहिले अमीर लोग मकान-भाड़ा खाकर रईसी ठाट बनाये फिरते थे, अब वे दिन नहीं रहे। रहने भरको मकान देकर सरकारने बाक़ी मकानोंपर अपना क़ब्जा कर लिया और श्रमजीवियों तथा ग़रीबों को बसाकर शहरकी आबोहवा गन्दी करनेवाले मकानोंको तुड़वा दिया। अब थोड़ासा किराया लिया जाता है, जिससे मकानोंकी मरम्मत होती है तथा नये मकान बनवा दिये जाते हैं।

जो अमीर पहिले मोटरोंपर चढ़े घूमते थे, वे अब क़ानूनके डरके मारे कुछ-न-कुछ श्रम करते नज़र आते हैं, वरना आवारा-गर्दीके क़ानूनके अनुसार उन्हें जेलमें जाना पड़ता है, जहाँ हरएक क़ैदीसे डटकर काम कराया जाता और तब भोजन दिया जाता है।

इस प्रकार लेनिनने रूसमे केवल श्रमजीवी-समाजके अस्तित्व-की ही गुँजाइश रखी है। कोई दूसरा फिरक़ा रहनेही नहीं दिया है। समाजके अन्य समस्त अंगोंको तोड़कर, केवल श्रमजीवी-समुदायके रूपमें लानेके लियेही अमीरोंकी सम्पति, जमींदारोंकी ज़मींदारियाँ, मिल-मालिकोंकी मिलें और व्यापारियोंकी दूकाने ज़ब्त कर ली गयी हैं। उनके अख़बार भी बन्द कर दिये गये हैं और उन्हे पूँजी-वादका आन्दोलन करनेसे भी रोक दिया गया है। लेनिनका कथन है, कि इस प्रकार कठिन बन्धनमे पड़कर समस्त अधिकारों और सुखोंसे वंचित भूतपूर्व पूँजीवादी धीरे-धीरे श्रम-जीवी हो जायेंगे। जिस समय क़ानूनोंकी कठोर मारसे समस्त

जनताके मनोविचार ऐसे हो जायेंगे, कि हमें श्रम करकेही ज़रूरत के मुआफिक रोटी, कपड़ा लेने और कुटुम्बके अनुसार छोटे या बड़े मकानमें रहनेका अधिकार है, उस समय "सरकार" नामक संस्थाको भी ज़रूरत नहीं रहेगी। केवल सोवियट अथवा गोष्ठियाँ थोड़ेसे नियमोंके साथ ज़मीन, उपज, खनिज पदार्थ, मकान, मिल तथा अनाजका नियन्त्रण कर लिया करेंगी। इन गोष्ठियों (Commune) में जनताकेही प्रतिनिधि होंगे और उनका चुनाव समस्त श्रमजीवियोंके वोटोंसे हुआ करेगा। अतः अन्याय या अत्याचार न हो सकेगा। धीरे-धीरे जुर्म भी कम होते जायेंगे और देश-निवासियोंका जीवन अत्यन्त सरल और शान्त होता जायेगा। अपने देशकी सामग्रीपरही उनका अवलम्ब होगा, दूसरे देशोंपर अधिकार करने, लूटने या सम्पत्ति एकत्रित करनेका उन्हें कोई शौक न रह जायेगा। अतः सेनाओंका भी रखना बन्द हो जायेगा। केवल अपने-अपने ग्रामोंकी व्यवस्था ठीक रखनेके लिये श्रमजीवियोंमेंसे ही एक निश्चित अवस्थाके व्यक्ति 'सैनिक' रूपमें रहा करेंगे। इस प्रकार जब पूँजीवाद, साम्राज्यवाद अथवा विषमवाद नष्ट हो जायेगा, उसी दिन सच्ची साम्यवादी व्यवस्था स्थापित हो जायगी। जिसके अन्दर निःस्वार्थ नागरिक और परस्परमें सहानुभूति रखनेवाले कुटुम्बी होंगे।

निरंकुश-सत्ता

बोल्शेविक शासन-प्रणालीपर संसार-भरके राजनीतिज्ञोंने मिलकर जो सबसे बड़ा आक्षेप किया है, वह यह है, कि बोल्शेविकोंने अपनी शासन-व्यवस्थामें केवल श्रमजीवियोंको ही वोट देने और प्रतिनिधि चुननेका अधिकार दिया है। इसका अर्थ यह है, कि देशके अन्य समुदायों—पूँजी-वादियों, व्यापारियों और जमींदारोंको सरकारी व्यवस्थामें अपनी सम्मति देने अथवा विरोध करने तकका अधिकार नहीं है। अमेरिकाके साम्यवादियोंने, फ्रान्सके प्रजातन्त्र-वादियोंने और इङ्गलैण्डके उदार मतवादियोंने श्रमजीवियोंकी इस निरंकुश-सत्ता (Dictatorship of the proletariat) को अत्याचार और जुर्म (Crime) के नामसे पुकारा है।

अन्य देशोंके भी साम्यवादियोंका कहना यही है, कि जो पार्टी बहुमत रखती हो, वह अपनी सरकार क़ायम करते समय छोटे-छोटे दलोंका भी खयाल रखे और उन्हें भी वोट देनेका अधिकार दे। लेकिन लेनिन कहते हैं :—

"सरकार स्वयं एक ग़ैर-वाजिबी संस्था है। एक दलका दूसरे

दलपर नाशकारी दबाव न पड़ने पावे, इसी उद्देश्यसे "सरकार" नामक संस्था क़ायम की जाती है। लेकिन क्या ज़बर्दस्त दलका दबाव दूसरे दलपर नहीं रहता? सरकार हमेशा बलवानोंकी होती है और केवल दिखानेके लिये न्याय अथवा व्यवस्थाका ढोंग रचती है।"

इसके बाद लेनिनके सिद्धान्तोंपर फिर यह आक्रमण होता है, कि "मान लिया जाये, कि सरकारके संगठनमें ज़बर्दस्त दलकाही प्रभुत्व रहता है; मगर बहुमत रखनेवाले बुद्धिमान् सदासे कमज़ोरोंका ध्यान रखते आये हैं। यदि ऐसा न होता, तो समाजका संगठन कभीका नष्ट हो चुका होता। धीरे-धीरे कमज़ोरोंको ज्ञान दिया जा रहा है।"

लेनिन इसके उत्तरमें कहते हैं, कि :—

"If socialism can only be realised when the intellectual development of all the people permits it, then we shall not see socialism for at least five hundred years. This the vanguard of the working class; it must not allow itself to be halted by the lack of education."

अर्थात्, कमजोरोंको ज्ञान देनेके बहानेसे यदि संसारके साम्यवादी समझौता करके ज़बर्दस्त दलको अपने ऊपर माननेके लिये तैयार हैं, तो अभी सचा साम्यवाद ५०० वर्षतक आनेसे दूर रहा। अतः साम्यवादी-दलको शिक्षा या ज्ञानकी कमीके कारण कोई समझौता न करके अपना उद्देश्य आगे बढ़ाना चाहिये।

लेनिनका साफ-साफ कहना यह है, कि श्रमजीवियोंको सशस्त्र क्रान्ति करके, पूँजी-वादियों या उदार-दलवालोंसे, शासन-सत्ता छीन लेनी चाहिये ; क्योंकि किसी भी प्रकारकी समझौतेकी सरकार अमीरोंका पक्ष लेती रहेगी और धीरे-धीरे श्रमजीवी इतने तबाह हो जायेंगे, कि उनके लिये क्रान्तिके साधन भी अत्यन्त अल्प रह जायेंगे।

इस प्रकार शासनको हाथमें लेकर श्रमजीवियोंको चाहिये, कि किसीके साथ समझौता न करे। उनका मुख्य कार्य यह होना चाहिये, कि वे अमीरोंकी सम्पत्ति, ज़मीन्दारोंकी ज़मीनों और पूँजीपतियोंकी मिलों, अख़बारों, व्यापारों और अन्य आर्थिक तथा राजनैतिक साधनोंको छीन ले।.........

इसके बाद वञ्चित पूँजीवादी स्वयं श्रमजीवी हो जायेंगे अन्यथा उनसे ज़बर्दस्ती काम कराया जायेगा, तब उन्हे भोजन-वस्त्र दिया जायेगा।

इस प्रकारके समाजकी रचना केवल श्रमजीवियोंकी निरंकुश-सत्ता द्वाराही की जा सकती है। श्रमजीवियोंकी यह निरंकुश सरकार स्थायी नहीं होगी। कुछ वर्षोंके बाद, जब समस्त देशमें प्रत्येक नागरिक श्रमकी रोटियाँ खाने लगेगा और उसका यह स्वभाव पड़ जायेगा, कि अपने परिश्रमकी रोटियोंपरही मेरा अधिकार है, दूसरेकी सम्पत्ति हड़प करके मैं कहाँ रखूँगा ? जब कोई नागरिक मकान नहीं रख सकता, रियासत नहीं रख सकता, मिल नहीं रख सकता, तब व्यर्थका बोझ—सम्पत्ति—मेरे किस

कामकी। जरूरत भरके लिये मुझे मिलही रहा है। बस, सम्पत्तिकी इस निस्सारताका विचारही सामुदायिक साम्यवादको जन्म देगा।

इस प्रकारके सामुदायिक समताके पुष्ट होनेपर 'सरकार' नामक संस्था स्वयं टूट जायेगी; क्योंकि फिर किसीको उसकी ज़रूरत ही नहीं रहेगी। हरएक नागरिक अपने परिश्रमकोही अपनी पूँजी समझेगा।

लेनिन, मार्क्सके वाक्योंका हवाला देकर इस स्थितिके बाद एक और स्थिति बतलाते हैं। वह यह कि, जब एक देश सबसे पहिले इस प्रकारके सामुदायिक साम्यवादकी स्थितितक पहुँच जाये, तो उसे अन्य देशोंके श्रमजीवियोंको भी मदद पहुँचानी चाहिये और उनके बीचके साम्राज्यवादी विषको मिटाकर श्रमजीवियोंके साथ अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि स्थापित करनी चाहिये। इस सन्धिका तात्पर्य्य केवल यह होगा, कि एक सार्व-भौमिक श्रमजीवी-संघ स्थापित हो सकेगा, जो कि अन्य छोटे-छोटे पराधीन देशोंका उद्धार कर सकेगा और दलित श्रमजीवियोंको ऊपर उठाकर, व्यावहारिक पद्धतिके अनुसार उनको अपनीही तरह सामुदायिक समताके रूपमें परिवर्त्तित कर देगा।

जब समस्त देशोंमें यह स्थिति उत्पन्न हो जायेगी, तब युद्ध होना बन्द हो जायेगा और साम्राज्यवाद, पूँजीवाद तथा प्रभुता-वाद मिट जायेगा। संसारके लिये केवल वही स्थिति सच्ची शान्ति और परम सुखकी स्थिति होगी।

रूस-जर्मन-सन्धि।

(१)

पुस्तक समाप्त करनेके पहिले यह आवश्यक है, कि हम अपने पाठकोंको यह भी बतला दें, कि बोल्शेविकोंने जिस युद्धको बन्द करनेका आन्दोलन उठाया था, वह किस प्रकार बन्द हुआ ?

१६१७ के नवम्बर और दिसम्बरमें तो लेनिनने रूसके शासन-परही अच्छी तरहसे अधिकार जमा पाया था। अतः १९१८ के जनवरी मासमें उन्होंने जर्मनीके साथ सन्धि-सम्बन्धी वार्तालाप छेड़ा। सोवियट-कांग्रेस-द्वारा घोषित तथा सोवियट-सरकार-द्वारा प्रेषित सन्धि-योजनाका प्रस्ताव जिस समय अन्य राष्ट्रोंके पास पहुँचा, उस समय साम्राज्यवादी लड़ाकू देशोंकी सरकारें चौंक पड़ीं। लेकिन अमेरिकाके प्रेसीडेण्ट विलसनने लेनिनके "आत्म-निर्णय" वाले सिद्धान्तको उचित बतलाया। उस समय जर्मनी जीत रहा था, इसी लिये मि० लायड जार्ज तथा प्रेसीडेण्ट विलसन आदि कुछ उदार सिद्धान्तोंका समर्थन करते हुए सन्धिकी कामना कर रहे थे।

यूरोप और अमेरिकाके बीच सिद्धान्तोंका अदल-बदल हो रहा था। प्रेसीडेण्ट विलसनने अपनी स्पीचमें संसारकी शान्तिके लिये १४ शर्तें रखी थीं। उसके बाद मि० लायड जार्जने युद्धके सन्बन्ध-

में एक मार्केकी स्पीच दी। उन्होंने कहा, कि "उत्तरीय फ्रान्स तथा अल्सास-लारेन प्रान्त फ्रान्सको लौटा दिया जाये, बेल्जियम-का कोई भी भाग जर्मनीके क़ब्ज़ेमें न रहने पावे। पोलैण्ड, रूमानिया, सर्विया, अरब, पेलस्टाइन आदि प्रान्तोंको "आत्म-निर्णय" का अधिकार दिया जाये।"

प्रेसीडेण्ट विलसनने भी मि० लायड जार्जका समर्थन किया और साथही यह भी कहा, कि संसारके समस्त समुद्र सब राष्ट्रों-के लिये स्वतन्त्र छोड़ दिये जायें।

लेकिन उस समय जर्मनीके सिरपर विजयका मद सवार था। जर्मनीके प्रधान मन्त्री काउण्ट हर्टलिगने बड़े तपाकसे अपनी वक्तृतामें कहा, कि पोलैण्डको हमने जीत लिया है, वहाँकी शासन-प्रणाली हमारी इच्छाके अनुसार निश्चित की जायेगी। रही फ्रान्स-के प्रदेशों तथा बेल्जियमकी बात, सो यदि हमारे अफरीकन प्रदेश तथा चीनी टापू हमें वापस दे दिये जायें, तो हम फ्रान्सके उक्त जीते हुए भाग तथा बेल्जियमको खाली कर देंगे।

आस्ट्रियाके प्रधान मन्त्री काउण्ट ज़ेरनिनने इससे भी बढ़कर बात कही। उन्होंने फरमाया, कि चूँकि इस महायुद्धकी भीतरी मंशा यह थी, कि रूस बाल्कन-राष्ट्रों तथा कुस्तुनतुनियाँपर क़ब्ज़ा करना चाहता था। दूसरी तरफ फ्रान्स अपने अलसास-लारेनपर फिरसे अधिकार चाहता है। इङ्गलैण्ड इस लिये युद्धमें सम्मिलित हुआ है, कि वह जर्मनीकी धाक टर्की और बाल्कन-राष्ट्रोंपर नहीं देखना चाहता। साथही जर्मनीकी शक्तिका बढ़ना भारतवर्ष

तथा मिश्रके लिये भी ख़तरनाक है। इटली और रोमानिया इस लिये आस्ट्रियाके ख़िलाफ़ हो गये, कि उन्हें ज़मीनका कुछ लोभ है। वे आस्ट्रियाकी कुछ ज़मीन हड़पना चाहते हैं। लेकिन इन सबकी इच्छायें नष्ट हो चुकीं। जर्मनी फ्रान्सके उत्तरीय भागपर क़ब्ज़ा किये हुए है। आस्ट्रियन फौजें इटलीके वेनिस-प्रान्तपर क़ब्ज़ा किये पड़ी हैं। रूमानियाके सिरपर जर्मन-तोपें गड़गड़ा रही हैं। फ्रान्सके इरादे चूर चूर हो चुके हैं। रूसके टुकड़े-टुकड़े हो ही गये। अतः हम दोनों (जर्मनी तथा फ्रान्स) के फैसलेसे ही बाल्कन-राष्ट्रोंका भविष्य निश्चित हो सकता है।

चूँकि जर्मनीकी जनता भी उस समय विजयके नशेमें मस्त थी। अतः लेनिनका वह श्रमजीवी-सन्धि-स्थापनवाला घोषणा-पत्र कुछ असर न ला सका। रूसकी सफलताको देखकर लेनिनने भी कुछ ग़लती की। उन्होंने १९१८ की फरवरीमें ज्योंही जर्मनी और आस्ट्रियासे सन्धिकी शर्तें प्राप्त की, त्योंही सेनाओंको वापस बुला लेनेका हुक्म निकाल दिया; लेकिन जर्मनीकी भेजी हुई शर्तें ऐसी नहीं थीं, कि उनपर लेनिन हस्ताक्षर कर सकते। अतः बोल्शेविक सरकारने शर्तोंको वापस भेजकर यह भी सूचना लिख दी,—"जर्मनीसे लड़नेकी हममें शक्ति नहीं है और साथही हमारी यह भी इच्छा नहीं, कि हम जर्मनीके साथ युद्ध जारी रखें, लेकिन हमारे सिद्धान्तोंके विरुद्ध नीतिकी ये शर्तें वापस की जाती हैं। जर्मन तथा आस्ट्रियन सरकारें फिर विचार करें। हम अपनी सेनाओंको वापस बुलाते हैं और हथियारी सुलह घोषित करते हैं।"

जब बोल्शेविक सरकारने ऐसी घोषणा कर दी, तब जर्मनीके हौसले और भी बढ़ गये। उसने रूसी सेनाओंके रणक्षेत्रोंसे वापस जातेही रूसके उक्रेन प्रान्तसे अलग सन्धि स्थापित कर ली। इस सन्धिमें उक्रेन प्रान्तको पोलैण्डका उत्तरीय-पश्चिमीय हिस्सा देकर जर्मनीने अन्न लेनेकी शर्त लिखाकर बहुतसा अनाज जर्मनी मँगवा लिया। जब बोल्शेविक सरकारने "आत्म-निर्णय" की ऐसी छीछालेदर देखी और यह देखा, कि रूसके ये प्रान्त अपनी-अपनी स्वाधीनता घोषित करके अन्य राष्ट्रोंके हाथकी कठपुतली बन रहे हैं, तब उसने इन प्रान्तोंमें सोवियट-आन्दोलनको जोरोंसे शुरू कर दिया। फल यह हुआ, कि उक्रेनमें मज़दूरोंने सरकारी स्थानोंपर क़ब्ज़ा करके अन्न-भण्डारोंको जला दिया।

दूसरी तरफ़ बोल्शेविक जल सेनाने रीगाकी खाड़ीके पास जर्मन-प्रदेशोंपर क़ब्ज़ा करना आरम्भ कर दिया। जब जर्मनीने देखा, कि बोल्शेविक-सरकार हर तरहसे अचूक पैंतरे खेल रही है, तब उसने रूसको फिर लड़ाईकी सूचना देते हुए लिखा कि— "तुमने लड़ाई तो बन्द कर दी, मगर हम लड़ाई बन्द करनेके लिये तैयार नहीं हैं। तुमने सन्धि-पत्रपर हस्ताक्षर नहीं किये, अतः सन्धिकी क्षणिक मियाद खतम हो गयी। अब हम अपनी सेनायें आगे बढ़ानेका हुक्म देते हैं।"

इस सूचनाके साथही जर्मन-फौजें रूसपर चढ़ आयीं। उन्होंने धीरे-धीरे फिनलैण्डकी खाड़ी तथा पिस्काफ नगरपर भी क़ब्ज़ा कर लिया। पेट्रोग्राडके ले लेनेकी भी धमकी दे दी। इस हालत-

को देखकर लेनिनने पुरानी शर्तोंपर ही सन्धि कर लेनेकी सूचना भेज दी और ३ मार्चको हस्ताक्षर भी कर दिये।

इस सन्धिके अनुसार बोल्शेविक-सरकारने फिनलैण्डको स्वतंत्र माना। स्थूनिया, लिथोनियासे भी रूसी सेनायें हटा लेनेकी बात स्वीकार की। पोलैण्ड भी जर्मनीके हाथ रहा और उक्रेन, कीव तथा क्रीमिया प्रदेश भी स्वतन्त्र मानने पड़े। इतनाही नहीं, रूसके मार्गसे जर्मनीको फारस तथा अफ़ग़ानिस्तानके साथ व्यापारिक सुभीतेकी भी सुविधा प्रदान की गयी।

यद्यपि लेनिनके सिद्धान्तोंको देखते हुए यह सन्धि असन्तोषजनक थी; लेकिन लेनिनने एक बड़ी भारी आशाके आधारपर इस सन्धिको स्थापित करके युद्धसे पिण्ड छुड़ाया।

रूसकी इस हरकतपर फ्रान्स और इङ्गलैण्ड दाँत कटकटाने लगे! उनपर अब जर्मनीकी सेनाओंने पूरे ज़ोरसे चढ़ाई कर दी थी, इसलिये मित्र-राष्ट्र इसपर और भी क्रुद्ध हो गये थे। इसी लिये रूसी सरकारकी सत्ताको माननेसे मित्र-राष्ट्रोंने इनकार कर दिया!

(२)

पण्डित लक्ष्मणनारायण गर्देने एक रोचक वर्णन रूस-जर्मन-सन्धिके सम्बन्धमें लिखा था, वह भी पाठकोंके अवलोकनार्थ नीचे दिया जाता है :—

लेनिन छोटे क़दका दुबला-पतला आदमी था। बदन गठा हुआ, पर उसमें विलक्षणता कुछ नहीं। आँखें बिल्लीकीसी, सिर गञ्जा और चेहरेपर अद्भुत शान्ति थी। यही शान्ति उसका बल था।

लेनिनके शत्रुओंकी कमी नहीं थी। शत्रु बाहर थे और भीतर भी। अलबर्ट रिस विलियम्स नामके एक अमेरिकन सोशलिस्ट १९१७ में ही रूस गये थे। उस समयका हाल उन्होंने लिखा है, कि "बोल्शेविक नेताओंके प्राण हमेशा जोखिममें रहते थे। कोठी-वाल षड्यन्त्रकारी स्वभावतः सबसे अधिक लेनिनकीही घातमें रहते थे। उनका यह कहना था, कि लेनिनके मस्तिष्कसेही सारी स्कीमें निकलती हैं। ईश्वर चाहे, तो एक गोलीसे उसका काम तमाम हो सकता है। रात-दिन उनकी ईश्वरसे यही प्रार्थना रहती थी।" मास्कोके एक फाटकेबाजने एक रोज विलियम्ससे कहा कि "मैं दस लाख रूबल उसे देनेको अभी तैयार हूँ, जो लेनिनको मार डाले और १९ आदमी और हैं, जिनका काम तमाम करना है। हरएकके लिये मैं दस-दस लाख और देनेको तैयार हूँ।"

अलबर्ट विलियम्सने अपने एक बोल्शेविक साथीसे पूछा, कि लेनिनको इसकी कुछ खबरें भी रहती हैं, कि उसकी जानके गाहक क्या-क्या षड्यन्त्र रच रहे हैं? बोल्शेविकने जवाब दिया, "हाँ इन सब बातोंकी उन्हें पूरी खबर रहती है; पर इसकी उन्हें जरा भी परवा नहीं है। वे हमेशा निश्चिन्त रहते हैं। घबराहट क्या होती है, वे जानतेही नहीं।"

कोठीवालोंने लेनिनको मारनेके अनेक प्रयत्न किये। जिन सड़कोंसे होकर लेनिन गुज़रते, वहाँ सुरङ्ग तक लगाये; पर सब प्रयत्न विफल हुए। लेनिन अपनी पतलूनकी जेबोंमें हाथ डाले

बेखबर उन रास्तोंसे गुजरता, पर उसका बाल भी बाँका न होता। किसीने सच कहा है :—

"जाको राखे साइयाँ मारि सकै नहिं कोय।
बाल न बाँका करि सकै जो जग बैरी होय॥"

एक बार १९१८ के अगस्त मासमें एक कारखानेके १५००० मजूरोंकी सभामें व्याख्यान देकर लेनिन लौट रहे थे, जब एक लड़की हाथमें एक काग़ज लिये लेनिनके समीप आयी। लेनिनने समझा, प्रार्थना-पत्र होगा। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया, इतनेमेंही एक दूसरी लड़कीने, जिसका नाम डोका कैपलन था, पिस्तौल निकालकर लेनिनपर तीन गोलियाँ चला दीं। दो लेनिनके बदनमें घुसीं और लेनिन सड़कपर नीचे गिर पड़े। उनके बदन-से खून बहने लगा। लोगोंने उन्हें उठाकर गाड़ीमें रखा और क्रमलिन (ज़ारका हाईकोर्ट जहाँ, अब लेनिन रहते थे) पहुँचा दिया। कई सप्ताह लेनिन बीमार रहे—बचनेकी आशा न थी। लोगोंके क्रोधका पारावार न रहा; उन्होंने कोठीवालोंको पकड़-पकड़कर खूनकी चेष्टाका बदला खूनसे लेना आरम्भ किया; पर लेनिन शान्त था। उसीकी शान्तिसे लोग शान्त हुए।

१९१७ कीही घटना है। अभी ब्रेस्ट लिटोस्ककी सन्धि नहीं हुई थी। रूस और जर्मनीके बीच युद्ध हो रहा था। जर्मनी जीतता जा रहा था और रूसकी हार होती जा रही थी। लेनिनका यह कहना था, कि जर्मनोंसे सन्धि कर लेनी चाहिये और ट्रोजकी वगैरहका यह कहना था, कि नहीं, इस समय सन्धि करके जर्मनोंकी

शर्तें मान लेना अपमान जनक होगा। जो लोग ऐसा कहते थे उन्हींका बहुमत था और युद्ध हो रहा था। लेनिन चाहते थे, कि लोग इस समय सन्धि करनेका महत्त्व समझ लें। इसके लिये वे पूरी चेष्टा भी कर रहे थे; पर इससे लोग उनपर सन्देह करने लगे। लेनिनके विरुद्ध तरह-तरहकी अफवाहें उड़ने लगीं। अमेरिकन 'रेड क्रास मिशन'के कर्नेल रेमण्डराबिन्स उस समयकी एक घटनाका जिक्र करते हैं, कि एक दिन यह देखा गया, कि पेट्रोग्राड-शहरमें दीवारपर एक प्लैकार्ड लगा था, जिसपर यह मज़मून लिखा था:—

"लेनिन सरकारी खज़ानेसे तीन करोड़ सुवर्ण-मुद्रा लेकर फिनलैण्ड भाग गया। रूसकी राज्य-क्रान्तिके साथ नेताओंने दग़ा की। परन्तु पवित्र रूसके लिये यह आशाकी बात है, कि ग्रैण्ड ड्यूक निकोलाय निकोलोविच २ लाख वीर और सच्चे रूसी सैनिकोंके साथ क्रीमियासे आ रहे हैं और वे बोल्शेविक दग़ाबाज़ोंसे रूसकी रक्षा करेंगे।"

उधर जर्मनोंसे युद्ध हो रहा था, इधर बोल्शेविक नेताओंके विरुद्ध बलवेकी तैयारी हो गयी। लेनिन अपने आफिसमें बैठे टेलीफोनसे रण-क्षेत्रकी खबरें सुन रहे थे, हुक्म सुना रहे थे, आज्ञा-पत्र लिखकर दूतोंको भेज रहे थे। यह सब काम शान्तिके साथ हो रहा था; कोई फिक्र नहीं, कोई घबराहट नहीं; मानों शहरमें क्या हो रहा है? इसकी उन्हें कुछ खबरही नहीं!

उनके आफिसके बाहर कुछ विश्वासी बोल्शेविक सैनिक पहरा

दे रहे थे। वे चिल्ला रहे थे :—"हुक्म दीजिये, गोली चलानेका ; अभी बलवा शान्त होता है।"

लेनिनने कहा,—"गोली चलानेका हुक्म ? नहीं, नहीं ; हम उनसे बातें करेंगे। उनके नेताओंको बुलाओ।"

नेताओंको बुलाने लोग दौड़े। लेनिन फिर रण-क्षेत्रकी खबरें जानने और आज्ञा-पत्र लिखने बैठ गये।

उत्तेजित जनताके नेता एक-एक करके आने लगे। सबके हाथोंमें सङ्गीनें और बन्दूकें थीं, साथही कमरमें मैगजीन पिस्तौलें लटक रही थीं। लेनिनका आफिस इन शस्त्रधारियोंसे भर गया। आफिसका दरवाज़ा बन्द कर दिया गया। भीतर अकेला लेनिन और ये उत्तेजित सशस्त्र बलवाई रह गये।

लेनिनने कुर्सीपरसे उठकर कहा,—"बन्धुओ ! तुमलोग देखते हो, मैं भाग नहीं गया हूँ। इस बातको समझो, कि तुममेंसे बहुतों का जन्म भी न हुआ था, जबसे मैं राज्य-क्रान्तिके लिये लड़ रहा हूँ। तुममेंसे बहुतेरे मर जायेंगे, तब भी मैं राज्य क्रान्तिके लिये लड़ता रहूँगा। मेरे प्राण सदा सङ्कटमें रहते है। तुम लोगोंपर इससे अधिक सङ्कट है। जो कुछ कहना हो, साफ-साफ कहो।"

यह कहकर लेनिनने अपने हाथ पतलूनकी जेबमे डाल दिये और कुछ सोचकर फिर कहा,—"बन्धुओ ! मै तुम लोगोंको इस बातके लिये दोष नहीं देता, कि तुम अपने नेताओंपर सदा विश्वास नहीं करते। रूसकी आज ऐसीही हालत है ; पर आश्चर्य है, कि तुम लोगोंने हमारे ऊपर इतना विश्वास रखा।

"सच्चे राज्य-क्रान्तिवादियोंमें आज दो मत हैं। उनमेंसे एक ठीक है, दूसरा ग़लत है। मेरे साथी कहते हैं, रण-क्षेत्रमें जाकर जर्मनोंसे लड़ो, लड़ते हुए मरो—राज्य-क्रान्तिके लिये लड़ते-लड़ते मरो।

"मैं यह नहीं कहता। मैं कहता हूँ, तुम लोग राज्य-क्रान्तिकी एकमात्र सेना हो। तुमलोग बीज हो। यदि जर्मनोंसे लड़ोगे, तो क्या होगा? पुरानी सेना नहीं लड़ रही है। वह लड़ नहीं सकती। उसमें अब दम नहीं रहा। अकेले तुम लोग, जो राज्य-क्रान्तिके बीज हो, लड़ना चाहते हो। जानते हो क्या होगा? तुम लड़ोगे और मरोगे। राज्य-क्रान्तिके सैनिक मारे जायेंगे और ज़ार फिर आ जायेगा।

"बन्धुओ! मेरा कहना ठीक है। ये लोग कहते हैं, कि लेनिन बेइज्जतीकी सन्धि चाहता है। हाँ, मैं बेइज्जतीकी सन्धि चाहता हूँ; पर मैं राज्य-क्रान्तिके सैनिकोंको बचाकर राज्य-क्रान्तिको बचाऊँगा।

"बोलो, तुम क्या चाहते हो? तुम लोग लड़ाईपर जाना चाहते हो, तो स्पेशल ट्रेन तैयार है। मैं तुम्हें न रोकूँगा। तुम जा सकते हो। पर मेरा इस्तीफा ले लो। मैंने राज्य-क्रान्तिका नेतृत्व किया है। मैं अपनेही बच्चोंका ख़ून करनेमें शामिल न होऊँगा। बोलो, तुम्हारी क्या इच्छा है?"

बस, दूसरी बात नहीं; लेनिनने जो कहा, वही सबको जँचा और लेनिनकी जय-जयकार होने लगी। बोस्टलिस्टोककी सन्धिके

पूर्वकी यह घटना है। लेनिन पहलेसेही सन्धिके पक्षमें था और इससे जनतामें उसके विरुद्ध खूब उत्तेजना फैली थी; पर अन्तमें उसका कहना सत्य हुआ। ब्रस्टलिटास्कमें बोल्शेविकोंने जर्मनीकी शर्तें मान कर "अपमान-जनक" सन्धि कर ली। पर इस सन्धिसे रूसका बड़ा भारी लाभ हुआ। जर्मनोंकी तरफसे जनरल वान हाफ्मान बोल्शेविकोंसे जर्मन-शर्तें मँजूर कराने आये थे। पीछे उन्होंनेही इस सन्धिके बारेमें कहा,—

"लेनिन एक बेहैसियतका आदमी था, जिसने जर्मनीको हरा दिया। जर्मनी बोल्शेविज्मको फँसाना चाहता था; पर बोल्शेविज्मने जर्मनीको ही फँसा लिया। हमने बोल्शेविकोंको जीता या न जीता, उतनेमेंही बोल्शेविकोंने हमें जीत लिया। हमारी विजयशालिनी सेना पूर्वी रण-क्षेत्रमें बोल्शेविक हो गयी। हमारा सेना-यन्त्र बोल्शेविकोंका छापाखाना हो गया।" इत्यादि।

पर यथार्थमें इसका सारा यश लेनिनकी उस शान्तिको है, जो बलवाइयोंसे घिरकर भी भङ्ग न हुई। अविचल हृदयकी स्थिर शान्तिही लेनिनके विजयका प्रधान कारण है; पर चारों ओरसे सङ्कटोंसे घिरे हुए मनुष्यमें ऐसी स्थिर शान्ति कहाँसे आयी? लेनिन कभी घबराते क्यों नहीं? वे निर्भय हैं, निस्पृह हैं और निस्वार्थ हैं।

'लण्डन-टाइम्स' जैसे लेनिनको हमेशा गालियाँ देनेवाले पत्रको भी यह स्वीकार करना पड़ा है, कि—

"In the many attacks that have been made

against him no breath of scandal has ever touched his life. उसपर नाना प्रकारकी अपकीर्त्ति आरोपित की गयी ; पर उसके व्यक्तिगत चरित्रपर ज़रासा भी धब्बा नहीं लगा है। उसका चरित्र निष्कलङ्क है। इतना ही नहीं, उस चरित्रमें स्वार्थ, लज्जा और भयका लेश भी नहीं है। उसकी एक खास भावना है, जिसमें वह केवल रूसकाही नहीं, सारे संसारका उद्धार समझता है और उस भावनाके सिवा इस संसारमें किसी वस्तुसे उसका मोह नहीं है। उसकी दिनचर्य्या देखनेसेही इसका पता लग जाता है।"

मित्र-राष्ट्रोंने रूसपर आर्थिक घेरा डाला था, जिससे बाहरसे किसी वस्तुका आना असम्भव था। भीतर दुर्भिक्षका हाहाकार मचा था और ऐसी अवस्थामें रूसपर चारों तरफसे आक्रमण हो रहे थे। इस समय लेनिनने यूरोप और अमेरिकाके मज़दूरोंके नाम एक पत्र लिखा था, जिसमें उन्होंने कहा है,—"रूसी जनताकी ऐसी भयानक दुर्दशा कभी नहीं हुई। भूखकी ऐसी दुस्सह वेदना उसे कभी सहनी नहीं पड़ी थी और ऐसी हालतमें मित्र-राष्ट्र सैनिक हस्तक्षेप करके हमारा सत्यानाश करना चाहते हैं।"

रूसकी जो यह दशा लेनिनने वर्णन की है, वही दशा स्वयं लेनिनकी थी। रूसके किसानों और मज़दूरोंकी जो हालत थी, वही हालत लेनिनकी भी थी; क्योंकि लेनिनका यह सिद्धान्त है, कि वोल्शेविक नेता उसी हालतमें रहेंगे, जिस हालतमें ग़रीब-से-ग़रीब आदमी रहेगा।

मि० बुलिटने अपने अमेरिकन मिशनकी रिपोर्टमें लिखा है, कि जब मैं लेनिनसे मिलने गया, तब सैकड़ों मील दूरके देहातोंसे दो डेपुटेशन उससे मिलने आये थे। एक डेपुटेशन अपने साथ ८ सौ रोटियाँ ले आया था; क्योंकि उसने सुना था, कि लेनिन भूखा है। दूसरा डेपुटेशन एक स्टोव और ईंधन ले आया था; क्योंकि उसे यह खबर मिली थी, कि लेनिनके कमरेको गरम रखनेका कोई प्रबन्ध नहीं है। लेनिनके पास दूर-दूरसे इस तरहके नज़राने आया करते हैं और लेनिन उन्हें सार्वजनिक भण्डारमें भरती कर देता है।

लेनिनको अपने लिये अच्छा खाना और अच्छे कपड़ेकी कुछ भी परवा नहीं रहती। रेमंडराबिन्स जब उनसे मिलने गये, तो वह एक ऊनी कमीज़ और इतना जीर्ण कोट और पतलून पहने हुए था, जिससे मालूम होता था, कि न जाने इन कपड़ोंको बनवाये कितने साल बीत गये हैं। रोटी और चाय तथा ऐसीही और कोई चीज़ यह खाता है और उतनाही खाता है, जितना एक मजूर और यदि दुर्भिक्षकी हालत है, तो स्वयं उसकी यंत्रणा सहता है। बोल्शेविक कर्मचारी १२ से १५ घण्टेतक काम करते है और लेनिन १८-२० घण्टेसे कम मिहनत नहीं करता। वह अपने हाथसे रोज सैकड़ों चिट्ठियोंका जवाब देता है। अपना काम करते हुए इसे खाने-पीनेका भी ध्यान नहीं रहता। बोल्शेविक सैनिक लोहेकी खाटपर खुली बारकोंमें सोते हैं। लेनिन और उसकी स्त्रीका भी यही हाल है। लेनिन जब मरणासन्न अवस्थामें था (जिसका जिक्र ऊपर आ चुका है) तब डाक्टरने इसे जो पथ्य दिया था,

उसमें कुछ ऐसी चीज़ें थीं, जो आम लोगोंको न मिलतीं। लेनिन-ने ऐसी चीज़ोंको छूनेसे भी इनकार कर दिया। तात्पर्य, लेनिनका जीवन एक फ़क़ीरका सा है। पर फ़क़ीरको जो मिलता है, उसे ग्रहण कर लेता है; लेनिन उतना ही ग्रहण करता था, जितना प्रत्येक रूसी मनुष्यको मिल सके।

२—हङ्गरीमें क्रान्ति।

रूसमें प्राप्त की हुई सफलताने मो० लेनिनको बड़ा भारी आशावादी बना दिया था, इसीलिये उन्होंने जर्मनीकी बुरी-से-बुरी शर्तोंपर सन्धि स्थापित कर ली। समस्त फौजोंको रण-क्षेत्रोंसे वापस बुलाकर उन्होंने प्रान्तिक विद्रोहियोंका दमन करना शुरू किया। प्रधान विद्रोही सेनापति कार्नीलाफ़ भी बोल्शेविकोंके हाथ से मारा गया।

दूसरी तरफ लेनिनने अपने प्रचार-कार्यको आष्ट्रिया हंगरी तथा जर्मनीमें फैलाना शुरू कर दिया। लाखों अपीलें जर्मन और आष्ट्रियन मज़दूरों तथा किसानोंके नाम छाप कर बँटवायी गयीं और उनसे कहा गया, कि तुम पूँजीवादी सरकारोंके लिये अपना खून क्यों बहाते हो? पक्षपातिनी सरकारोंको तोड़कर श्रमजीवियों-की सत्ता क़ायम करो और रूसकी जनताकी भाँति शान्ति-पूर्वक अपने देशकी सम्पत्तिको राष्ट्र-भरके सदुपयोगमें लगाओ।

चूँकि हंगरीकी जनता युद्धसे ऊब उठी थी। धन और जन, दोनोंकी भयङ्कर क्षति देखकर उसकी हिम्मत टूट गयी थी। अतः सबसे पहिले हंगरीमे राज्य-क्रान्ति हुई। सम्राट् कार्ल गद्दीसे उतार

दिये गये और बेलाकून नामक बोलशेविक नेताने सोवियट-संगठन द्वारा हंगरीपर श्रमजीवियोंका प्रजातन्त्र क़ायम कर दिया। इस समय जर्मनी भी फ्रान्समें हार रहा था। अतः आष्ट्रियन सेनाओंने भी रण-क्षेत्रोंसे भागना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे वाइना शहरमें भीषण हड़तालें हुईं और आष्ट्रियामें भी प्रजातन्त्र-सरकार कायम हुई। आष्ट्रियाकी क्रान्तिने जर्मनीपर बहुत बुरा प्रभाव डाला। कैसरके सामने युद्ध और क्रान्तिकी दो बड़ी ही जटिल समस्याएँ उपस्थित हो गयीं।

किसी प्रकार कैसरके मन्त्रि-मण्डलने प्रेसिडेण्ट विलसनकी शर्तोंपर सन्धि करना स्वीकार कर लिया। लेकिन जिस समय सन्धिकी बातचीत हो रही थी, ठीक उसी समय उपर्युक्त हंगरीकी क्रान्ति संघटित हुई। एक महीने बाद, आष्ट्रियामे भी प्रजातन्त्र क़ायम हुआ और सम्राट् कार्ल भाग गये। अब बोल्शेविकोंने जर्मनीमें दो बड़ी-बड़ी हड़तालें करा दीं। मज़दूरोंकी हड़तालने बर्लिनकी स्थिति ख़तरेमें डाल दी। उधर नाविक हड़तालने सन्धि-चर्चापर बहुत बुरा असर डाल दिया। स्थिति यहाँतक बिगड़ी, कि कैसरने सिंहासन त्यागकी घोषणा करके हालैण्डकी राह ली।

३—जर्मनीमें क्रान्ति।

जिस समय बर्लिनकी हड़तालने जर्मनीके साम्यवादी-क्रान्ति-कारियों द्वारा यह माँग पेश की, कि—

(१) मिलोंपर जनताका अधिकार क़ायम किया जाये,

(२) मित्र-राष्ट्रोंके साथ लोक-सत्तात्मक सन्धि स्थापित की जाये, तथा—

(३) जर्मनीमें समस्त प्रदेशोंकी संयुक्त प्रजातन्त्र-सरकार स्थापित की जाये,—

ठीक उसी समय बोल्शेविकोंने फ्रान्स तथा इटलीकी ओर भी अपने प्रचारक भेजे। जर्मनीमें सैनिकताका संगठन इतना दृढ़ था, कि बोल्शेविक प्रचारकोंको आरम्भमें बहुत कम सफलता मिली; लेकिन उसके बाद कैसरने सन्धि और क्रान्तिकी समस्याको स्वयं इतना भयङ्कर रूप दे दिया; कि व्यवस्थापिका-सभाने उनसे सिंहासन-त्याग करवा ही दिया। अब जर्मनीने रूसके साथ जो सन्धि की थी, वह कुछ भी नहीं रही। अतः मित्र-राष्ट्रोंने प्रेसिडेण्ट विलसनके कहनेपर रूसी प्रतिनिधियोंको भी सन्धि-कानफरेन्समें निमन्त्रित किया। बोल्शेविकोंने समझा, कि चलो, पेरिसकी सैर करें और फ्रान्समें भी बोल्शेविज़्मकी चिनगारी सुलगा दें। लेकिन फ्रान्सने इसका विरोध किया और बोल्शेविक प्रतिनिधियोंको अपने देशमें आने देनेसे इनकार कर दिया। तब सन्धि-कानफरेन्सने अपने एजेण्ट भेजकर बोल्शेविक प्रतिनिधियोंको प्रिन्केपो-टापूमें सन्धिकी शर्तें दे दीं। जिस समय यह सन्धि हो रही थी, उस समय रूसमें भीषण अकाल पड़ गया। उक्रेन प्रान्तने गेहूँ और अन्य अनाजको बोल्शेविकोंके हाथ लगने नहीं दिया। पैदावार भी बहुत कम हुई। अतः रूसकी अशान्ति बढ़ गयी। इतना सब कुछ होते हुए भी लेनिन बड़ी दृढ़ताके साथ मित्र-राष्ट्रोंकी चालोंको

देख रहे थे। उन्हें ऐसा प्रतीत हो चुका था, कि इस "महासन्धि" के पेटमें हलाहल विषकी गाँठी रख दी गयी है। लेनिनका विचार सच्चा निकला। सन्धिका काम समाप्त करके मित्र-राष्ट्रोंने रूसकी खबर लेनी शुरू की।

४—मित्र-राष्ट्रोंका कोप।

एक तो अकाल फैल रहा था। दूसरे बिलकुल नयी शासन-प्रणालीकी स्थापना करनी पड़ रही थी। इन कारणोंसे बोल्शेवि-कोंकी आर्थिक स्थिति भी खराब हो गयी थी। इधर इङ्गलैण्ड तथा फ्रान्सकी सेनाएँ रूसकी सीमाओंपर पड़ाव डाले हुई पड़ी थीं। यद्यपि फ्रान्स तथा इङ्गलैण्डमें जनता बार-बार यही माँग पेश कर रही थी, कि रूससे भेजी गयी सेनाएँ, वापस बुला ली जायें; मगर मित्र-मण्डली चुपचाप बैठी हुई मौक़ेका इंतज़ार कर रही थी। धीरे-धीरे ज़ारका विश्वास-पात्र एडमिरल कोलचक विद्रोही रूपमें उठ खड़ा हुआ। इसने सेनाएँ एकत्रित करके पेट्रोग्राडकी तरफ चढ़ाई बोल दी। मित्र-राष्ट्रोंने कोलचकको रूसके शासनका प्रधान अधिकारी घोषित कर दिया और सेना तथा बारूदसे मदद पहुँ-चानी शुरू कर दी। युद्ध-क्षेत्रोंमें लूटी हुई बारूद तथा गोलियाँ कोलचकको दे दी गयीं और दस्तावेजें लिखा ली गयीं। मि० चर्चिलका ख़याल था, कि रूसके अन्दर इस प्रकारके युद्ध छिड़ जानेसे बोल्शेविक-सरकार टूट जायेगी और इस प्रकार यूरोपका यह नया हौआ जन्म लेते ही नष्ट हो जायेगा।

मगर मित्र-राष्ट्रोंकी यह चाल भी सफल न हुई। बोल्शेविक

सैनिकोंने एक हफ्ते-भरके अन्दर कोलचक तथा मित्र-राष्ट्रोंकी सेनाओंको परास्त कर दिया। इसके बाद पूर्वीय रूस अर्थात् उडेसा प्रान्तमें जेनरल डेनकिन नामक बाग़ी सेनापतिने चढ़ाई की; मगर थोड़ेही दिनोंमें वह भी परास्त हो गया। एडमिरल कोलचकको तो उसकी ही सेनाओंने गिरफ्तार करके बोल्शेविकोंके हाथ सौंप दिया था। बोल्शेविकोंने उसे गोलीसे मार डाला। रह गये, जनरल डेनकिन, सो वह भी तितर-बितर कर दिये गये।

अब मित्र-राष्ट्रोंने स्थूनिया, लिवोनिया तथा कोरलैण्ड आदि स्वतंत्र रूसी रियासतोंको मिलाकर जेनरल यूडेनिचकी अध्यक्षतामें एक बड़ी भारी सेना तैयार की। जेनरल यूडेनिचको मित्र-राष्ट्रोंने बहुत बड़ी सहायता दी। लेकिन लेनिनने बोल्शेविक सिद्धान्तोंके परचे बँटवा कर जेनरल यूडेनिचकी सेनाओंको भी अपनी तरफ मिला लिया। इस प्रकार ज़ारकी सत्ताको फिरसे स्थापित करनेवाले मित्र-राष्ट्र निराश हो गये और बोल्शेविज़मके प्रभावसे अपनी सेनाओंको बचानेके लिये रूससे अपनी-अपनी फौजोंको वापस बुलाने लगे।

इस प्रकार १९१८ के मार्च मासतक बोल्शेविकोंको बाहरी दुश्मनोंसे फुर्सत नहीं मिली।

५—ज़ारकी हत्या।

अब बोल्शविक-सरकार निश्चिन्त हुई और देशके शासनका सच्चा सुधार इसी समयसे आरम्भ हुआ।

पाठकोंको याद होगा, कि ज़ारने जेरस्को-सेलो नामक शहरमें

सिंहासनका त्याग-पत्र लिखा था। पेट्रोग्राडसे कुछ दूरपर ही यह शहर है और यहाँ एक बड़ी भारी सेना रहती है। युद्धके समय यह सेनापतिका प्रधान पड़ाव था। करेन्सकीकी सरकारने ज़ारको सपरिवार इसी ज़ेरस्को-सेलोमें एक बड़े अच्छे महलमें नज़रबन्द करके रखा था। लेकिन जब बोल्शेविकोंका उपद्रव बढ़ने लगा, तब करेन्सकीने ज़ारको सपरिवार साइबेरियाके टोबलस्क शहरमें भेज दिया। इस शहरमें ज़ार कई महीनों तक नज़रबन्द रहे। नवम्बर १९१७ में बोल्शेविक-सरकारने ज़ारको और कड़े पहरेमें क़ैद कर दिया। सिर्फ १५ मिनटके लिये वे टहलनेके लिये निकाले जाते थे। इतने कड़े पहरेके होते हुए भी एक बार एक पुराना राज-सत्तावादी सैनिक अफ़सर बोल्शेविक कमाण्डर बनकर ज़ारको सपरिवार क़ैदसे छुड़ाकर ले भागा; मगर शीघ्रही उसका भेद खुल गया और बोल्शेविक सैनिकोंने इकटरिनवर्गमे ज़ारको गिरफ्तार कर लिया। इस स्थानमें ज़ारको छुड़ानेका एक षड्यन्त्र और प्रकट हुआ। इन कठिनाइयोंके कारण बोल्शेविकोंने ज़ारको मार डालना ही उचित समझा।

१६ जुलाई १९१८ को ठीक १२ बजे रातको सेनापति यूरोवस्कीने ज़ारको जगाकर कहा, कि इस शहरमें विद्रोहियोंके साथ लड़ाई होगी। अतः तुम सबको किसी दूसरे स्थानमें अभी भेजा जायेगा। फौरन कपड़े पहिन कर बाहर आओ।

थोड़ीही देरमें ज़ार, ज़ारीना, युवराज अलिक्स, बड़ी राजकुमारी उचज, राजकुमारी ओलगा, राजकुमारी एन्सटेसिया, राज-

कुमारी टेटियाना, डाक्टर बोटकिन तथा तीन दासियाँ भी नीचे उतरीं। जेनरल यूरोवस्कीने उसी क्षण बोल्शेविक सरकारका वह आज्ञा-पत्र पढ़कर सुनाया, कि "तुमको प्राण-दण्ड दिया जायेगा।"

स्वयं यूरोवस्कीने ज़ारपर पिस्तौल तानी और अन्य सिपाहियों-ने बाकी राजवंशके लोगोंपर निशाना सीधा किया। एक साथ ग्यारह लाशे ज़मीनपर गिरीं और तड़पने लगीं। राजकुमारी एन्सटेसिया कुछ चिल्लायी, मगर दूसरी गोलीसे वह भी सदाके लिये शान्त कर दी गयी। कुमारी टेटियानाका विवाह पञ्चम-जार्जके बड़े पुत्र युवराज एडवर्डके साथ होनेकी अफ़वाह उड़ी थी, मगर इस हत्याके बाद इस विषयपर इङ्गलैण्डके पत्र बिलकुल चुप्पी साध कर रह गये।

इस प्रकार ज़ारका नाम सदाके लिये लुप्त हो गया।

६—कम्यूनिस्ट पार्टीकी कांग्रेस।

१९२२ में ७ नवम्बरसे ३ दिसम्बरतक पेट्रोग्राड तथा बाद-में मास्कोमें चौथी अन्तर्राष्ट्रीय कम्यूनिस्ट पार्टीको कांग्रेस हुई। इसमें यूरोप तथा अमेरिकाके प्रसिद्ध प्रसिद्ध समष्टिवादी (Communist) नेता शामिल हुए।

प्रधान-प्रधान प्रतिनिधियोंके नाम इस प्रकारसे हैं :—

१—कोलाराव, सभापति	(बल्गेरिया)
२—स्केफलो	(स्केण्डीनेविया)
३—कटायामा	(जापान)
४—मैराटिनिया	(इटली)

५—क्लारा जेटकिन	(जर्मनी)
६—केर	(अमेरिका)
७—लेकी	(इङ्गलैण्ड)
८—मार्खवस्की	(पोलैण्ड)
९—न्यूरैथ	(ज़ेचो-स्लोवेकिया)
१०—बीरोन	(फ्रान्स)
११—हेनरीट	(„)
१२—लेनिन	(रूस)
१३—ट्राटस्की	(„)
१४—मानवेन्द्रनाथ राय	(भारतवर्ष)

तथा रेडक, बोरडिगा, स्मेरल, पुलमैन, अरबन्स, रेवेन्स्टीन, वेब, रोज़मर आदि-आदि यूरोपीय साम्यवादी नेता भी उपस्थित थे। लेनिन बीमार होते हुए भी केवल एक दिनके लिये कांग्रेसमे पधारे थे। उन्होंने अपनी वक्तृतामें रूसी क्रान्तिका इतिहास बतलाते हुए, सोवियट-शासन और बोल्शेविक सिद्धान्तोंकी कठिनाइयोंका ज़िक्र किया। आपने कहा कि :—

" Herein consisted the most important question for us, the economic preparation of the Socialistic economy. We could not prepare this in direct fashion, but we had to do it indirectly. The State Capitalism we have established is a peculiar form of State Capitalism. It does not

correspond to the ordinary conception of State Capitalism. We have all authority in our hands; we have the land, which belongs to the State. This is of immense importance, although our opponents are apt to declare, falsely, that it is of no importance at all. From the economic outlook the ownership of the land by the state is of great importance, it has immense practical significance from the economic point of view. We have achieved this, and I must emphasise that our farther activies must lie within this frame work. We have already ensured that the peasants are satisfied with us and that industry and commerce are on the upgrade."

इसके आगे लेनिन यह भी कहते हैं :—

"In the course of the revolution there will always be moments when the enemy loses his head. If we attack him at such moments, we may score an easy victory. But such a victory would not be decisive, because the enemy, after calm consideration, after one concentration of his forces, etc., may very easily provoke us into &

premature attack in order to throw us back for many years to come.

I, therfore, think the idea of the necessity of preparing for the emergency of a retreat to be of supreme importance, and that not only from the theoretical standpoint. From a practical standpoint also all the parties that are contemplating an offensive against capitalism in the near future should right now think of how to make the retreat secure. I believe that this lesson, in conjunction with all the other lessons of our revolution will surely do us no harm, and most probably a vast amount of good in many instances."

इन शब्दों द्वारा लेनिनने प्रकट किया, कि अभी कुछ दिनोंतक देशकी गिरी हुई अवस्थामें सरकारको सम्पत्ति बढ़ाने और उसपर राष्ट्रीय क़ब्ज़ा करनेकी ज़रूरत रहेगी। इसे चाहे बोल्शेविकोंकी कमज़ोरी कह लीजिये अथवा स्थितिके अनुसार उचित ढंगसे पीछे हटकर मज़बूत मोर्चा स्थापित करनेका काम कह लीजिये। किसी भी तरह इस हटावसे हमारे सिद्धान्तोंकी सफलताको हानि नहीं पहुँचेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

इस कानफरेन्समें कई महत्वपूर्ण बातें तय हुईं, लेकिन इन बातोंको हम अपनी अगली पुस्तक "श्रमजीवी विश्व-क्रान्ति" में

लिखेंगे। संक्षेपमें यह तय हुआ, कि ज़मीनका बँटवारा किया जाये। मिलोंकी पैदावार राष्ट्रीय सम्पत्ति मानी जाये। व्यापार तथा उद्योग-धन्धोंकी उन्नति की जाये और सरकारी पूँजी लगायी और बढ़ायी जाये। स्त्रियोंको भी पूर्ण नागरिक-अधिकार दिये जायें। धीरे-धीरे सरकारी सिक्के बन्द कर दिये जायें। खाद्य-सामग्री तथा अन्य उपजोंका बँटवारा क़ायम कर दिया जाये, जिससे सिक्केका चलन स्वयं बेकार हो जाये।

७—जनेवा कान्फरेन्स।

सन् १९२३ के अप्रेल मासमें इङ्गलैण्डके प्रधान मन्त्री मि० लायड जार्जने यह देखकर, कि जर्मनीकी गड़बड़ी और बोल्शेविकोंके उत्पातसे यूरोपकी स्थिति डाँवाडोल हो रही है, जेनेवामें यूरोपीय राष्ट्रोंको एक कानफरेन्स की। इसकी असली मन्शा यह थी, कि जर्मनीसे हर्जानेकी रक़म वसूल करनेकी बात तय की जाये और बोल्शेविकोंके साथ भी सन्धि स्थापित की जाये। इसी लिये बोल्शेविक सरकारको भी भाग लेनेका निमन्त्रण भेजा गया। लेनिनने पहले तो घोषित किया, कि मैं स्वयं आ रहा हूँ, लेकिन बादमें मोशिये शिशेरिन भेजे गये। इनके साथ अन्य कई रूसी प्रतिनिधि भी जेनेवा पधारे। इनकी भयङ्कर मूर्तियाँ देखकर पहले फ्रान्स-वाले घबराये, मगर बादमें शिशेरिनने सबको हैरान कर दिया। मि० लायड जार्जका यह भी कहना था, कि रूसके साथ इसी शर्तपर मित्र-राष्ट्र सम्बन्ध क़ायम कर सकते हैं, कि रूस ज़ारके समयका ऋण अदा कर देना स्वीकार कर ले।

इसके उत्तरमें मो० शिशेरिनने कानफरेन्सके अन्दर एक ज़ोर-दार स्पीच देकर कहा, कि हम ऋण देनेके लिये तैयार हैं, मगर इधर हालमें इङ्गलैण्ड तथा फ्रान्सने रूसके भीतर अपनी सेनाएँ भेजकर जेनरल यूडेनिच तथा एडमिरल कोलचक द्वारा जो क्षति पहुँचायी है, उस क्षतिका हर्जाना पहिले रूसको मिलना चाहिये। शिशेरिनकी इस माँगको सुनकर मि० लायड जार्जके होश ग़ायब हो गये। फल यह हुआ, कि कानफरेन्सका काम तो भंग हो गया; लेकिन जर्मनी तथा रूसके प्रतिनिधियोंने आपसमें एक सन्धि क़ायम कर ली, जिसकी सूचना कानफरेन्सके आरम्भमें ही विदित हो गयी और मित्र-राष्ट्र अवाक् रह गये।

मि० लायड जार्जकी सारी शेखी मिट्टीमें मिलाकर शिशेरिन जिस समय रूस पहुँचे, उस समय लेनिनने उन्हें बड़ी प्रसन्नताके साथ आशीर्वाद दिया।

इसके बाद टर्कीके साथ इङ्गलैण्डकी एक सन्धि क़ायम हुई, जिसमें रूसके राजदूतकी हत्या की गयी। लेकिन रूसी-सरकारने यह कहकर कि इस हत्याका बदला स्वयं लोक-सत्तावादी जनता हत्यारोंसे ले लेगी, शान्ति धारण कर ली। टर्कीमें कमालपाशाने जो कुछ किया है, उसका बहुत बड़ा अंश रूसके प्रभावसे ही सफल हुआ है।

८—अफ़गानिस्तानसे सन्धि।

इसी बीचमे वोल्शेविकोंने अमीर काबुलके साथ सन्धि स्थापित की और अपना राजदूत काबुलमें भेजकर घनिष्ठता फैलानी शुरू

को। इस घटनामें अङ्गरेज़ बहुत चौकन्ने हुए; मगर अमीर-काबुलने अङ्गरेजोंकी एक न सुनी। अन्तमें स्वयं अङ्गरेजोंने यह देखकर कि अमीर बिलकुल हाथोंसे निकले जाते हैं, नरम शर्तोंपर अपनी सन्धि भी काबुलके साथ क़ायम कर ली। इस समय उत्तरी अफ़गानिस्तानमें बहुतेरे बोल्शेविक दूत आया-जाया करते हैं। अमीर-काबुलकी मित्रतामें कई रहस्य हैं। उनमेंसे एक रहस्य तो यह है, कि बोल्शेविकोंसे मित्रता रखनेके कारण अङ्गरेज़ उनकी बराबर खुशामद करते रहेंगे और कभी नाराज़ न होने देंगे। लार्ड चेम्सफोर्डके समयमें सन्धि लिखी गयी थी। लोगोंका कहना है, कि लार्ड चेम्सफोर्ड धोखा खा गये और ब्रिटिश-सरकारका हाथ अफगानिस्तानके नीचे दाब दिया। जो कुछ भी हो, रूस और अफगानिस्तानकी सन्धि एक बड़ी मनोरञ्जक पहेली है और भारत-सरकार सदा उत्तरी सीमापर कड़ी निगाह रखती है। उधर बाकू-में बोल्शेविकोंने एक राजनीतिक-विद्यालय स्थापित करके और भी चिन्ताजनक सामग्री एकत्र कर दी है। ज़िनोवीवने बाकूमें एक कानफरेन्स करके सबको बोल्शेविज़्मकी दीक्षा दी थी और ब्रिटिश-साम्राज्य तोड़नेका प्रण किया था। इस कारण भारत-सरकार और भी चिन्तित रहती है।

९—बोल्शेविज़्मका प्रचार।

इस प्रकार बोल्शेविक सरकारने अपनी उदार नीति द्वारा कई देशों—टर्की, फारस, यूनान, स्वीट्ज़रलैण्ड—पर फन्दा फेंक दिया है। धीरे-धीरे स्वयं श्रमजीवी-दल अपने-अपने देशोंमें बोल्शेविज़्म-

का प्रचार कर रहे हैं। फारसमें भी शाहकी गद्दी उलट कर प्रजा-तन्त्र-शासन स्थापित हो रहा है। जान पड़ता है, धीरे-धीरे वहाँ भी बोल्शेविक-तन्त्र स्थापित होगा।

यूनानसे भी राज-सत्ताका लोप हो रहा है। फ्रान्स, अमेरिका इटली, कनाडा, जापान और चीनमें भी इसका प्रचार हो रहा है। मज़दूर-दल साम्यवादी ढंगकी सरकार क़ायम करनेपर ज़ोर मार रहे हैं।

लेकिन एक अपूर्व घटना यह घटित हुई, कि लेनिनने अपनी मृत्युके ठीक एक सप्ताह पहले यह समाचार पा लिया था, कि इङ्गलैण्डमें भी मिस्टर रैमसे मेकडोनेलकी अध्यक्षतामें मज़दूर-मंत्रि-मण्डल क़ायम हो गया। संसारके सबसे बड़े साम्राज्यवादी देश इङ्गलैण्डपर उसकी यह महती विजय थी, जिसे सुख-पूर्वक अनुभव करता हुआ, लेनिन इस लोकसे बिदा हुआ।